देश-भर का दुश्मन

[इब्सन के एक नाटक के अंगरेज़ी-अनुवाद An Enemy of The People का हिन्दी-रूपान्तर]

रूपान्तरकार
राजनाथ पाण्डेय एम० ए०
प्राध्यापक : सागर-विश्वविद्यालय, सागर

प्रकाशक
मेहरचन्द मुन्शीराम
प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता
१०-बी०,-फ़ैज़ बाज़ार
दिल्ली ।

प्रकाशक
मनोहरलाल जैन
अध्यक्ष मेहरचन्द मुन्शीराम
फैज़ बाजार, दिल्ली।

मूल्य दो रुपया
प्रथम संस्करण : १९५२

मुद्रक
श्यामकुमार गर्ग
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
क्वीन्स रोड, दिल्ली।

भूमिका

: १ :

वैयक्तिक साधना में सत्य के जैसे अनन्य आराधक पुरातन युग में हरिश्चन्द्र हुए, और आधुनिक युग में जन-जीवन में सत्य के जैसे प्रखर प्रयोगी महात्मा गांधी हो गए हैं, उसी प्रकार साहित्य में सत्य के अप्रतिम आग्रही उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नार्वेजनीन हेनरिक इब्सन थे।

उन्होंने लगभग दो दर्जन नाटकों की सृष्टि की। आधुनिक युग में उनके समान ख्याति पाने का सौभाग्य विश्व के किसी साहित्य-निर्माता को नहीं मिला। यूनानी नाट्य-कला में व्याप्त शोक-षड्यंत्रों की अवश्य-म्भाविता तथा उद्दामता को आधुनिक नाटकों में समारंभ करने वाले वे ही हुए। नाटक-निर्माण-कला की उनकी भव्यता के आगे सिर अनायास झुक जाता है। उनकी कृतियों में वस्तु-योजना तथा नाट्य-विधान की एक भी कमी ढूँढ़ निकालना बड़ों-बड़ों के बस की बात नहीं है। ऐसे सजीव, स्वाभाविक, और मंत्र-मुग्धता की शक्ति रखने वाले नाटकीय सम्वाद अन्यत्र दुर्लभ हैं। संसार ने विश्व की नाट्य-परंपरा की पाँच महत्तम प्रतिभाओं में—एसकाइलीज, सोफोक्लीज, युरीपिडीज, तथा शेक्सपियर के साथ—उनकी गणना की है। फिर भी हेनरिक इब्सन को नाट्यकार नाम देकर ठीक पहचानने में कठिनाई हुई है। बहुत देर और बहुत दूर तक उन्हें कुछ-का-कुछ जाना और माना जाता रहा है।

जिस प्रकार तुलसीदास कवि नहीं भक्त थे, पर कौन कहेगा कि वे कवि नहीं थे; उसी प्रकार इब्सन नाट्यकार नहीं स्वयं काव्य थे, पर कौन कहेगा कि वे नाट्यकार नहीं थे। तथापि तुलसी को बस कवि मानकर देखना जैसे तुलसी का पूर्ण दर्शन नहीं। वैसे ही इब्सन को भी नाट्य-कार मानकर देखना उनका अधूरा दर्शन है। ७८ वर्ष और ६४ दिनों

का उनका अनतिदीर्घ जीवन किन्हीं उद्वेगपूर्ण घटनाओं के लिए विख्यात नहीं हुआ था। परन्तु उनके मानस का महार्णव अगणित हलचलें वाले महा नाटकों से लबरेज था, और उन्हीं महा नाटकों का कुछ अंश उनकी नाट्य-कृतियों के रूप में साहित्य में अवतरित हुआ। 'ब्रांड नामक अपने एक पद्य-नाटक के विषय में इब्सन ने कहा था, "जो कुछ मैंने निरीक्षण किया था उसके नहीं वरन् जो कुछ मैंने अनुभव किया था उसके परिणाम स्वरूप इसकी ('ब्रांड' की) उत्पत्ति हुई। मेरे अन्तर के मानव ने जो वेदना भोगी थी उसे काव्य का रूप देकर उस वेदना से मुक्त हो जाना मेरे लिए अनिवार्य हो गया था, और उससे जब मेरी मुक्ति हो गई तब मेरे लिए इस (पुस्तक) की कोई दिलचस्पी न रही। निर्माण के लिए आदमी के पास अपनी अनुभूति से संभूत 'कुछ' होना चाहिए। जिस साहित्य स्रष्टा के पास यह 'कुछ' नहीं होता वह निर्माण नहीं करता, केवल पुस्तकें लिखता है।"

वस्तुतः इब्सन चेतना और प्रतिभा के एक महार्णव थे और उनके इस महार्णव को समझना ही इब्सन को समझना है। नार्वे की प्रकृति के अमृत में स्निग्ध बालक इब्सन बचपन में ही अमरता का स्वप्न देखने लगे थे। वहाँ का वह अटूट प्रकाश और नीलिमा-मंडित गगन; वे हठीली मदमाती नदियाँ तथा इठलाते हुए निर्झर; वे पाताल-जैसे गहरे कगार और शिव के त्रिशूल-जैसे हिम-मंडित वे अटल, गगनचुम्बी शैल-शृङ्ग; वे लटकते हुए हिमनद और घाटी में सघन वनों में लुका-छिपी करते बल खा-खाकर सरकते हुए वे नाले; सुगंधित जलों से परिपूर्ण वे झीलें और नाना आकार तथा नाना वर्ण वाले उन जलों में विहरने वाले वे पंछी; वे द्रुतगामी बारहसींगे, वे निर्भय भालू, वे लजाधुर भेड़िये और वे समुद्र-अनुरागी हंस, सारस और चील तथा सुर-संगीत-विनिन्दक उनके वे अलौकिक कूजन; जाड़े के वे छोटे दिन और बड़ी रातों के देर तक टिकने वाले वे दिव्य प्रकाश-पुञ्ज; शिशिर का वह बरफानी नैश तूफान और दिन का बरफ पर फिसलने का वह आह्लादपूर्ण पर्व यह

सब उस बालक की प्रतिभा को बचपन में ही रंगीन बना चुके थे। किन्तु जब जीवन की कठोर विपरीतियों ने निठुर अहेरी बनकर आह्लाद के उसके अनोखे क्रौंच को बाण मारकर घायल कर दिया तो अमरता का उसका सपना टूट गया। किन्तु अभिनिवेश उसमें अमर हो उठा। उस समय अपनी छोटी बहन हेजविग से इब्सन ने कहा था, "मेरी इच्छा समस्त वस्तुओं का दर्शन कर लेने की है। इसके बाद मैं मृत्यु चाहता हूँ।" सचमुच उन्होंने जीवन के एक-एक पल को जागते-सोते हर समय संसार की प्रत्येक वस्तु का दर्शन करने ही में व्यतीत किया। जगत् का यह दर्शन सत्य का दर्शन था। दर्शन के इस महान् संकल्प को पूरा करने में उन्हें असंख्य अड़चनों, विपत्तियों और निराशाओं का सामना करना पड़ा। उन्हें नितांत निस्संग होकर 'खेत' में खड़ा रहना पड़ा। मृत्यु के अन्तिम क्षणों में वे अर्ध चेतनावस्था में मरण-पीड़ा में आँखें बंद किये पड़े थे। उन्हें मूक और शांत देखकर फ्रू इब्सन ने कहा, "देखिये, डॉक्टर की अवस्था अब अच्छी जान पड़ती है।" सत्य के दर्शन के उनके प्रखर अभ्यास ने उनकी आत्मा को जो जागरूकता प्रदान की थी उसने उनकी उस विषम स्थिति में भी उनके द्वारा उस असत्य कथन का प्रतिवाद कराया। फ्रू इब्सन का वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि इब्सन के मुँह से "त्वर्त इमूद" (बिलकुल नहीं) ये दो शब्द अत्यन्त रुखाई के साथ निकल पड़े और उनकी वे सतत प्रबुद्ध चमकीली आँखें अंतिम बार खुलकर चमक उठीं। इस प्रकार अपने जीवन की एक-एक साँस को जगत् का दर्शन करने में लगाकर उन्होंने अपना जीवन अमर बनाया और शरीर से न रहते हुए भी अपनी कला-कृतियों से वह अमरत्व प्राप्त किया जिसकी बाल्य-काल में ही उन्होंने आकांक्षा की थी।

जगत् की प्रत्येक वस्तु का इस जागरूकता के साथ दर्शन ही इब्सन का जीवन-व्यापार था। उनके मत में यही कविता है। यही कारण था कि इब्सन का जीवन ही कविता है। कवि होने की संभावना रखने वाले एक व्यक्ति से उन्होंने कहा था, "कवि होना, दर्शन करना है।" किन्तु उस

दर्शन के लिए अग्रसर होने वाले को—कवि को—कितनी वेदनाएँ भोगनी होती हैं। उन्होंने कहा था, "आखिर कवि है कौन? निस्संदेह वह विशेष प्राणी, जिसके कलेजे में तो अगाध वेदना की ज्वालाएँ गहरी छिपी रहती हैं पर उसके होंठ ऐसे बने होते हैं कि उसकी कभी जो कोई चीख या कराह निकलती है वह सरस संगीत जान पड़ती है। उसकी क़िस्मत 'फ़िलारी' के उन अभागों की तरह है जो आग में झुलसे जाने की यंत्रणा से दया की याचना के लिए जब विलाप करने लगे थे तब उन्हें जलाने वाले के कान में वे स्वर सरस संगीत बनकर सुखदायक हो रहे थे। ..... सच मानिये, शूकरों के किसी झुण्ड का चरवाहा बनकर अलीमार की घाटी में सूअर चराना और उन सूअरों द्वारा दुर्भावना में न पहचाने जाने को अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा समझता हूँ।"

पर ऐसे कटु उद्गारों के बावजूद भी इब्सन का वह अदम्य अभिनिवेश—उनकी वह शानदार ज़िद—अमर थी। उनका आत्म-विश्वास ऐसा दृढ़ था कि जगत् और जीवन के इस सम्पूर्ण दर्शन को ही वे कविता मानते थे। 'पिअर गिंट' (Peer Gynt) का प्रकाशन होने पर जब लोगों ने उसके काव्य की आलोचना आरंभ की तब उन्होंने कहा, "यह अवश्य कविता है, और अगर अभी नहीं भी है तो आगे हो जायगी; क्योंकि हमारे देश में काव्य-सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा इस कृति को कविता मानकर ही करनी पड़ेगी।" अतः इब्सन को समझने के लिए यह जानना और स्मरण रखना अनिवार्य है कि वे कवि थे। कुछ लोग उन्हें एक महान् विचारक कहते हैं और कुछ लोग दार्शनिक। कुछ लोग उन्हें समाज का समीक्षक या समाज-सुधारक भी कहते हैं। किन्तु इब्सन ने स्वयं अपने को केवल एक सर्जन-कर्ता कलाकार के ही रूप में पहचाना था। एक-मात्र अथवा प्रमुख रूप में ही नहीं, अपितु हर बात में, हर प्रकार से कलाकार होना ही वे अपना परम लक्ष्य मानते थे। जीवन और जगत् के संपूर्ण और स्पष्ट दर्शन के लिए—एकान्त काव्य-साधना के लिए, उन्हें अपना शल्य-कर्म करना पड़ा। अपने इर्द-गिर्द के जीवन से वे

अछूते न थे। जो चिंतन उस युग की वायु में मँडरा रहे थे प्रज्ञा द्वारा वे उनका साक्षात्कार कर रहे थे। किन्तु ऐन्द्रिक प्रभावुकताओं के बल पर ही उन्होंने अपनी काव्य-कृतियों की भव्य भित्ति का निर्माण नहीं किया था। यह उनकी शर्त थी कि जिस वेदना की वह प्रतिष्ठा करें वह उनकी अनुभूति हो। उन वेदनाओं को आत्मसात् करने के लिए जो उन्हें लोहे के चने चबाने पड़े उससे यह शर्त पूरी हो गई।

प्रबुद्ध प्रतिभा, ज्वलन्त जागरूकता, असम सहनशीलता, अद्भुत अध्यवसाय, तथा जीवन-दर्शन की प्रखर पिपासा का प्रत्यक्ष प्रतीक एक शब्द इब्सन है। इस बात में उनकी तुलना केवल कबीर से की जा सकती है। कबीर और इब्सन दोनों का जीवन ही काव्य था। उनकी कृतियाँ उनकी जीवन-कविता की प्रतिच्छाया हैं। आध्यात्मिकता का दीप भी दोनों में समान रूप से जलता था। किन्तु कबीर आध्यात्मिकता की चोटी पर एक ही कुलाँच में पहुँच गए थे, पर इब्सन की आध्यात्मिक पहुँच का मनोहर क्रमिक विकास और सुस्पष्ट इतिहास है जो हमारे युग के अपेक्षाकृत अधिक निकट होने के कारण हमारे लिए अधिक सुबोध और उपादेय है। इब्सन के साहित्य में मानव-जीवन का अधिक व्यापक और विस्तृत चित्रण है। इसमें यौवन की उद्दाम वेगशीलता और बलवती स्फूर्ति, राष्ट्र और जाति की उत्कट अभिलाषा तथा पारिवारिक और सामाजिक सदाचार की दारुण जिज्ञासा भी है और आध्यात्मिकता की गंभीर गहन चेतना भी। संक्षेप में इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जीवन का विशद चित्रण और दोनों का अपूर्व संतुलन है। आध्यात्मिक गगन में चेतना और कल्पना की इतनी ऊँची उड़ान लेने वाला कवि इब्सन दुनियादारी के जीवन-व्यापार में भी कुशल है। अपनी सहज कठोर मुद्रा से संभ्रम उत्पन्न करने वाले, लम्बा कोट और रेशमी हैट धारण किये हेर डॉक्टर इब्सन के नाम से संबोधित होने वाले, घड़ी की सुनिश्चित सुई-जैसी समय की पाबंदी रखते हुए अपनी पुस्तकों के स्वाधिकार की अत्यन्त सतर्कता से देख-रेख करने वाले इब्सन भावना और कल्पना के लोक में विचरण

करने वाले प्राणी कभी नहीं समझे जा सकते थे।

'पिअर गिंट' और 'गुड़िया का घर' (A Doll's House) के प्रकाशन से इब्सन की कीर्ति समस्त योरप में फैल गई। उन दिनों लोगों को इब्सन के लिए ऐसी उत्कंठा थी कि कॉफ़ी, सिगरेट और कपड़े उनके नाम की छाप से बिकने लगे थे। उस युग के युवक-समुदाय ने अत्यन्त उल्लास और उमंग के साथ उनका अभिवादन किया था। उत्साह के इस भूकंप ने इब्सन के प्रति सर्वसाधारण की जो एक धारणा सुनिश्चित कर दी वह उनके वास्तविक स्वरूप के समझने में बड़ी बाधक हुई। उस युग के समीक्षकों ने उनके साहित्यिक जीवन के मध्यकाल के नाटकों में ही उन्हें आँका। उन्होंने यह तनिक भी न सोचा कि जिन नाटकों के आधार पर वे इब्सन की कीर्ति का ध्वज ऊपर उठा रहे थे वे नाटक उनकी संपूर्ण कृतियों के एक अंश-मात्र थे। कई देशों में तो लोगों ने इब्सन को 'गुड़िया का घर' के लेखक के रूप में ही नारी के अधिकारों की माँग करने वाला या अनैतिकता का प्रचार करने वाला-मात्र समझा, और कितने ही लोग अब भी उन्हें इतना ही समझते हैं। उस खेवे के आलोचकों के ध्यान में ही यह न आया कि विश्व की चिन्तन-धारा में इब्सन ने जो कोलाहल उत्पन्न कर दिया था उसे वफ़ादारी के साथ समझने के लिए उनकी समस्त रचनाओं का अनुशीलन नितान्त अनिवार्य था। अतः उन्होंने इन्हें Shaw, Brieux, Strindberg तथा Tehekov का पूर्ववर्ती तथा इन योरप के महान् कलाकारों को प्रेरणा देने वाला विश्व का एक विचक्षण प्रतिभा-सम्पन्न साहित्य-स्रष्टा कहकर संतोष कर लिया। नाट्य-मञ्च की इनकी अप्रतिम दक्षता और सफलता ने इन्हें जो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कराई थी, उसके रहस्य को समझने के लिए इनकी कृतियों का मूल नार्वेजनीन भाषा का ज्ञान अपेक्षित न था। इस प्रकार पहले खेवे के समीक्षकों ने इनके एक अंश से ही सन्तोष-लाभ कर लिया। परिणाम यह हुआ कि संसार का ऐसा महान् साहित्य-मनीषी इतने दिनों तक ज़र्मान और अपने निजी प्रारंभिक इतिहास से नितांत विलग रखकर

आँका जाता रहा। किन्तु उत्साह के उस प्रथम उफान के मंद पड़ जाने पर उनके देश, उनकी ज़मीन और मूल उनकी कृतियों के अनुशीलन ने आज कितने ही अनजाने उनके रंगों का जो दर्शन कराया है उससे उनकी सम्पूर्ण प्रतिभा के निरखने और परखने में काफ़ी सुविधा हुई है। इससे आज उनका अमर व्यक्तित्व अधिक स्पष्ट और निखरा हुआ प्रत्यक्ष हो उठा है।

वस्तुतः इब्सन की प्रतिभा की यह भी एक विचित्रता है कि आप उनकी जिस एक कृति को ही पढ़ें, वे उस कृति की अपनी पूर्णता को लिये हुए आपमें समा जाते हैं! उनकी एक-एक रचना एक समूचे जीवन ही के ठोसपन से समन्वित है। उनकी समस्त रचनाओं में अनगिनत जीवनों का भार है। उस समूचे भार को ग्रहण करने के लिए अपनी जीवन-नौका के बहुत से बोझ को अलग फेंकना अनिवार्य हो जाता है। मोह के इस बोझ का विसर्जन वेदनाप्रद होता है। इसलिए अपनी शक्ति और संस्कार के अनुसार इब्सन की अनुभूति के किसी अंश को ही आत्मसात् करके जो-कुछ ठोस वह देते हैं उतने ही को अपनी आत्मा का प्रबोधक, चेतना का एक अंग बना उसमें ही सिमटकर रह जाने में बहुत से लोग सन्तोष-लाभ करते हैं। और जो बहुत दूर तक जीवन की यात्रा में इब्सन के साथ चलते हैं, वे विरले जन सिर पर काँटों का ताज रखा होते हुए भी पूर्ण आत्म-बोध के साथ अपने निस्संग जीवन-पथ में अपने अविचलित पग रखते चले जाते हैं।

× × ×

उनकी कृतियों में यह एक निरन्तर स्वर स्पष्ट गुनगुनाता है कि प्रतिभा में एक क्रूर विनाशकारी शक्ति होती है। 'जिन्नात' (Ghosts) तथा 'जांगलू मुर्ग़ाबी' (The Wild Duck) में प्रजनन-परम्परा तथा 'गुड़िया का घर' और 'रोज़मरशोम' (Rosmersholm) में सामाजिक संक्रान्ति के उनके गहन विवेचन के कारण यह भ्रांति न होनी चाहिए कि जान स्टुअर्ट मिल से लेकर हरबर्ट जार्ज वेल्स तक के 'नारी-परित्राण' के

अग्रदूतों की सूची में इब्सन का भी स्थान है। वस्तुतः अपने युग के समाज के अनुराग-विराग और आशा-निराशा के तारों से बँधे हुए भी वे उस आध्यात्मिक संग्राम के वशीभूत थे जो ब्रांड, नोरा या सोलनेस के पराक्रम से उत्पन्न होता है और संहार करता है उनके ही निकटतम प्राणियों के जीवन का। प्रेत की काली छाया[१] इन सब प्रतिभावान् प्राणियों को महान् बल देती है पर शांति उनकी वह हर लेती है। ये सभी प्राणी सर्वोपरि होने के ही लिए जन्मते हैं, साथ ही उनका विनाश करने के लिए भी जो उनके परम प्रिय होते हैं। यह संहार परिस्थितियों के कारण उतना नहीं होता जितना कि उन प्रतिभावान प्राणियों के अतुलनीय, असहनीय, पराक्रम के कारण। क्या उन प्रतिभावान प्राणियों की सूची में इब्सन का भी नाम नहीं रखा जा सकता? कम-से-कम लेखक के मत में तो उनकी गणना इस प्रकार के प्रतिभावानों में होनी चाहिए; क्योंकि अपने जिस पाठक के ये सर्वप्रिय हो जाते हैं उसकी मानसिक शान्ति (या प्रमाद!) तो इनकी कृतियों के अनुशीलन से छिन ही जाती है, मोह से उपजने वाली जीवन की उनकी रंगीनी भी विनष्ट हो जाती है।

इब्सन मानवता को केवल किसी वंशानुगत जघन्य रोग का रोगी होने के ही कारण नहीं, वरन् हाड़-मांस का वारिस होने से वह जिन सहस्रों स्वाभाविक उत्तेजनाओं को विरासत में प्राप्त करता है उनके कारण नियति का शिकार होते देखते हैं। यही उनका नियतिवाद है। वे कहते हैं:—

"विलकत स्किल्द वर्ग देर सोग हयनर
फ्रा दित लिल्ल ओर्द : *अत लेवे।*[२]

---

१ **'प्रेत की काली छाया' का अभिप्राय आगे स्पष्ट किया गया है।**

२ **इस पद्य का अंगरेजी अनुवाद इस रूप में है:—**

What a towering mount of sin
Rises from one small word : To be...

इसी 'होने' या 'अन लेवे' (To be) के संबंध में इब्सन से उम्र में कुल २५ वर्ष बड़े भारतीय चिन्तक कवि गालिब लगभग इसी ढंग में कह गए थे :—

न था मैं तो खुदा था, मैं न होता तो खुदा होता।
मिटाया मुझको होने ने, न मैं होता तो क्या होता ?

: २ :

एक बार इब्सन ने कहा था कि "पूर्णतया मुझे जानने के लिए नार्वे को जानना अनिवार्य है।" वह नार्वे, वह दुर्गम तथा रूखा जन-स्थान नार्वे १६ वीं सदी के आरंभ में १० लाख मछुहों, मल्लाहों और खेतिहरों का एक छिटका हुआ समुदाय था। उस देश में सामन्तशाही की प्रथा न होने से वहाँ रईसों का अस्तित्व न था, जिसके परिणाम-स्वरूप जनता में अपने स्थान की स्वतंत्रता की ठोस परंपरा स्थापित थी। वहाँ की भौगोलिक स्थिति भी अपना प्रभाव उत्पन्न करती थी। वहाँ सँकरी घाटियों में बसा प्रत्येक कुल-समूह (कर्वाला) अपनी परिस्थितियों में सिमटा हुआ अपनी समस्याओं में ही इतना उलझा होता कि उसे समूचे देश की समस्याओं के संबंध में सोचने का कभी अवसर ही न मिलता। इस प्रकार वहाँ एक सार्वजनीन राष्ट्र की भावना को स्थान की भावना ने दबा रखा था। वहाँ के निवासी बलिष्ठ, शान्त और प्रकृति के ओज में झलमले, पर प्रकृति के मधुर वरदान से वंचित थे। उनकी प्रकृति और उनके स्वभाव के ही सर्वथा अनुरूप, उनकी भाषा भी इतनी सरल और सहज सुरीली थी कि हृदय में एकदम उतर जाय, पर शास्त्रीय-साहित्यिक प्रयोगों से अभी वह सर्वथा अछूती थी। संक्षेप में अन्य यूरोपीय प्रदेशों की तुलना में नार्वे अनछूती भूमि और अनछूते इतिहास का देश था। हाँ अतीत गौरव की मजबूत परंपरा ने उसे मजबूती से कसकर सुदृढ़ बना रखा था। इब्सन की किशोर वय में उनके देश की यही अवस्था थी।

सोलहवीं सदी से डेनमार्क में विलुप्त नार्वे को सन् १८१४ ई० में

नार्वेजनीनों ने विलगा लिया था। किन्तु कुछ ही दिनों बाद थोड़ा संघर्ष करके स्वीडेन ने नार्वे को अपने साथ मिला लिया। यह विलीनीकरण नार्वे की इच्छा के विरुद्ध हुआ था। जिसकी चोट नार्वेजनीन हृदय में बराबर हरी बनी रही। इस संयोग के परिणाम स्वरूप मध्य युग से एक ढर्रे पर चलता आया नार्वेजनीन जीवन नई दिशा में डावाँडोल हो उठा। रेल और सड़कों की व्यवस्था आरंभ हो जाने से कुछ ही समय पहले तक के उसके पर्वतोन्मुख और समुद्रगामी पड़ोसी अब अधिकाधिक निकट आने लगे। सत्रहवीं और अठारहवीं सदी का यूरोपीय सामाजिक नवोन्मेष नार्वेजनीन जीवन में कुछ परिवर्तन नहीं उपस्थित कर सका था। किन्तु राजनीतिक और आर्थिक दोनों ही परिवर्तित पहलुओं के उद्वेग ने नार्वे को प्रकंपित कर दिया। प्राचीन और नवीन का संग्राम नार्वेजनीनों के लिए पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी का ही संग्राम न था। वह जीवन की दो निराली दिशाओं का भी संग्राम था; और नार्वे को उस संग्राम का सामना करना था।

नार्वे ने इब्सन के प्रतिनिधित्व में उस संग्राम का पूर्ण प्रतिभा और पौरुष के साथ सामना किया। या यों कहें कि इस विराट् संग्राम में इब्सन के रूप में नार्वेजनीन राष्ट्र की आत्मा की पूर्ण प्रतिभा और चेतना साकार हो उठी। नार्वेजनीन प्रकृति और परंपरा ने इब्सन को पैदायशी प्रवृत्ति के रूप में पर्याप्त प्रतिभा और पराक्रम प्रदान कर रखा था। राष्ट्रीय पराभव ने उन्हें परम पीड़ा, परवशता, और प्रगल्भता देकर उनसे परमात्मा की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। इन्हीं परिस्थितियों ने उन्हें आदर्श नार्वेजनीन मानव और विश्वजनीन महामानव के रूप में निखारा।

अल्हड़पन और जिद नार्वेजनीन का राष्ट्रीय गुण होता है। नार्वे-जनीन अत्यन्त अविचल, पुष्ट, चतुर और तर्कशील होता है। तर्क-शील होने के साथ-साथ वह अपने विचार और विश्वास को अपने कुछ एकड़ खेत के टुकड़ों की ही भाँति कसकर पकड़ने वाला होता है। जीवन उसके जीवन का वरदान है तो जिद उस जीवन का अभिशाप।

डॉक्टर, वकील, रोजी-रोजगार वाले और हाकिम-हुक्काम सब-के-सब यद्यपि अपने रंग-ढंग से रहते हैं, फिर भी ठेठ जनता से वे कभी विलग नहीं होते। जिस देश में बहुसंख्यक जनता अपने स्वतंत्र कार-बार में लगी रहती है, यानी जहाँ जमींदार-रियाया और मिल तथा मजदूर की समस्या नहीं होती वरन् जहाँ जन-समूह अपने खेतों का किसान, अपनी नौका का स्वामी और अपने समुद्र का बादशाह होता है वहाँ व्यक्ति की आजादी की भावना बड़ी प्रबल होती है। अपरिचितों और विदेशियों के बीच नार्वेजनीन प्रायः मजबूत और मूक दिखाई पड़ता है, पर अपने घर में वह मजबूत भी होता है और मुखर भी। साधारण परिस्थितियों में आप उसे ठेठ और ठोस माथा वाला पायँगे, पर विकलता की घड़ियों में उसका ठेठपन लुप्त हो जाता है और उसके अभ्यन्तर में बसने वाली उसकी नार्वेजनीन प्रतिभा उसमें अपार संयम, सब्र और साबित-कदमी भर देती है जिसका परिणाम होता है अल्हड़पन का एक अनायास आकस्मिक संघर्षण, उससे उठने वाली चिनगारी की लपक, और एक भीषण सर्वस्वान्तकारी विस्फोट, जिसमें जलकर सब-कुछ खाक हो जाता है। अन्तर में आग छिपाये रखने वाला चकमक पत्थर जब फौलाद की रगड़ पा जाता है तब भस्म कर डालने वाली चिनगारी उठकर ही रहती है। इब्सन के पात्र इसी नार्वेजनीन प्रवृत्ति के सुर-ताल के वशीभूत हैं। हल्की-हल्की रगड़ से गरमाते हैं जिसका अन्त है बस एक आकस्मिक लपक और विनाशकारी धड़ाका।

कहीं विसूचिका या अन्य संक्रामक रोग से मर न जायँ, या सड़क पर किसी दुर्घटना में न फँसें, इस सबका डर उन्हें बराबर बना रहता था। पागल कुत्तों से वे सदा खौफ खाये रहते थे और श्रम तथा दौड़-धूप के खेलों में वे कभी भाग न लेते थे। परन्तु शरीर से कायर होते हुए भी वह यह खूब जानते थे कि उन्हें क्या होना है। इसीलिए किसी प्रकार का अपमान या तिरस्कार अथवा सद्भावना से दिया हुआ उपदेश ही उन्हें हिला-डुला नहीं सकता था। उन्होंने कई बार चिल्लाकर कहा

शा. "मैं किन्हीं भी सुन्दर उपदेशों का कभी अनुगमन न करूँगा। वे अल्हड़पन और ज़िद में पक्के नार्वेजनीन थे। उनकी रचनाओं में वर्णित पार्वतीय दानवों और मृतजनों की आत्मा की शक्ति उनकी नार्वेजनीन परम्परा का अंश है। ईसाई धर्म नार्वे में सबसे अन्त में पहुँचा था और नार्वेजनीनों से उनकी यह विरासत वह छीन नहीं सका था। संसार के किसी अन्य देश की अनुश्रुतियों में प्रेतों और 'काली छायाओं' की इतनी प्रचुर कथाएँ नहीं मिलतीं और न लोग दूसरे लोक की निवासी आत्माओं के इतने वशीभूत होते हैं। इस विषय में नार्वेजनीन भाषा की शब्दावली जितनी सम्पन्न है उतनी किसी अन्य भाषा की नहीं। 'ब्रांड', 'जिन्नात' और अन्तिम चार नाटकों को पढ़ते समय बराबर यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि ये कृतियाँ उस जन-समूह के लिए हैं जिनकी कठोर भूमि और सुदूर जीवन से उठने वाले इस प्रकार के सपने और इस रंग की कथाएँ जिनके रक्त में तथा जिनके विचार और भावनाओं में ताने-बाने की तरह बुन दी गई हैं।

: ३ :

इब्सन के जीवन और उनकी साहित्यिक प्रवृत्तियों को सुचारु रूप से सराहने के लिए कृतियों के विचार से उनके साहित्य को चार पर्वों में विभक्त करके समझना अधिक उपयोगी होगा। उनका जन्म २० मार्च सन् १८२८ को हुआ था। बाल्यकाल और शिक्षा से लेकर प्रारम्भिक रचनाओं द्वारा कलाकार बनने की तैयारी का यह प्रथम पर्व एकान्त साधना और कठोर अध्यवसाय का युग है जो सन् १८६४ में उनके देश छोड़कर रोम के लिए प्रस्थान करने तक चलता है। जीवन के इस प्रथम पर्व की रचनाओं में 'कैटालीन', 'वारियर्स बैरो', 'लेडी इंजर', 'फीस्ट एट सुलहूग', 'वाइकिंग एट हेलगीलैंड', 'लव्स-कमेडी' तथा 'किंग-मेकिंग' प्रमुख हैं।

दूसरा पर्व प्रमुखतः कवि का जीवन है जो रोम और जर्मनी में बीते उनके निर्वासन के जीवन का एक भाग है। इस काल की रचनाओं में

'ब्रांड', 'पियर-गिंट', 'गलीलियन एंड एम्परर' तथा 'लीग आव यूथ' प्रमुख हैं। सन् १८७७ में 'समाज के खंभे' (Pillarsof Society) की रचना से तथा १८७८ में जर्मनी से रोम के लिए उनके प्रत्यावर्तन से उनके साहित्यिक जीवन का तीसरा पर्व आरम्भ होता है जो ६३ वर्ष की अवस्था में सन् १८९१ में उनके स्वदेश लौट आने तक चलता है। इस युग की रचनाएँ—'गुड़िया का घर' (A Dolis House), 'जिन्नात' (Ghosts), 'देश-भर का दुश्मन' (An Enemy of the People), 'जाँगलू मुर्गाबी' (The wild Duck), 'रोज़्मरशोम' (Rosmersholm), 'समुद्र की नारी' (The Sea woman) तथा 'हेडा-गेबलर' (Hedda gabler) मध्य-काल की उनकी रचनाएँ कही जाती हैं। चौथा पर्व सन् १८९९ तक चलता है। जिसमें 'बिग-मेस्टर सोलनेस' (Bygmester Soleness), 'लिटिल एयल्फ' (Little Evolf), 'जान गेबरियल बोर्कमन' (John Gabriel Borkman) तथा 'जब हम मुर्दे जाग उठे हैं' (When we Dead waken) की रचना हुई है।

इब्सन का बाल्य-काल बड़े कष्ट और दुःख में बीता था। जब वे ८ वर्ष के थे तभी उनके पिता नूद इब्सन का व्यापार में दिवाला निकल जाने से उन लोगों को नगर छोड़कर देहात में निर्धनता और अभाव का जीवन आरंभ करना पड़ा। १४ वर्ष की अवस्था में इब्सन को एक अत्तार के यहाँ नौकरी करनी पड़ी और ७ वर्ष तक वहाँ बड़े कष्ट में जीवन बिताया। जीवन की परुषता और एकाकीपन उनकी उस बाल्यावस्था में ही उनमें ऐसा घर कर चुका था कि उन दिनों बाहर सड़क पर कभी जाते समय देखने वालों को वे "सात-सात मुहरों में बंद किसी रहस्य" की तरह जान पड़ते थे। ७ वर्ष की उस नौकरी से कुछ पैसे जोड़कर उन्होंने २१ वर्ष की उम्र में एक विद्यालय में नाम लिखाकर अध्ययन आरंभ किया। अत्तार के यहाँ नौकरी करते हुए उन्होंने बहुत परिश्रम और मनोयोग से स्वाध्याय किया था। वहीं १९ वर्ष की अवस्था

में वे कविता लिखने लग गए थे। पाठशाला में एक वर्ष अध्ययन करने के बाद ही १८५० में उन्होंने 'कैटालीन' नामक दुःखान्त गीति-नाट्य की रचना की। कुछ ही समय बाद एक रंग-मंच में उनकी नियुक्ति हो गई और १८६१ तक उन्होंने कई नाटक लिखे जिनका अभिनय हुआ। पर इन कृतियों से उन्हें कुछ भी शान्ति और सन्तोष प्राप्त न हुआ। पिछले पाँच वर्षों से लगातार असफलता, असुविधा और अभावों का सामना करने और नार्वे के अज्ञानपूर्ण वातावरण में इस प्रकार लगातार उत्तेजित होने से उनमें उपहास की अत्यन्त कटु प्रवृत्ति पनप उठी थी। सन् १८६२ में प्रकाशित 'लव्स-कमेडी' में उन्होंने मध्यवर्गीय समाज के वाग्दान और पाणिग्रहण के जीवन के भौंडेपन, सपाटपन, और विज्ञापन-प्रमुख खोखलेपन का खुलकर चित्रण किया और पुरुष और स्त्री के प्रथानुमोदित सम्बन्ध की सुषमा को विषाक्त और कलुषित कर देने वाले तकल्लुफ या दिखावट के विरुद्ध आवाज उठाई।

सन् १८६३ में 'किंग्स मेकिंग' की रचना हुई जो सफल और लोक-प्रिय कृति मानी गई, किन्तु इब्सन की ये समस्त रचनाएं उस समय सर्वथा नवीन जीवन और नूतन दृष्टिकोण लेकर आने के कारण उनके देशवासियों को अपरिचित और अनजान प्रतीत हुईं। इसलिए उनके और जनता के बीच खाई सी होती गई जो 'लव्स-कमेडी' में विवाह और गिर्जे के संबंध में व्यक्त विचारों के कारण और गहरी हो गई। वास्तव में 'लव्स-कमेडी' में ईश्वर या धर्म का उपहास नहीं हुआ था। इस कृति के द्वारा इब्सन ने अपनी पीढ़ी को केवल यह बताने का प्रयास किया था कि परमात्मा की मरजी के सम्मुख चरम आत्मोत्सर्ग—संपूर्ण और अनन्य आत्मोत्सर्ग—ही हमारा एक-मात्र कर्तव्य है और यह उत्सर्ग सिर्फ सधी हुई सुदृढ़ संकल्प-भावना द्वारा ही साध्य है। इस संकल्प-भावना के अभाव में धर्म की चर्चा कोरी विडम्बना है। उन्होंने कहा था कि "औरों की भले ही यह शिकायत हो कि हमारा युग पतन और अधमता में डूब रहा है; पर मेरी शिकायत तो यह है कि लोग अधम

नहीं घिनौने हो रहे हैं इस युग के विचार कृश और दयनीय हैं। उनमें कोई भी कार्य करने की ओजस्विता नहीं रह गई है! पतित होने के लिए भी उनके हृदय में आवश्यक धड़कन नहीं है।"

किन्तु उनके नार्वेजनीन देश-भाइयों ने काव्य के इस मर्म को तनिक न समझा और चारों ओर इब्सन की आलोचना होने लगी। उन्हें घोर निराशा, दारिद्रय और अपमान का सामना करना पड़ा। उन्हीं दिनों उन्हें शक्ति-ह्रास का रोग भी हो गया। धीरे-धीरे वे ऋण के भार से दबते गए। इसी बीच प्रशा (जर्मनी) ने १८६४ में डेनमार्क पर आक्रमण किया और इस संकट में नार्वे ने डेनमार्क का साथ न देकर भारी विश्वास-घात किया। अपने कई मित्रों के डेनमार्क की सेना में भरती हो जाने पर भी यह कहकर कि कलाकार को अपने ही अस्त्रों को लेकर संग्राम करना चाहिए इब्सन सेना में भरती नहीं हुए। इन परिस्थितियों ने उनके मन और हृदय को ग्लानि और लज्जा से पराभूत कर दिया। नार्वे को इस कायरता के लिए उन्होंने कभी क्षमा नहीं किया और स्वदेश-परित्याग का निश्चय कर लिया। उस समय उनके पास पैसे न थे। कई मित्रों ने चन्दा करके कुछ एकत्र किया और वे विदेश-यात्रा पर चल खड़े हुए। जिस समय वे रोम जाने के लिए बर्लिन से गुजर रहे थे वहाँ डेनमार्क से छीनी हुई तोपों का प्रदर्शन हो रहा था और जर्मन-सिपाही उन तोपों के मुँह में थूक रहे थे! इधर नार्वे में इनके मकान जिन्हें महाजन कर्जे में कुर्क करा चुका था, नीलाम हो रहे थे। कई दिनों इनकी पत्नी और बच्चों को खाने के लिए रोटी तक नहीं मिल सकी थी। इब्सन के जीवन का यह सबसे अँधेरा प्रहर था।

२७ वर्षों के अपने निर्वासन में इब्सन ओस्लो से रोम, रोम से नेपुल्स, नेपुल्स से ड्रेसडन, ड्रेसडन से म्युनिख और म्युनिख से फिर रोम मारे-मारे फिरे। इस बीच यद्यपि वे नार्वे से दूर थे फिर भी उसकी स्मृति उनकी चेतना में बराबर भायँ-भायँ करती रही। सगे-सम्बन्धी, इष्ट-मित्र सबसे उनका बिलगाव हो गया। नार्वे की सेवा के उपयुक्त महन्त बनने के

का जो प्रसंग आया है वह वस्तुतः इब्सन के बालोचित सरल काव्य स्वभाव की ही हत्या है। कवि की आत्मा का पोषण करने वाली ताजी अल्हड़, रसीली स्फूर्ति की हत्या, संयम और व्यवस्था की वेदी पर उस उद्दाम लहक का विसर्जन, इब्सन ने अपनी कला के निखार के लिए जान-बूझकर चुना था। स्वेच्छा से वरण किया हुआ बलिदान मरण में जीवन को पूर्णता दिलाता है। अनिच्छा से वहन किया जाने वाला बलिदान जीवन में मरण की चादर बिछाता है। इब्सन की यह बे-बसी उनके पात्रों में बराबर पाई जाती है। उन्हें आत्म सार्थकता के लिए इस बलिदान का (जिसमें प्रायः उनके शरीर का ही अंत होता है) स्वेच्छा से वरण करना होता है। इसी कठोर तम को चुनकर ही उन्हें शान्ति मिलती है। अर्थात् उन्हें पूर्ण शान्ति पहले मिल जाती है, और मरण उस शान्ति के परिणाम रूप में होता है। यह नहीं कि शान्ति-प्राप्ति के लिए वे अशान्ति में तड़पती हुई मृत्यु का आलिंगन करने को बाध्य होते हैं। इसी कठोर तम का वरण इब्सन ने भी किया था। चित्रकला, आलोचना, कविता, सबको त्यागकर उन्होंने आत्म-सार्थकता के लिए नाटक का वरण किया था! इस प्रकार का बलिदान करने वाले को प्रायः कठोर और कर्कश आत्ममानी होना पड़ता है। इब्सन ने अपने एक पत्र में लिखा था कि "तुम्हारे लिए खास तौर पर मैं यही चाहता हूँ कि तुम शुद्ध, भरपूर आत्म-मान का विकास करो और नितान्त अपने से सम्बन्ध रखने वाली चीज़ों को छोड़कर शेष सब-कुछ को निरा अस्तित्व-विहीन समझो। अपनी धातु के सिक्के ढालने के अतिरिक्त अन्य कोई भी मार्ग नहीं है जिससे तुम अपने समाज की भलाई कर सकते हो।"

सफल जर्राह बनाया। मोह-ममता का जाल टूट जाने से वे तत्काल की परिस्थितियों से इतने ऊपर उठ गए कि अपने युग के लिए और सब युगों के लिए निर्माण कर सके।

निर्वासन के इस दीर्घ काल की उनकी कृतियाँ, जो उनकी मध्य-काल की रचनाएँ कही जाती हैं, उनके साहित्य का प्रमुख अंग और उनकी विश्व-व्याप्त कीर्ति का आधार-स्तंभ हैं। किन्तु ६३ वर्ष की वय में सन् १८९१ में स्वदेश लौटने पर उनके साहित्यिक जीवन के चौथे पर्व की जो चार अन्तिम रचनाएँ हैं वे उनकी कला की वह महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं जिन्हें समझे बिना उनका व्यक्तित्व पूर्णतया समझा नहीं जा सकता। नार्वे लौट आने पर उनका झुलसा हुआ कवि-हृदय पुनः लहलहा उठता है। यद्यपि ये रचनाएँ गद्य में ही हुई हैं तथापि यह गद्य कवि का गद्य है। इन कृतियों में गहन-गम्भीर अध्यात्मिकता समाई हुई है। ये नाटक सर्वथा प्रतीकात्मक और रहस्यपूर्ण हैं। जान पड़ता है अभिनय को दृष्टि में रखकर इनकी रचना नहीं हुई है। 'जब हम मुर्दे जाग उठते हैं!' इनकी अन्तिम रचना १८९९ में लिखी गई और उसके एक वर्ष बाद ही वे लम्बी बीमारी और महानिर्वाण की यात्रा पर चले गए। ६ वर्ष तक शैया-सेवन के बाद २३ मई १९०६ को जीवन-संग्राम के इस अनोखे सूरमा ने अपनी इस लोक की यात्रा समाप्त की। किन्तु मरने के पूर्व ही जीवन की अपूर्णताओं के कारण दुनिया की आँखों में जीवित किन्तु यथार्थतः मृत मानवता को मानो इस अपनी मृत्यु के पूर्व अन्तिम कृति में पुनर्जीवित देखकर उन्होंने जीवन की सार्थकता और चिरवांछित अमरता प्राप्त कर ली थी।

: ४ :

इब्सन की कृतियों में उनकी मध्य काल की रचनाओं का बड़ा महत्त्व-पूर्ण स्थान है। हमारे देश की वर्तमान परिस्थिति में इन नाटकों की चर्चा लेखक के मत में बड़ी उपादेय सिद्ध होगी। इब्सन ने इन नाटकों में तत्कालीन अपने वास्तविक समाज का विशद अनुशीलन किया है। जन-तन्त्र-शासन-व्यवस्था और उसके विभिन्न तन्तुओं के द्वारा मानव-कल्याण

की अपनी सारी आशा खो चुकने के बाद ये व्यक्ति के चरित्र-विकास को ओर रकर समझकर उस ओर झुके थे। नैतिकता और व्यक्तित्व के आदर्श के सामने अपने युग के समाज का इन्होंने निरीक्षण आरम्भ किया और इस प्रक्रिया में व्यक्ति को उसके समूचे सामाजिक साज-बाज के बीच कड़ी नजर, कड़े दिल और करीब से अवलोकन किया। इन नाटक में असत्य, छलना और प्रवंचना के अनर्थकारी परिणामों का बे-रहमी के साथ उद्-घाटन हुआ है और यह प्रत्यक्ष कर दिया गया है कि ईमानदारी से स्खलन होने पर सामाजिक को कितने अगाध विषाद और अनन्त पतन का पात्र बनना पड़ता है।

'समाज के खम्भे', 'गुड़िया का घर', 'जिन्नात', और 'देश-भर का दुश्मन' में व्यक्ति की नैतिकता का जो आग्रह है 'जांगलू मुर्गाबी' में उसका तिरोभाव होने लगता है और यहाँ से एक नवीन भाव-धारा का उन्मेष हो जाता है, जो 'समुद्र की नारी', 'रोजमरशोम' और 'हेडा गेब-लर' में पूर्णतया प्रस्फुटित है। अब इन अन्तिम चारों नाटकों में व्यक्ति समाज के अंग के रूप में नहीं वरन् स्वतन्त्र आत्मा के रूप में आँका गया है। प्रथम कोटि के चारों नाटक नैतिकता-प्रधान हैं तो दूसरी कोटि के चारों नाटक मानवता-प्रधान हैं। प्रथम कोटि के इन नाटकों में मनुष्य का अपने चतुर्दिक् समाज के प्रति जो नैतिक कर्तृत्व है उसकी व्याख्या हुई है, और दूसरी कोटि के नाटकों में अभ्यंतर के चिन्तन-जगत् के प्रति मानव की जागरूकता का विश्लेषण हुआ है।

प्रथम कोटि के चारों नाटकों का वर्तमान भारतीय सामाजिक जीवन के लिए विशेष महत्त्व है। हमारी आज की सामाजिक परिस्थिति को देखते हुये ऐसा लगता है कि जैसे ये नाटक हमारे आज के जीवन के ही लिए लिखे गए हों। 'समाज के खंभे' में जीवन में सत्य की प्रतिष्ठा का गौरव दिखलाया गया है। इसका नायक अपनी ख्याति की रक्षा के लिए अपना किया हुआ पाप दूसरे के सिर मढ़कर समाज में सुनाम प्राप्त किये है और जब वह बदनाम व्यक्ति अपनी अपकीर्ति मिटाने के लिए अग्रसर होता है

तो नाटक का नायक निर्मम हत्या तक के लिए तैयार हो जाता है। किन्तु अन्त में उसे स्वेच्छा से अपने पाप की घोषणा करके अपने सुनाम को नष्ट कर देना पड़ता है।

'गुड़िया का घर' और जिन्नात' में कौटुम्बिक जीवन के पाप और असत्य का पर्दा-फाश किया गया है। 'गुड़िया का घर' में पति-पत्नी के विरस और अवास्तविक संपर्क के कारण विवाह की मर्यादा का विध्वंस दिखाया गया है, और 'जिन्नात' में प्राण और आत्मा का विनाश लौकिकता के दुखदायी अतिचार के कारण है। 'देश-भर का दुश्मन' में इब्सन फिर जन-जीवन में व्याप्त छद्म और असत्य की भयंकरता की ओर लौट पड़े हैं। यहाँ ईमानदार व्यक्ति का विरोध समाज की बड़ी शक्तियों से है जो उस व्यक्ति को नितान्त एकाकी, लांछित और पराजित कर देती है। यह इब्सन की ही आवाज है जो इस नाटक के नायक डॉक्टर स्टोकमन के मुँह से निकलती है कि "जो एकदम अकेला खड़ा रह सके इस धरा पर वही सबसे बलवान प्राणी है।"

सन् १८७९ में 'गुड़िया का घर' का निर्माण करके इब्सन ने अपने युग की नारी को, जो अपने पति के यज्ञ की तपस्विनी सचेतन समिधा के रूप में प्रस्तुत थी, अपने प्रति भी ऐसे ही कर्तव्य, व्यक्तित्व और आत्म-सम्मान के लिए सचेत किया। इसकी नायिका 'नोरा' के अपने पति को बेगाना और अपरिचित कहकर उसका घर छोड़कर बाहर जाने पर दरवाजा बन्द करते समय जो खुड़क हुई उसने विश्व-समाज और विश्व-साहित्य में नारी जागृति और नारी-स्वातंत्र्य की माँग के लिए बिगुल का काम किया है। इसके बाद १८८१ ई० में 'जिन्नात' में भी पति-पत्नी के इसी अवांछित सम्बन्ध की घनघोर चर्चा हुई। इस रचना के कारण, जितनी बीस वर्ष पहले 'लव्स-कमेडी' के प्रकाशन से इब्सन की आलोचना हुई थी, उससे कहीं अधिक भयंकर कटु आलोचना हुई। इससे उन्हें बहुत आश्चर्य और रोष हुआ। सामाजिक परिष्कार की किसी भी सद्भावना के प्रति बहुमत की इस अशिष्ट मूढ़ान्धता का जवाब देने के लिए वे नार्वेजनीनों के

सामने 'देश-भर का दुश्मन' लेकर आये। इस नाटक के सम्बन्ध में इब्सन ने कहा था कि "यह सत्य है कि डॉक्टर स्तोकमन और मैं बहुत बातों में समान हैं। हम दोनों दोस्त हैं। पर मैं डॉक्टर स्तोकमन की तरह कूढ़-मगज नहीं हूँ।"

भले ही डॉक्टर स्तोकमन कूढ़-मगज़ हों, पर शारीरिक बल और साहस में वे इब्सन से कहीं अधिक पुष्ट हैं। डॉक्टर स्तोकमन के घर पर जिस समय नागरिकों के क्रुद्ध समूह ने कंकड़-पत्थर बरसाना आरम्भ किया उनकी जगह यदि हेर डॉक्टर इब्सन रहते तो टेबुल के नीचे उसी तरह छिप गए होते जैसे डॉक्टर स्तोकमन के क्रुद्ध होने पर समाचार-पत्र का मालिक अस्लाकसन टेबुल के नीचे भागकर कहने लगा—"डॉक्टर साहब! ज़रा नम्रता। मैं बहुत कमजोर हूँ। थोड़ा भी सहना मेरे लिये कठिन है।"

इब्सन ने भी स्तोकमन की तरह सत्य के उद्घोष द्वारा अपने देश-वासियों की कृतज्ञता प्राप्त करने की, मान-पत्र और अभिनन्दन पाने की, आशा की थी। पर उन्हें क्या मिला? मित्रों का परित्याग, स्वतन्त्र भाषण के अधिकार का इन्कार और देश-भर का दुश्मन कहे जाने का तिरस्कार। इस नाटक में डॉक्टर स्तोकमन की निश्छलता उदार-हृदयता, अपने ध्येय के लिए मिट्टी में मिल जाने से भी इन्कार न करने की उनकी साहसिकता और उनके ऊपर चौमुखे प्रहार और विश्वास-घात होने के कारण उत्पन्न सहानुभूतिपूर्ण कृतज्ञता दर्शनीय हैं।

उसका मालिक उसे खाली कर देने के लिए नोटिस देता है। लोग घर-घर घूमकर यह प्रचार करते हैं कि इन्हें अपने घर फीस देकर कोई न बुलाये। इनके दोनों पुत्रों का नाम स्कूल के रजिस्टर से खारिज कर दिया जाता है। इनके श्वसुर ने अपने वसीयतनामे में इनके बच्चों के लिए जो जायदाद लिख रखी थी उसे भी वे वसीयतनामा रद करके वापस ले लेते हैं। यहाँ तक कि देश छोड़कर अमेरिका चले जाने के लिए जिस जहाज के कप्तान से इन्होंने अपने टिकटों का प्रबन्ध कर रखा है उसे जहाज का मालिक नौकरी से ही बरखास्त कर देता है। फिर भी डॉक्टर स्तोकमन घुटने नहीं टेकता। मरुभूमि की बालुका-राशि के अगणित सिकता-कणों के सामने डॉक्टर स्तोकमन का व्यक्तित्व जबलपुर के मदन-महाल में पड़े किसी एक 'बोल्डर' की तरह वज्रवत् दिखाई पड़ता है।

भाई का भाई के प्रति द्वेष, पत्नी का बाल-बच्चों की सुख-शान्ति और सबको बरबाद कर देने वाले पति के आदर्श निश्चय के बीच पति के साथ मर-मिटने का निर्णय, पत्रकारों की मक्कारी, मूढ़ जनता की झट-पट गोलबन्दी और हुल्लड़बाजी, डॉक्टर स्तोकमन की असाधारण वाक्-प्रखरता और प्रतिभाशालीनता तथा उनकी कन्या की मनस्विता आदि का इस नाटक में बड़ा सजीव चित्रण हुआ है। आज की हमारी शिक्षा और समाज-व्यवस्था में व्यक्तित्व-विकास का अवकाश कम है, वर्ग-बन्दी और भीड़-भब्भड़ का अधिक। जनतन्त्र के नाम पर कुछ खास लोग सभा-समितियों की बैठकों से लेकर निर्वाचनों तक में हथकंडों द्वारा अपने मन का सब-कुछ करते हुए भी किस प्रकार उसे जनता का निर्णय घोषित करके सत्य और न्याय का गला घोंट सकते हैं, यह नाटक इसका उत्तम नमूना है। हम अपने देश में जनतन्त्र का प्रयोग कर रहे हैं। परि-पुष्ट हो जाने के पूर्व यह कितनी ही स्थितियों से गुजरेगा। जनतंत्र के विकास की इस अवस्था में इस नाटक का दृष्टिकोण मनन करने योग्य है।

हमारी नई पीढ़ी को स्वतन्त्र व्यक्तित्व और स्वतन्त्र विचार-पद्धति की नितान्त आवश्यकता है। इस दृष्टि से तरुणों के लिए यह नाटक विशेष उपादेय है।

श्रीराम-मन्दिर,
पिंडी, बनारस

राजनाथ पाण्डेय
१५-६-५२

"निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्ठम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदन्न धीराः ॥"

पात्र-परिचय

डॉक्टर तोमस स्तोकमन	...	हम्माम का हेल्थ-अफसर
कत्रीना (मिसेज स्तोकमन)	...	डॉक्टर की पत्नी
पेतरा	...	डॉक्टर की पुत्री, लड़कियों के स्कूल में अध्यापिका
एलिफ और मोर्तन	...	डॉक्टर के जुड़वाँ पुत्र, आयु १२ वर्ष
पेतर स्तोकमन	...	डॉक्टर का छोटा भाई. म्युनिसिपल काउन्सिल का प्रेसिडेंट. नगर-पुलिस का प्रधान अफसर और हम्माम-कमेटी का चेयर-मैन
मोर्तन चील उपनाम "बैजर"	..	चमड़े की फैक्टरी का मालिक, मिसेज स्तोकमन का धर्म-पिता
हूस्ताद	...	'पीपुल्स मेसेंजर' पत्र का संपादक
बिलिंग	...	हूस्ताद का सहायक
होस्तर	...	जहाज का कप्तान
अस्लाकसन	...	'पीपुल्स मेसेंजर' का मुद्रक, गृहस्थों के संघ का चेयरमैन

नागरिकों का समूह, स्त्रियाँ और स्कूल के विद्यार्थी

स्थान—नार्वे के दक्षिणी समुद्र-तट का एक नगर

रचना-काल ; १८८२ ई०

देश-भर का दुश्मन

पहला अंक

[सन्ध्या का समय। डॉक्टर स्तोकमन की बैठक। बैठक की पिछली दीवाल में एक दरवाजा, जिससे होकर भोजन-गृह में जाने का मार्ग। भोजन-गृह में टेबुल के सामने बिलिंग बैठा है। मिसेज स्तोकमन खड़ी-खड़ी बिलिंग को एक रकाबी में भोजन रखकर देती हैं। टेबुल के सामने की अन्य कुर्सियाँ खाली हैं। टेबुल को देखकर ऐसा लगता है कि कुछ देर पहले वहाँ लोग भोजन कर चुके हैं।]

मिसेज स्तोकमन—मिस्टर बिलिंग ! जो घंटा-भर देर करके आये उसे ठंडा भोजन करना ही पड़ेगा, क्यों ?

बिलिंग—(खाता हुआ)—फिर भी कैसा सुन्दर, कितना बढ़िया भोजन है।

मिसेज स्तोकमन—आप तो जानती हैं कि हमारे डॉक्टर साहब समय की बड़ी पाबंदी रखते हैं।

बिलिंग—कुछ हर्ज नहीं, मिसेज स्तोकमन ! मुझे तो जब कभी इस तरह अकेले बिना किसी का मुँह जोहे अपने ढंग से खाने का मौका लगा तो भोजन में कुछ अधिक ही स्वाद मिलता है।

मिसेज स्तोकमन—और अगर आपको इसी में आनंद है तो इससे बढ़कर और क्या बात होगी ? (बगल वाले कमरे की तरफ ध्यान देती है) निश्चय यह हुस्ताद ही आ रहे हैं।

बिलिंग—हो सकता है।

(प्रेसिडेंट स्तोकमन आता है। वह ओवरकोट पहने है। सिर पर अपने पद के अनुरूप जरी के काम की टोपी और हाथ में चाँदी की गोल मूँठ वाला बेंत लिये है।)

प्रेसिडेंट स्तोकमन—नमस्ते भाभी !

मिसेज स्तोकमन (बैठक में आकर)—नमस्ते भाई जी, नमस्ते। बड़ा अच्छा हुआ जो आप आ गए। हमें दर्शन मिला।

प्रेसिडेंट—मैं तो बस इधर से निकला था। सोचा यहाँ भी होता चलूँ। (भोजन-गृह की तरफ देखता है) अच्छा, और लोग हैं ?

मिसेज स्तोकमन (कुछ उलझन से)—नहीं तो। बिलकुल नहीं। यों ही आ गए हैं। (जल्दी-जल्दी) चलिये न ! आप भी कुछ लीजिये।

प्रेसिडेंट—गरम-गरम सालन सन्ध्या समय ? नहीं, मेरे बिलकुल अनुकूल नहीं पड़ता।

मिसेज स्तोकमन—एक-आध बार ले लेने से क्या होता है भाई जी ? चलिये तो सही।

प्रेसिडेंट—नहीं, नहीं। बिलकुल नहीं। बहुत-बहुत धन्यवाद ! मैं तो बस चाय, और मक्खन-रोटी ही लेता हूँ। यही ठीक पड़ता है। और इसी में किफायत भी है।

मिसेज स्तोकमन—भाई जी, आप यह बिलकुल न सोचें कि मैं या आपके भाई फिजूल खर्च हैं।

प्रेसिडेंट—कौन कहता है बहू ? फ़िज़ूलखर्ची और तुम ? (डॉक्टर के स्वाध्याय वाले कमरे की ओर संकेत करके) वह घर में नहीं है ?

मिसेज स्तोकमन—नहीं। नाश्ता करके जरा बच्चों के साथ बाहर निकल गए हैं।

प्रेसिडेंट—पता नहीं उनके लिए यह कहाँ तक ठीक है। (आँकनता है) लो, वह आ गए।

मिसेज स्तोकमन—नहीं, यह वह नहीं जान पड़ते। (कुंडी की खड़खड़ाहट) आइये न ! (हूस्ताद आता है) वाह, यह लो। मिस्टर हूस्ताद हैं।

हूस्ताद—क्षमा कीजिये, छापने वालों ने मुझे अटका लिया था। नमस्ते प्रेसिडेंट जी, आप हैं ?

प्रेसिडेंट—(जरा अकड़ से गरदन झुकाकर) मिस्टर हूस्ताद, नमस्ते ! किसी विशेष काम से आये हैं आप ?

हूस्ताद—थोड़ा, थोड़ा। अखबार के सम्बन्ध में।

प्रेसिडेंट—ऐसा ही मैंने भी समझा। सुनते हैं हमारे भाई आपके 'पीपुल्स मेसेंजर' में खूब ही लेख भेजते हैं।

हूस्ताद—जी, हाँ, जब कोई विशेष विचार उनके मन में उठता है तो वे हमारे 'मेसेंजर' पर ही कृपा करते हैं।

मिसेज स्तोकमन—(हूस्ताद से) क्या आप कृपा करेंगे ?—(भोजन-गृह की ओर संकेत करती है)

प्रेसिडेंट—ईश्वर बचाये। मेरा भाई जिन लोगों के लिए लेख लिखकर उनकी सराहना का पात्र बन रहा है, उनके लिए लेख लिखने की मैं उसकी प्रशंसा नहीं कर सकता। मिस्टर हूस्ताद आप बुरा न मानेंगे। आपके पत्र के प्रति मेरा कोई दुर्भाव नहीं।

हूस्ताद—नहीं, नहीं। ऐसा मैं कभी नहीं समझता प्रेसिडेंट जी !

प्रेसिडेंट—बात यह है कि हमारे नगर के लोगों में परस्पर अच्छी भावना है। समाज-कल्याण की अच्छी कामना है। और इसकी खास वजह है। हम सबको एक साथ बाँध रखने वाला और सबको समान रूप से सुख पहुँचाने वाला एक जरिया है, और सच्ची सूझ-बूझ रखने वाले प्रत्येक नागरिक का उस जरिये से घना सम्बन्ध है।

हूस्ताद—जी हाँ। वही हमारे नगर के हम्माम। ठीक है न ?

प्रेसिडेंट—बिलकुल ठीक। ये हमारे आलीशान हम्माम। आप देखेंगे। नगर की सारी शान, नगर का सारा जीवन निश्चित रूप से इसी केन्द्र के चारों ओर सिमटकर पनपेगा।

मिसेज स्तोकमन—हूबहू यही बात तो डॉक्टर साहब भी कहते हैं, भाई जी !

प्रेसिडेंट—पिछले एक-दो वर्षों में ही यह नगर किस तेजी से उन्नति कर गया है। सब तरफ पूँजी बढ़ती दिखाई दे रही है। जीवन में चहल-पहल आ गई है। मकान का किराया अधिक मिलने लगा है, जिससे जायदाद का मूल्य भी काफी बढ़ चला है।

हूस्ताद—और काम मिलने की सम्भावना अधिक हो जाने से बेकारी भी घट चली है।

प्रेसिडेंट—जगह-जमीन वालों को पहले जो 'टिकस' देना पड़ता था। उसमें भी कमी हो गई है। इस साल अगर 'सीजन' अच्छा गया, याने स्वास्थ्य-सुधार के लिए यात्री अधिक संख्या में आये तो हमारे यहाँ के हम्माम खूब प्रसिद्ध हो जायँगे। तब तो टिकस में और कमी हो जायगी।

हूस्ताद—आशा तो यही है कि बहुत से लोग आएँगे।

प्रेसिडेंट—मैं तो रोज ही देखता हूँ। ढेर-भर चिट्ठियाँ आती रहती हैं। हमारे हम्मामों में स्नान द्वारा स्वास्थ्य-लाभ की इच्छा रखने वाले कितने ही यात्री यहाँ रहने की जगह तथा उसके किराये आदि के सम्बन्ध में खूब पूछ-ताछ कर रहे हैं।

हूस्ताद—तब तो डॉक्टर वाला लेख बड़े मौके पर निकलेगा।

प्रेसिडेंट—अच्छा, क्या डॉक्टर ने और लेख लिखे हैं ?

हूस्ताद—जी नहीं। यह लेख तो उन्होंने जाड़ों ही में लिखा था। इसमें उन्होंने इन हम्मामों की व्यवस्था की, नगर की सफाई की योजना की खूब ही तारीफ की है। पर उस समय मैंने यह लेख रोक लिया था।

प्रेसिडेंट—अच्छा ? उस समय छापने में कोई हिचक थी ?

हूस्ताद—जी ऐसी तो कोई बात न थी। हमने सोचा कि इसे बसन्त-ऋतु आने तक रोक रखा जाय और यात्री जब गर्मी का आरंभ

होते ही स्वास्थ्य-प्रद जगहों के बारे में सोचना आरम्भ कर दें तब इसे छाप दिया जाय।

प्रेसिडेंट—बिल्कुल ठीक आपने सोचा, मिस्टर हूस्ताद! बिलकुल ठीक।

मिसेज स्तोकमन—हमारे डॉक्टर साहब, इन हम्मामों के लिए कितना भी परिश्रम करना पड़े थकान जानते ही नहीं।

प्रेसिडेंट—होना ही चाहिए। आखिर तो वह भी हम्मान के कार्य-कर्ताओं में से ही है।

हूस्ताद—जी हाँ! इतना ही नहीं। वही तो इन हम्मामों के विधाता हैं।

प्रेसिडेंट—जी? मिस्टर हूस्ताद, अभी-अभी जो आप कह गए हैं यह बात अक्सर सुनने में आती है। कुछ लोग शायद ऐसा ही समझते हों। पर आप यह भूलिए नहीं कि इस योजना में कुछ हाथ मेरा भी रहा है।

हूस्ताद—आपके हाथ का किसी को पता न होगा? मैं तो सिर्फ यही कह रहा था कि पहले-पहल यह बात डॉक्टर स्तोकमन को ही सूझी थी।

प्रेसिडेंट—हाँ, मेरे भाई की किसी समय सूझ की भरमार थी। पर तब उनका भाग्य साथ न दे सका, क्योंकि सूझों को एक आकार देने के लिए दूसरे ही जीवट के लोग जरूरी होते हैं। मैं तो आशा करता था कि कम-से-कम इस मकान में—

मिसेज स्तोकमन—क्यों? यह क्या बात है भाई जी?

हूस्ताद—प्रेसिडेंटजी, आप यह कैसे?

मिसेज स्तोकमन—मिस्टर हूस्ताद! आप जरा जाकर कुछ खाइये तो। डॉक्टर साहब अब आ ही रहे होंगे।

हूस्ताद—धन्यवाद, कुछ तो जरूर ही लूँगा।

(हूस्ताद भोजन-गृह में जाता है)

प्रेसिडेंट—(धीमे स्वर में) कैसी अजीब बात है। ये लोग, जो किसानों के खानदान में होते हैं, शऊर तो सीख ही नहीं पाते।

मिसेज स्तोकमन—पर आप इसका खयाल क्यों करें, भाई जी ! आप और डॉक्टर साहब हम्मामों की योजना की कीर्ति दो भाइयों-की भाँति बराबरा बराबर बाँट नहीं सकते ?

प्रेसिडेंट—खयाल तो अच्छा है, भाभी ! पर कुछ लोग प्रतिष्ठा में साझा पसन्द नहीं करते।

मिसेज स्तोकमन—यह तो ठीक नहीं है, भाई जी ! आप और डॉक्टर कितने प्रेम से रहते हैं। (अँकनती है) यह लो, वह आ रहे हैं। (जाती है और बगल के कमरे का दरवाजा खोलती है)

डॉक्टर स्तोकमन—(बाहर ही से हँसता और जोर-जोर से बोलता हुआ) कत्रीन ! यह लो। एक और तुम्हारे मेहमान को लेता आया हूँ। कितनी खुशी है। आइये, कप्तान होस्तर ! भीतर चलिये। कत्रीन ! ये रास्ते में सड़क पर मिल गए। बड़ी कठिनाई से इन्हें आने के लिए राजी कर सका।

(कप्तान होस्तर आता है। विनम्रता से मिसेम स्तोकमन को अभि-वादन करता है। डॉक्टर स्तोकमन अभी बाहर ही हैं)

डॉक्टर स्तोकमन—भीतर चलो बच्चो ! लो जी, कप्तान साहब ! थोड़ा भुना हुआ सालन तुम भी चखो !

(कप्तान होस्तर को भोजन-गृह में ले जाता है। एलिफ और मोर्तन भी वहीं जाते हैं)

मिसेज स्तोकमन—डॉक्टर, जरा उधर भी तो देखो, कौन है ?

डॉक्टर स्तोकमन—(दरवाजे की तरफ देखता है) अहा ! पेतर भाई, आप हैं ? (पास जाता और प्रेसिडेंट का हाथ पकड़ता है) खूब खूब ! बेशक बहुत अच्छा हुआ। कैसा आनन्द है।

प्रेसिडेंट—पर मुझे तो रुकना नहीं है। अभी चले जाना है।

डॉक्टर—बिलकुल फिजूल बात। कॉफी की एक प्याली, बस। पल भर में तैयार हुई जाती है। कत्रीन, भूली तो नहीं हो ?

मिसेज स्तोकमन—बिलकुल नहीं। पानी खौला ही समझिये।

(भोजन-गृह में जाती है)

डॉक्टर—देखिये, बस बैठ जाइए। हम सब एक साथ काफी पियेंगे।

प्रेसिडेंट—धन्यवाद, तोमस ! मैं पार्टियों में कभी शरीक नहीं होता।

डॉक्टर—यह क्या कोई पार्टी है ?

प्रेसिडेंट—मुझे तो ऐसा ही लगता है। (भोजन-गृह की तरफ गरदन उठाता है) अजीब-सा लगता है। इतने से लोग और इतना ढेर भर सामान !

डॉक्टर—(अपनी हथेलियाँ मसकता हुआ) ऐसे उभरते जवानों को थाली के सामने बैठे देखना क्या सुख और आनन्द की बात नहीं है, पेतर ? बलिहारी है इनकी भूख को। जब देखो इन्हें भूख ही लगी होती है। जवानी में ऐसा होना ही चाहिए। ये खायें, खूब खायें। इन्हें बल चाहिए, इन्हें तेज चाहिए। भविष्य में हलचल और ज्योति भरने वाले यही तो हैं।

प्रेसिडेंट—क्या कहा, 'भविष्य में हलचल और ज्योति भरना ?' क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि इसका अभिप्राय क्या है ?

डॉक्टर—यदि आप यह पूछना ही चाहेंगे तो समय आ जाने पर इन जवानों से ही पूछ लीजियेगा। हम-आप इसे क्या समझ सकते हैं। दो बूढ़े खबीस हमारे और आप-जैसे !

प्रेसिडेंट—यह तो आपका एक बड़ा विचित्र लहजा है। जरा साफ करके कहिये।

डॉक्टर—पेतर भाई ! आप मेरे इन उद्‌गारों से बुरा न मानें। मेरा तो यह हाल है कि जब मैं जीवन के नये-नये पौधों—इन नौनिहालों, नौजवानों—के बीच बैठा होता हूँ तब मेरे सन्तोष का फूल विकसित हो उठता है और आनन्द की खुशबू में एकदम डूब जाता हूँ। देखिये न, हम कैसे महान् युग में रह रहे हैं। ऐसा लगता है हमारे चारों ओर एक नई दुनिया ही भीतर से उभरती ऊपर उठती चली आ रही है !

प्रेसिडेंट—सचमुच ? ऐसी बात है ?

डॉक्टर—सचमुच यही बात है। इसे आप उतना स्पष्ट नहीं देख सकते जितना मैं देख रहा हूँ। बात यह है कि आपका समय यहीं, इसी के बीच बीत रहा है। इसी से यह ताजगी, यह नवीनता आपकी निगाह की पकड़ में नहीं आती। परन्तु मैंने अपना सारा जीवन उत्तर में, जानो एक छोटी-सी खोह में काटा है जहाँ मुझे आशा का एक शब्द भी देने वाला कोई प्राणी नहीं मिलता था। इस-लिए यह सब जीता-जागता जीवन मुझे इतना प्रभावित करता है। मैं तो मानो अचानक किसी राजधानी के कलेजे में बिठा दिया गया हूँ।

प्रेसिडेंट—हुँ, राजधानी !

डॉक्टर—खैर, राजधानी नहीं सही। परन्तु यहाँ जान है, जीवट है, और भविष्य का उजलापन है। काम करने के एक सौ एक अवसर हैं। ये बातें क्या साधारण महत्त्व रखती हैं ? (अपनी पत्नी को पुकारता है) कत्रीन, कोई पत्र आया है क्या ?

मिसेज स्तोकमन—जी नहीं, कोई नहीं।

डॉक्टर—और यहाँ अच्छी आमदनी भी है, पेतर, इसका महत्त्व वही समझ सकता है जो किसी तरह पेट भर सकने की मजदूरी पर जीवन बिता चुका हो।

प्रेसिडेंट—हे भगवान् !

डॉक्टर—सच मानो, पेतर ! हमने ऐसे दिन बिताये हैं जैसे भगवान् किसी को न दिखाये। और अब ? अब तो हम राजकुमारों-जैसे रह सकते हैं। देखो, आज ही हमने भुना हुआ ताजा सालन खाया है। अभी और भी रखा है। थोड़ा तुम भी खाओ। चलो, उठो। देखो तो सही।

प्रेसिडेंट—नहीं, नहीं। जी नहीं।

डॉक्टर—वह देखो ! हमने एक मेज-पोश खरीदा है।

प्रेसिडेंट--यह तो मैं देख ही रहा हूँ।

डॉक्टर--और यह देखो, टेबुल-लैंप। कत्रीन ने पैसे जोड़-जोड़कर चीजें खरीद लीं। इनसे कमरा कैसा खिल उठा है। जरा यहाँ खड़े होकर तो देखो। नहीं, नहीं। वहाँ नहीं। यहाँ से। बिलकुल ठीक। देखो कितनी अच्छी रोशनी पड़ रही है। कैसा अच्छा लग रहा है सब!

प्रेसिडेंट--अच्छा तो लगेगा ही। सजावट में इतना पैसा लगेगा तो अच्छा भी न लगेगा?

डॉक्टर--जी हाँ। इतना तो अब हम खर्च कर ही सकते हैं। कत्रीन का कहना है जितना हमारा खर्च है मैं लगभग उतना अब कमा लेता हूँ।

प्रेसिडेंट--अच्छा? लगभग।

डॉक्टर--फिर यह तो देखो। साइन्स के आदमी को थोड़ी शान से रहना भी चाहिए। एक नायब तहसीलदार भी साल में हमसे अधिक खर्च कर देता है।

प्रेसिडेंट-- नायब तहसीलदार नहीं एक बड़ा मजिस्ट्रेट।

डॉक्टर--तब यों तो एक मामूली दुकानदार भी। वे लोग मेरे से कई गुना अधिक कमाते भी तो हैं।

प्रेसिडेंट--बिलकुल स्वाभाविक है।

डॉक्टर--पर मैं तो कुछ भी व्यर्थ नहीं खर्च करता, पेतर, हाँ मित्रों के अपने पास जुटने के सुख को मैं लात नहीं मार सकता। मैं उनका स्वागत करूँगा ही। जीवन में इतने दिनों तक निस्संग रहने के बाद मेरे लिए यह आवश्यक हो गया है कि मैं दमकते, हँसमुख स्वाधीन स्वभाव के नौजवानों के बीच रहूँ; और अब ठीक समझिये कि ये सब युवक, जो वहाँ (भोजन-गृह की ओर संकेत करता है) जुटे इतने सुख से भोजन कर रहे हैं, इसी तरह के हैं। कितना अच्छा होता यदि आप हूस्ताद से थोड़ा और

परिचित होते।

प्रेसिडेंट—हुस्ताद, हाँ वह मुझसे अभी कह रहे थे कि वह आपका दूसरा लेख शीघ्र छापने वाले हैं।

डॉक्टर—मेरा लेख ?

प्रेसिडेंट—हाँ, हाँ। आप ही का। यही अपने नगर के हम्मामों के विषय में। वही लेख जो आपने जाड़े के दिनों में लिखा है।

डॉक्टर—अच्छा, वह लेख। पर मैं उसे अभी नहीं छपाना चाहता।

प्रेसिडेंट—क्यों, क्यों ? मैं तो समझता हूँ कि उसे छपाने का यही सबसे अधिक उपयुक्त अवसर है।

डॉक्टर—(कमरे में टहलने लगता है) साधारण परिस्थिति में मैं भी ऐसा ही समझता।

प्रेसिडेंट—परिस्थिति में अब ऐसी कौन सी असाधारण बात आ गई है ?

डॉक्टर—(खड़ा हो जाता है) पेतर, अभी मैं कुछ कह नहीं सकता। कम-से-कम आज तो नहीं ही। हो सकता है कुछ बात बिलकुल असाधारण परिस्थिति की हो। हो सकता है कुछ भी न हो, मेरा कोरा वहम ही हो।

प्रेसिडेंट—यह तो मैं पहले से जानता हूँ कि तुम एक पहेली हो। क्या कुछ हवा में घुस गया है ? कौन सी वह बात है जिसका मुझसे परदा किया जा रहा है ? मैं तो सोचता हूँ कि हम्माम-कमेटी के चेयरमैन की हैसियत से--

डॉक्टर—(बात काटकर) और मैं यह समझता हूँ कि—खैर पेतर, हमें अपनी पीठ नहीं मोड़नी चाहिए।

प्रेसिडेंट—ईश्वर बचाये, मुझे पीठ मोड़ने की आदत नहीं है तोमस ! पर इतना मैं बहुत साफ-साफ कह देना चाहता हूँ कि हर काम ठीक-ठिकाने से होना चाहिए, और बिलकुल जिम्मेदारी के साथ। मैं किसी भी ऐसे काम से अपना लगाव नहीं रख सकता जो उलझे और लुके-छिपे ढंग से किया जाय।

डॉक्टर—क्या उलझे और लुके-छिपे ढंग से मेरा लगाव रहा है ?

प्रेसिडेंट—अपने ही निराले रंग में रँगे रहने की तो तुम्हारी पुरानी बान है। सुसंयमित नागरिकों की बस्ती में इस तरह की चाल रुचती नहीं है। व्यक्ति को समाज के सामने या यों कहिये उस व्यवस्था के सामने, जो समाज के कुशल-क्षेम का सँभार करती है, झुकना ही चाहिए।

डॉक्टर—शायद ऐसा ही हो। पर उस बला से मेरा क्या सम्बन्ध है ?

प्रेसिडेंट—यही तो वह बात है तोमस, जिसे सीखने को तुम तैयार ही नहीं होते। पर मैं आगाह करता हूँ, सचेत हो जाओ। कभी-न-कभी तुम्हें इसके लिए भारी कष्ट भोगना पड़ेगा। मैंने चेतावनी दे दी। अब चला। नमस्ते !

डॉक्टर—तुम पागल हो गए हो क्या ? कहाँ से कहाँ ले उड़े !

प्रेसिडेंट– इतना ग़लत मैं नहीं समझा करता। एक बात और भी है। मैं तुमसे कहता हूँ, इतना खयाल रखना कि—खैर। (भोजन-गृह की तरफ हाथ उठाकर) नमस्ते भाभी ! नमस्ते मेहमान लोगो !

(जाता है)

मिसेज स्तोकमन (भोजन-गृह में आकर)– गये भाई जी ?

डॉक्टर—हाँ जी, गये, और बहुत ऊँचा मिजाज लेकर।

मिसेज स्तोकमन—बात क्या थी ? आप उनसे अभी क्या कह रहे थे ?

डॉक्टर—कुछ भी नहीं। वह क्यों ऐसी आशा करते हैं कि मैं उन्हें हर बात का हिसाब देता फिरूँ ? बात चाहे मौके की हो, चाहे बे-मौके की।

मिसेज स्तोकमन—कौन सी ऐसी बात है जिसका हमें हिसाब देना है ?

डाक्टर—तुम तो फिकर न करो। बड़ी उलझन तो यह है कि कोई चिट्ठी नहीं आई।

आते हैं। एलिफ और मोर्तन भी पीछे-पीछे आते हैं)

बिलिंग—अपने सिर की कसम, ऐसा खाना खाकर कौन होगा जो एक नये जीवन का अनुभव न करने लगे ?

हूस्ताद—प्रेसिडेंट महाशय आज कुछ उखड़े-उखड़े से दिखाई दे रहे थे।

डॉक्टर—यह उनके पेट का कसूर है। बेचारे का हाजमा ठीक नहीं रहता।

हूस्ताद—'पीपुल्स-मेसेंजर' के संपादक-मंडल के लिए उनका हाजमा और भी कमजोर है।

मिसेज स्तोकमन—पर आपसे तो कोई कड़ी बात नहीं हुई ?

हूस्ताद—युद्ध तो नहीं ठना, पर विराम-सन्धि ही समझिये !

डॉक्टर—मिस्टर हूस्ताद, हमें यह याद रखना चाहिए कि पेतर बेचारे ने विवाह नहीं किया है। कुटुम्ब की शान्ति उसके लिए दुर्लभ है। इसीसे उसे दिन-रात व्यवसाय-ही-व्यवसाय का चक्कर लगा रहता है। हल्की चाय से अपना गला सींचकर बेचारा संतोष करता है। बस, खत्म करो यह बात। बच्चो ! कुर्सियाँ ले आओ। कत्रीन ! तुम्हारी काफी में क्या देर है ? चाय भी ले आओ, और जिसे पसंद आये कोको भी ले। सभी तैयार करो !

मिसेज स्तोकमन—(रसोईघर में जाती है) मैं सब-कुछ अभी लाई।

डॉक्टर—कप्तान होस्तर ! आप सोफे पर यहीं मेरे पास बैठिये ऐसे भद्र मेहमान का संग बड़ा दुर्लभ होता है।

(सब लोग यथास्थान बैठ जाते हैं। मिसेज स्तोकमन एक ट्रे में केतली, प्याले और सब सामग्री लेकर आती है)

मिसेज स्तोकमन—यह लो जी, कॉफी है। यह क्रीम, यह शक्कर। बस लीजिये अपनी-अपनी रुचि का प्याला।

डॉक्टर—(एक प्याला लेकर) बस निकालो अब सिगार। एलिफ ! तुम तो जानते ही हो कि सिगार का डिब्बा कहाँ है। और मोर्तन ! तुम मेरा पाइप ले आओ। और पाइप पीने के समय

की मेरी टोपी भी लाओ। दोस्तो, आप सब भी पियो। देर न करो। अहा ! यहाँ इस प्रकार आराम से बैठकर थोड़ा समय बिताना कैसा सुखद है।

मिसेज स्तोकमन—आपका जहाज कब खुलने को है कप्तान होस्तर !

होस्तर—अगले सप्ताह।

मिसेज स्तोकमन—कहाँ, अमरीका के लिए ?

होस्तर—जी हाँ !

बिलिंग—तब तो नगर-पालिका के चुनाव में अब आप भाग न लेंगे ?

होस्तर—क्या फिर कोई चुनाव होने वाला है ?

बिलिंग—और आप यह भी नहीं जानते ?

होस्तर—नहीं। मेरा ध्यान इन बातों की तरफ नहीं रहता।

बिलिंग—पर ऐसे सामाजिक कार्यों में आपको दिलचस्पी लेनी ही चाहिए।

होस्तर—ये बातें मैं तनिक भी नहीं समझता हूँ, तब भी ?

बिलिंग—फिर भी अपने वोट का उपयोग तो करना ही चाहिए।

होस्तर—भाई, मैं ये बातें बिलकुल नहीं समझता।

बिलिंग—जरा समझिये तो सही। हमारा समाज एक जहाज की तरह है। यहाँ हर एक को मस्तूल पर हाथ लगाना आवश्यक है।

होस्तर—मिस्टर बिलिंग ! जहाज तट पर हो तो भले ही ऐसा हो सकता है, पर जब जहाज पानी में हो तो ऐसा नहीं होता।

हूस्ताद—बड़ी विचित्र बात है। समुद्री जीवन वाले लोग राजनीति के कामों में कितनी कम दिलचस्पी रखते हैं।

बिलिंग—सचमुच बड़ी विचित्र बात है।

डॉक्टर—भाई, इन नाविकों को सफर पर निकले पंछी समझिये, जिनका घर उत्तर में भी है और दक्खिन में भी। इसलिए बाकी जो हम लोग बचे उन्हें और अधिक उत्साह से ये काम करना चाहिए। मिस्टर हूस्ताद ! यह तो बताइये 'पीपुल्स मेसेंजर'

में जनता की दिलचस्पी का कोई लेख कल निकल रहा है ?

हूस्ताद—स्थानीय महत्त्व की कोई चीज नहीं है। परन्तु परसों के अंक में आप वाला लेख निकालना चाहता हूँ।

डॉक्टर—बिलकुल नहीं साहब। उसे तो अभी रोक ही रखना है।

हूस्ताद—सचमुच ? क्यों ? इस समय पत्र में स्थान भी पर्याप्त है और उस लेख के लिए उपयुक्त अवसर भी है।

डॉक्टर—हाँ, हाँ। आपका सोचना तो ठीक है। फिर भी उसे रोके रखिये। यह बात मैं आपको समझा दूंगा।

(पेतरा का प्रवेश। वह सिर पर हैट लगाये, एक लबादा ओढ़े, विद्यार्थियों के अभ्यास की कापियाँ बगल में लिये आती है)

पेतरा—नमस्ते पिताजी !

डॉक्टर—नमस्ते पेतरा ! तुम आ गईं ?

(सभी लोगों से नमस्ते-नमस्कार होती है। पेतरा कोट और हैट खूंटी पर लटकाती और कापियाँ कोने की कुर्सी पर रखती है)

पेतरा—(मुस्कराती है) आप लोग यहाँ हैं और मैं गुलामी करने गई थी !

डॉक्टर—आओ, मेरी बेटी ! तुम भी इस उत्सव में शरीक हो जाओ।

बिलिंग—मैं आपकी प्याली तैयार करती हूँ।

पेतरा—धन्यवाद, मिस्टर बिलिंग ! मैं खुद बनाऊँगी। आप बहुत कड़ी पीते हैं। (डॉक्टर की तरफ मुड़कर) पिताजी ! आपकी एक चिट्ठी है।

(जाकर कोट की जेब में से एक पत्र निकालकर लाती है)

डॉक्टर— चिट्ठी ! कहाँ से आई है ?

पेतरा—मुझे तो डाकिये ने दी थी जब मैं स्कूल जा रही थी।

डॉक्टर—और तुम मुझे अब दे रही हो बेटी ?

पेतरा—पिताजी ! उस समय बड़ी देर हो गई थी। लौटकर आने में और भी देर होती। यह है वह। (पत्र देती है)

डॉक्टर—(पत्र लेता है) देखूँ तो सही। (पता पढ़कर) हाँ यही है वह!

मिसेज स्तोकमन—यह वह पत्र है जिसकी आप इतनी प्रतीक्षा कर रहे थे?

डॉक्टर—हाँ कत्रीन! यही वह पत्र है। मेरे स्वाध्याय के कमरे में लैम्प होगा क्या?

मिसेज स्तोकमन—हाँ मैंने वहाँ लैम्प जलाकर रख दिया था। टेबुल पर रखा होगा।

डॉक्टर—बहुत ठीक। पल-भर के लिए आप लोग क्षमा करें। मैं अभी आता हूँ।

पेतरा—ऐसी यह कैसी चिट्ठी है माँ?

मिसेज स्तोकमन—मैं कुछ नहीं जानती बेटी! एक हफ्ते से रोज ही यह डाकिये को पूछा करते हैं।

बिलिंग—शायद देहात का कोई मरीज हो।

पेतरा—तब तो बिचारे पिताजी को आज बहुत काम बढ़ जायगा। (अपने लिए कॉफी तैयार करके पीने लगती है) वाह! कितनी अच्छी कॉफी है।

हूस्ताद—क्या आप रात्रि-पाठशाला में काम करती हैं?

पेतरा—(एक घूँट पीकर) दो घंटे।

बिलिंग—और चार घंटे रोज अपने स्कूल में भी।

पेतरा—पाँच घंटे।

मिसेज स्तोकमन—और आज घर जाँचने के लिए कापियाँ भी लाई हो?

पेतरा—पूरा एक बंडल ही।

होस्तर—बहुत ज्यादा काम आपको करना पड़ता है।

पेतरा—जी हाँ, लेकिन यह मैं पसंद करती हूँ। अधिक काम करने से थकान होने में भी एक सुख मिलता है।

बिलिंग—खूब, यह आपको पसन्द आता है?

पेतरा—क्यों नहीं? क्योंकि इसके बाद खूब अच्छी नींद आती है।

मोर्तन—पेतरा जीजी ! तब तो आप भारी गुनहगार होंगी।

पेतरा—गुनहगार !

मोर्तन—अवश्य। नहीं तो इतना परिश्रम क्यों करना पड़ता ? हमारे टीचर कहते हैं कि बहुत सा काम हमारे गुनाहों का दंड है।

एलिफ—हुश् ! कैसे बुद्धू तुम हो जी, जो ऐसी गपोड़ेपन की बातों पर विश्वास करते हो।

मिसेज स्तोकमन—हाँ, हाँ, एलिफ !

बिलिंग—(ठहाका मारकर हँसता है) खूब, खूब !

हूस्ताद—मोर्तन, तब तो तुम ज्यादा परिश्रम कभी न करोगे।

मोर्तन—मैं तो कभी न करूँ।

हूस्ताद—तब तुम कौन सा काम करोगे ?

मोर्तन—मैं तो समुद्री डाकू बनूँगा।

एलिफ—तब तो तुम्हें नास्तिक होना पड़ेगा।

मोर्तन—होऊँगा।

बिलिंग—मोर्तन, मैं तुमसे सहमत हूँ। मैं भी यही कहता हूँ।

मिसेज स्तोकमन—(बिलिंग को संकेत से बरजती है) नहीं, नहीं, मिस्टर बिलिंग ! आप ऐसे नहीं।

बिलिंग—अपने सिर की कसम, मैं सच कहता हूँ। मैं नास्तिक हूँ और मुझे ऐसा होने का गर्व है। आप देखेंगी, हम सब शीघ्र ही नास्तिक हो जाने को हैं।

मोर्तन—तब तो हम जैसा चाहेंगे, बे-रोक-टोक कर सकेंगे।

बिलिंग—देखो मोर्तन !

मिसेज स्तोकमन—बस बच्चो ! चलते बनो। स्कूल का अपना कल का सबक तैयार करो।

एलिफ—माँ, मुझे थोड़ी देर यहीं रहने दो।

मिसेज स्तोकमन—नहीं जी, तुम भी जाओ। चलो, दोनों जाओ।

(दोनों नमस्कार करके चले जाते हैं)

हूस्ताद—मिसेज स्तोकमन ! क्या सच ही आपका यह विश्वास है कि इन बातों के सुनने से लड़कों की क्षति होती है ?

मिसेज स्तोकमन—वह तो नहीं जानती, पर मुझे यह अच्छा नहीं लगता।

पेतरा—लेकिन, माँ यह तो ठीक नहीं है।

मिसेज स्तोकमन—हो सकता है। पर घर के भीतर यह बात अच्छी नहीं लगती।

पेतरा—माँ, चाहे घर हो चाहे स्कूल। बे-हिसाब छल-कपट का बाजार गर्म है। घर के भीतर जबान दबाकर रहो, और स्कूल में जाओ तो बच्चों के सामने खड़े होकर झूठ बोलो।

होस्तर—झूठ ? सो क्यों ?

पेतरा—क्या आप नहीं जानते कि स्कूल में हमें कितनी ही ऐसी बातें पढ़ानी पड़ती हैं जिन पर हम स्वयं विश्वास नहीं करते।

बिलिंग—बात तो ठीक है।

पेतरा—अगर मैं कहीं एक स्कूल खोल पाती। तो वहाँ की पढ़ाई कुछ और ही होती।

बिलिंग—क्या कहा आपने ? अगर एक स्कूल खोल पाती ?

होस्तर—मिस स्तोकमन, अगर आप सचमुच ऐसा चाहती हैं तो मैं अपने पिता वाला पुराना मकान, जो खाली पड़ा रहता है, आपको दे सकता हूँ। उसका भोजन-गृह बहुत बड़ा है और धुर नीचे है।

पेतरा—(हंसकर) बहुत-बहुत धन्यवाद, मिस्टर होस्तर ! पर ऐसा कुछ होने का नहीं।

हूस्ताद—मिस पेतरा बहुत करके पत्रकारी के काम में लगेंगी। हाँ मिस पेतरा, यह तो कहिए आपने उस अंगरेजी उपन्यास को पढ़ा या नहीं जिसका अनुवाद आप हमारे पत्र के लिए कर रही हैं।

पेतरा—अभी तो नहीं, पर शीघ्र ही आप उसे पा जायँगे।

(डॉक्टर स्तोकमन हाथ में खुला पत्र लिये वापिस आता है)

डॉक्टर—(चिट्ठी फड़काता है) यह है ! देखें आप लोग। यह खबर सारे नगर में कोलाहल न मचा दे तो आप भी कहियेगा !

बिलिंग—कोई खबर ?

मिसेज स्तोकमन—कैसी खबर ?

डॉक्टर—एक भारी खोज, कत्रीन ! एक महान् अन्वेषण !

हूस्ताद—क्या ?

मिसेज स्तोकमन—आपकी की हुई खोज ?

डॉक्टर—जी हाँ, यह खोज मैंने ही की है। (कमरे में पूरब-पच्छिम, पच्छिम-पूरब टहलता है) अब कहिये ? लोग कहते थे, वहमी है, सिर फिरा है। पर अब ऐसा कहने की कोई हिम्मत न करेगा। मैं जानता हूँ कोई हिम्मत न करेगा।

पेतरा—पिताजी, हम लोगों को भी तो बताइये !

डॉक्टर—ठहरो तो सही। तुम सब अभी सुनोगे। क्या ही अच्छा होता अगर मेरे भाई साहब प्रेसिडेंट पेतर भी यहाँ होते। दुनिया कैसी विचित्र है। दूसरों के विषय में कितनी गलत धारणा लोग अन्धी छछूँदर की तरह बना लिया करते हैं।

हूस्ताद—इसका मतलब क्या है डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर--(टेबुल के पास आकर खड़ा होता है) आप सब यही समझते हैं न कि हम लोगों का नगर एक बड़ा स्वास्थ्य-प्रद स्थान है ?

हूस्ताद—इसमें सन्देह ही क्या है ?

डॉक्टर—बेशक यहाँ का निराला स्वास्थ्य है। ऐसा स्वस्थ यह नगर है कि यहाँ का निवास रोगी, रोग से निर्बल और स्वस्थ सभी लोगों के लिए लाभदायक कहा जाता है।

मिसेज स्तोकमन—डॉक्टर साहब !

डॉक्टर—और हम सबने गला फाड़-फाड़कर इसका यश गाया है। कितने उत्साह से मैंने भी अखबारों में लेख छपाये और पुस्तिकाएँ बाँटी हैं।

हूस्ताद—तो बात क्या है ?

डॉक्टर—ये हम्माम, ये स्नानागार, जिन्हें हम अपने नगर की प्राण-नाड़ी कहते हैं, मेरुदण्ड की धमनियाँ और न जानें क्या-क्या कहते हैं···

बिलिंग—अपने सिर की कसम, इन्हें 'नगर का फड़कता हुआ दिल' कहने की मेरी कई बार इच्छा हुई है !

डॉक्टर—पर आप जानते हैं इनकी असलियत क्या है ? ये आलीशान, महान्, हमारे हम्माम, जिन पर इतना अपार धन खर्च हुआ है, आप जानते हैं क्या हैं ?

हूस्ताद—हम तो नहीं जानते । आप कहिये ये क्या हैं ?

डॉक्टर—ये स्वास्थ्य के स्नानागार नहीं, विष के, रोग के, महामारी के आगार हैं !

पेतरा—ये हम्माम पिताजी !

मिसेज स्तोकमन—हमारे ये हम्माम ?

हूस्ताद—लेकिन डॉक्टर !

बिलिंग—हमको यकीन नहीं होता ।

डॉक्टर—विश्वास मानिये, विश्वास! सारा-का-सारा स्थान विष में डूबा एक-एक घिनौना कब्रिस्तान हो रहा है। चमड़े वाली फैक्टरी की सारी गन्दगी अपनी सारी सड़ान लेकर नीचे-ही-नीचे हम्माम के पाइप और पानी को जहरीला करती है और वही विषैली गन्दगी ऊपर तक पसीजकर सारे समुद्र-तट को नम कर डालता है ।

हूस्ताद—पर आप यह सब इतने निश्चय के साथ कह कैसे सकते हैं ?

डॉक्टर—मैंने इस सारी चीज की बड़ी लगन और ईमानदारी के साथ खोज जो की है । गत वर्ष टायफाइड और वायु-विकार के कई असाधारण लक्षणों के मरीज देखने में आये । मुझे उसी समय से थोड़ा-थोड़ा सन्देह हो गया था ।

मिसेज स्तोकमन—हाँ मुझे याद आ रहा है। उस समय आपने मुझसे यह बात कही थी।

डॉक्टर—उस समय मैंने यह भी सोचा था कि शायद यह दूत परदेशी लाये थे। पर मेरा सन्देह बना रहा। मैं पानी की जाँच करने लगा। मेरे पास पूरे औजार न थे। इसलिए मैंने नल के पीने का पानी और समुद्र के पानी के नमूने यूनिवर्सिटी के केमिस्ट के पास जाँच के लिए भेजे।

हूस्ताद—वहाँ से क्या जवाब आया ? कोई रिपोर्ट आई ?

डॉक्टर—हाँ आई। रिपोर्ट यह है। (पत्र देता है) लीजिये, सब-कुछ पढ़ लीजिये। पीने के पानी और नहाने के पानी दोनों में विकृत तत्वों के कारण करोड़ों कीटाणु उत्पन्न हो रहे हैं।

मिसेज स्तोकमन—यही बड़ी अच्छी बात हुई जो आपने इस भारी खतरे का समय से पता लगा लिया।

डॉक्टर—हाँ, बात तो कुछ ऐसी ही हुई है।

हूस्ताद—तो अब होना क्या चाहिए ?

डॉक्टर—और क्या होना चाहिए ? जो उचित है वही होना चाहिए।

हूस्ताद—पर क्या यह हो सकेगा ?

डॉक्टर—न हो सकेगा तो काम कैसे चलेगा ? बिना कुछ किये ये सारे हम्माम व्यर्थ हैं, बेकार हैं। पर इसमें चिन्ता की क्या बात है ? मैं तो बतलाऊँगा ही कि कैसे यह सब ठीक हो जायगा।

मिसेज स्तोकमन—पर डॉक्टर साहब इन तमाम बातों को गुप्त रखने की क्या जरूरत थी ?

डॉक्टर—पक्के तौर पर इस बात का जब स्वयं मुझे ही विश्वास न हो तब नगर में घर-घर जाकर इस बात की चर्चा करना क्या मेरे लिए उचित था ? जी नहीं, मुझसे इस तरह का भद्दापन नहीं होता।

पेतरा—पर हम लोगों से, घर के प्राणियों से भी—

डॉक्टर—मैं संसार के किसी भी प्राणी से कैसे कह सकता था ? हाँ कल, आप सब लोग "बैजर" के यहाँ आ सकते हैं।

मिसेज स्तोकमन—ओह ! डॉक्टर।

डॉक्टर—हाँ पेतरा, कल तुम्हारे नानाजी के यहाँ मैं पहुँचूँगा। वहीं लोग मेरा यह आविष्कार सुनेंगे। तुम्हारे नानाजी भी सुनेंगे। वह हमेशा से यही सोचते रहे हैं कि मेरे दिमाग में कुछ टेढ़ा-टेढ़ा-सा है। कुछ दूसरे लोग भी ऐसा ही समझते हैं। मैं इन भलेमानुसों की आँखें कल खोल दूँगा। (कमरे में टहलने लगता है) सारे शहर में तहलका मच जायगा। कत्रीन, सारे पाइप उखाड़कर नए सिरे से बैठाने पड़ेंगे।

हूस्ताद—(खड़ा हो जाता है) सभी पाइप उखाड़ने होंगे ?

डॉक्टर—जी हाँ, अवश्य। सारा धरातल ही जो धँसकर नीचा हो गया है। ऊपर उठाये बिना काम कैसे चलेगा ?

पेतरा—पिताजी तो यह बात तभी कह रहे थे।

डाक्टर—हाँ पेतरा, तुम्हें याद है न ? जब काम शुरू हुआ था उसी समय मैंने जोर देकर यह कहा था। पर उस समय कोई क्यों मेरी बात पर ध्यान देता ? अब इनकी समझ में आयगा। मैंने डाइरेक्टरों के लिए अपना वक्तव्य पहले ही से तैयार कर रखा है; बस इस रिपोर्ट की प्रतीक्षा थी। अब मैं अपना वक्तव्य तुरन्त भेजता हूँ। (कमरे में जाकर एक पैकेट ले आता है) और इसमें अब यह रिपोर्ट भी नत्थी किये देता हूँ। एक पुराना अखबार लाओ कत्रीन ! एक फीता इसे बाँधने के लिए दो। (बाँधता है) हाँ बस, इसे तुरन्त प्रेसिडेंट महाशय के पास भिजवा दो।

(मिसेज स्तोकमन पैकेट लेकर बाहर जाती है)

पेतरा—ताऊजी इसे पढ़कर क्या कहेंगे पिताजी ?

डॉक्टर – वह क्यों कहेंगे ? मेरे ऐसे अन्वेषण पर उन्हें खुश होना ही पड़ेगा।

हूस्ताद—डॉक्टर साहब, मैं अपने 'मेसेंजर' में एक नोट छाप दूँ तो कैसा रहेगा ?

डॉक्टर—बहुत अच्छा हो। अगर आप छाप सकें तो।

हूस्ताद—यह उचित है कि शीघ्र-से-शीघ्र जनता को इसकी जानकारी करा दी जाय।

डॉक्टर—बिलकुल उचित है।

मिसेज स्तोकमन—मैंने भिजवा दिया।

बिलिंग—अपने सिर की कसम डॉक्टर, आप नगर में सबसे ऊपर उठ जाने वाले हैं।

डॉक्टर—ऐसी कोई बात नहीं मिस्टर बिलिंग, आखिर मैंने क्या किया है ? मैं तो बस अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ।

बिलिंग—मिस्टर हूस्ताद, क्या यह उचित नहीं है कि सारा नगर धूमधाम से जुलूस निकालकर डॉक्टर स्तोकमन का उचित सम्मान करे।

हूस्ताद—मैं तो यही प्रस्ताव करूँगा।

बिलिंग—और मैं अस्लाकसन से भी इसके बारे में बात करूँगा।

डॉक्टर—नहीं, मेरे प्यारे मित्रो, मैं इस तरह की कोई बात पसंद न करूँगा। अगर हमारे डाइरेक्टर मेरा वेतन बढ़ा देने का प्रलोभन देंगे तो मैं उसे भी ठुकरा दूंगा। कत्रीन, मैं निश्चय कर चुका हूँ। मैं स्वीकार नहीं करूँगा।

मिसेज स्तोकमन—यह बिलकुल उचित है।

पेतरा—(भरा प्याला उठाकर) आपके सुस्वास्थ्य की कामना में यह प्याला पीते हैं पिता जी !

हूस्ताद और बिलिंग—आप स्वस्थ रहें, सदा स्वस्थ रहें डॉक्टर। (दोनों अपना प्याला उठाते हैं)

होस्तर—(प्याला उठाकर) **आपको इस खोज से सुख मिले डॉक्टर साहब !**

डॉक्टर—(अपना प्याला लेकर) **आप सब मित्रों को मैं किन शब्दों में धन्यवाद दूँ ? मैं कुछ कह नहीं सकता। मित्रो, आज मैं कितना प्रसन्न हूँ। मेरे लिए यह अपार संतोष की बात है। अगर मैं इस नगर और यहाँ के नागरिकों का कहलाने योग्य समझा जाऊँ। कितनी प्रसन्नता की बात है कत्रीन !**

(प्रसन्नता के मारे डॉक्टर स्तोकमन अपनी पत्नी के दोनों हाथ पकड़कर उठा देता है और दोनों ही क्षण-भर के लिए अपने को भूल कर नाचने लगते हैं। थोड़ी देर में मिसेज स्तोकमन चिल्लाती हैं और अपने को छुड़ाकर कुर्सी पर धम्म से बैठ जाती है। डॉक्टर कुछ देर तक अकेला ही चक्कर लगाता रहता है। सभी लोग ठहाका मार-मार-कर हँसते हैं। एलिफ और मोर्तन दोनों दरवाजे के बाहर खड़े भीतर की ओर झाँक रहे हैं।)

दूसरा अंक

[डॉक्टर स्तोकमन की बैठक। भोजन-गृह का दरवाजा बंद है। समय—प्रातः काल]

मिसेज स्तोकमन—(डॉक्टर के कमरे के दरवाजे से झाँककर) डॉक्टर साहब !

डॉक्टर—आओ न, यह क्या है ?

मिसेज स्तोकमन—आपके भाई ने यह पत्र भेजा है।

डॉक्टर—देखें क्या लिखा है। (लिफाफा खोलता है) "मेरे पास जो मिसिल भेजी गई थी वापस की जा रही है।" (फिर धीरे-धीरे पढ़ता है) हुँ !

मिसेज स्तोकमन—हाँ, क्या लिखा है उन्होंने ?

डॉक्टर—(पत्र को जेब में रखता है) कुछ नहीं। यही कि दोपहर में वे स्वयं पधारेंगे।

मिसेज स्तोकमन—तो याद रखियेगा। दोपहर में घर पर ही रहियेगा।

डॉक्टर—मैं अपना काम आज सवेरे ही खत्म किये दे रहा हूँ।

मिसेज स्तोकमन—मुझे यह जानने की बड़ी उत्सुकता है कि इस सम्बन्ध में आपके भाई के क्या भाव हैं।

डॉक्टर—उनके यहाँ आने पर साफ मालूम हो जायगा। इतना तो निश्चित है कि वह बहुत प्रसन्न न होंगे; क्योंकि यह खोज उन्होंने नहीं, मैंने की है।

मिसेज स्तोकमन—बस यही तो बात है जिसका मुझे भी भय है।

डॉक्टर—कत्रीन, भीतर से तो वह भी प्रसन्न ही होंगे। पर तुम जानती हो। पेतर के स्वभाव में एक बात बड़ी घृणित है। वह चाहते

हा नहीं कि उन्हें छोड़कर दूसरा कोई भी नगर के हित का काम करने का यश पा सके।

मिसेज स्तोकमन— प्यारे तोमस, मेरी तो यही इच्छा है कि तुम इस सारे प्रसंग में कोई ऐसी बात क्यों न निकाल लो कि यह यश तुम दोनों ही को समान रूप से प्राप्त हो। क्या तुम यह नहीं कह सकते कि प्रेसिडेंट स्तोकमन ने ही इस खोज की तुम्हें प्रेरणा दी ?

डॉक्टर—कत्रीन, यह कहने में मुझे जरा भी संकोच नहीं। यश की मुझे रत्ती-भर भी कामना नहीं है। मेरी एक-मात्र चिन्ता यही है कि इस भयंकर स्थिति का किसी भी प्रकार अंत हो।

(बूढ़ा मोर्तन चील उपनाम 'बैजर' बगल वाले कमरे से झाँकता है। बड़े ध्यान से चारों तरफ आँखें दौड़ाता है। फिर झिझकता हुआ पूछता है)

मोर्तन चील—हैं सचमुच ? यह सच है ?

मिसेज स्तोकमन— (उसके पास जाकर) पिता जी, आप हैं, ओ हो !

डॉक्टर—पिता जी, आइये, नमस्ते ! वहाँ कैसे खड़े हैं।

मिसेज स्तोकमन—भीतर आइये न !

मोर्तन चील—अगर यह सच है तो। नहीं तो मुझे लौट जाना है।

डॉक्टर—कौन सी बात अगर सच है ?

मोर्तन चील—वही नगर के अपने वाटर-वर्क्स की बात। क्या वह सच है ?

डॉक्टर—हाँ, हाँ, सच तो है ही। लेकिन आपको यह बात किस तरह मालूम हुई ?

मोर्तन चील—(भीतर आ जाता है) पेतरा स्कूल जाते समय मेरे यहाँ आई थी।

डॉक्टर—अच्छा, वह आपके यहाँ होती हुई स्कूल गई है ?

मोर्तन चील—हाँ, हाँ। उसी ने मुझसे कहा। पर मुझे विश्वास नहीं

हुआ। लेकिन पेतरा का ऐसा स्वभाव नहीं कि मेरा मजाक उड़ाने के लिए ऐसी बात कहे। इसीसे पूछने के लिए मैं यहाँ आ गया।

डॉक्टर—मजाक का आपको सन्देह ही नहीं होना चाहिए, पिताजी !

मोर्तन चील—क्यों नहीं होना चाहिए ? किसका भरोसा किया जाय ? न जाने कब किसके मन में क्या समा जाय और वह ऐसा मजाक बनाय कि पूरा तमाशा बन जाने के पहले तक कुछ पता ही न चले। खैर, यह बात सच है न ?

डॉक्टर—बिलकुल सच है। आप बैठ तो जाइए !

मोर्तन चील—(अपनी हँसी दबाता है) यह नगर के बड़े कल्याण की बात है।

डॉक्टर—जो मैंने समय से इसकी खोज कर ली है ?

मोर्तन चील—हाँ, हाँ, हाँ। मगर मुझे कभी विश्वास न था कि तुम अपने ही भाई के साथ ऐसा बेढब खेल खेलोगे।

डॉक्टर—कैसा खेल ?

मिसेज स्तोकमन—ओह, पिताजी !

मोर्तन चील—(अपनी छड़ी की मूँठ पर अपनी ठुड्डी रखकर) खैर, फिर से तो कहो। उसने कहा कि पानी के पाइप में कुछ जानवर घुस गए हैं।

डॉक्टर—हाँ, संक्रामक कीटाणु।

मोर्तन चील—और कितने ऐसे जानवर घुस गए होंगे ? पेतरा ने कहा कि हजारों होंगे वे, हजारों !

डॉक्टर—निश्चय ही। हजारों नहीं, करोड़ों।

मोर्तन चील—कसम खा सकता हूँ। तुम्हारी ऐसी ऊँची बात हमने अब-तक कभी सुनी ही नहीं।

डॉक्टर—आपका क्या मतलब है ?

मोर्तन चील—लेकिन प्रेसिडेंट क्या एक भी सुनेगा ?

डॉक्टर—यह तो देखा जायगा।

मोर्तन चील—क्या तुम विश्वास करते हो कि उसका सिर सचमुच ऐसा फिर जायगा कि वह ये बातें मान ले ?

डॉक्टर—सारे नगर का सिर घूम जायगा !

मोर्तन चील—सारा नगर ? हो सकता है ऐसा हो। इससे उनकी आँखें तो खुल ही जायँगी। एक अच्छा सबक उन्हें मिलेगा। समझते हैं बूढ़े-बुजुर्ग उनके सामने कुछ अक्ल ही नहीं रखते। हमें म्युनिसिपल-काउंसिल तक में बोलने नहीं दिया गया। अब मजा चखने का समय आ गया है। बस, तोमस ! तुम डटे रहना।

डॉक्टर—सो तो ठीक है, लेकिन पिता जी !

मोर्तन चील—तुम डटे रहना, बस मैं यही कहता हूँ। (उठकर खड़ा होता है) अगर तुमने प्रेसिडेंट और उसके गुट वालों के गलों के नीचे उन सबकी यह मूर्खता उतार दी तो मैं सौ अशर्फियाँ गरीबों में बाँट दूँगा।

डॉक्टर—यह तो आपकी बड़ी भारी कृपा होगी।

मोर्तन चील—यद्यपि मेरे पास बहुत नहीं है, परन्तु इतना तो पक्का ही समझो। यदि तुम हमारे कहे अनुसार निबाह ले गए तो बड़े दिन पर पचास अशर्फियाँ मैं गरीबों को अवश्य बाटूँगा।

(हूस्ताद आता है)

हूस्ताद—नमस्ते, डॉक्टर साहब ! क्षमा कीजियेगा, मैं आ गया।

डॉक्टर—नहीं, नहीं, मिस्टर हूस्ताद ! आइये न !

मोर्तन चील—अच्छा, तो यह भी इसी में है ?

हूस्ताद—क्या कहा आपने ? इसका मतलब क्या है ?

डॉक्टर—हाँ पिताजी, इन्हें भी मेरे साथ ही समझिये।

मोर्तन चील—मैंने ऐसा ही समझा था। शायद अखबार में छपाना हो।

डॉक्टर—जो मैंने कहा है याद रखना। तुम्हारे ऊपर पूरा भरोसा रखता हूँ।

डॉक्टर--नहीं पिताजी, जरा ठहरिए तो सही ।

मोर्तन चील--नहीं, नहीं, अब मैं न ठहरूँगा । तुमसे जो कुछ हो सके जरूर करना । तुम्हारा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता ।

(मोर्तन चील चला जाता है मिसेज स्तोकमन उसे दरवाजे तक पहुँचाने जाती है)

डॉक्टर--(हँसता है) क्या समझा आपने मिस्टर हूस्ताद ? यह बूढ़ा वाटरवर्क्स वाले मामले पर जरा भी विश्वास नहीं करता ।

हूस्ताद--अच्छा ? तो क्या वह यही बात कर रहे थे ?

डॉक्टर--जी हाँ । यही बातें हो रही थीं । शायद आप भी इसी संबंध में बातें करने आये हैं ?

हूस्ताद--जी हाँ । क्या आपके पास थोड़ा समय है ?

डॉक्टर--काफी समय है । आप जितना चाहें लें ।

हूस्ताद--प्रेसिडेंट महोदय का कोई जवाब आया ?

डॉक्टर--अब तक तो कुछ नहीं आया । खुद ही आने को हैं ।

हूस्ताद--मैं इस मामले के सम्बन्ध में कल शाम से ही सोच रहा हूँ ।

डॉक्टर--अच्छा ?

हूस्ताद--आप डॉक्टर हैं । आपको नगर के स्वास्थ्य का ध्यान है । आपकी निगाह में यही मामला सब-कुछ है । पर डॉक्टर साहब, हमारे लिए इस समस्या के साथ और भी कई मामले गुँथ गए हैं ।

डॉक्टर--सो कैसे ?

हूस्ताद--आपने कल बतलाया कि सारा पानी गंदगी के कारण विषैला हो रहा है ।

डॉक्टर--निश्चय ही । सारा जहर मिल के पास वाली गन्दगी की दलदल से बहता है ।

हूस्ताद--क्षमा कीजियेगा, डॉक्टर साहब, सारा जहर तो एक दूसरी ही दलदल के कारण है ।

डॉक्टर—वह कौन सी दलदल है ?

हूस्ताद—वही दलदल जिसमें फँसकर हमारी म्युनिसिपैलिटी का सारा जीवन सड़ रहा है।

डॉक्टर—पता नहीं आप क्या कह रहे हैं मिस्टर हूस्ताद ?

हूस्ताद—नगर का सारा जीवन धीरे-धीरे मुट्ठी-भर पूंजीपतियों के हाथ में सिमिट गया है। वे जो चाहते हैं, वही होता है।

डॉक्टर—मगर ऐसा है तो नहीं, मिस्टर हूस्ताद, उनमें सभी तो पूँजी-पति नहीं है।

हूस्ताद—यह ठीक है कि उनमें सभी पूँजीपति नहीं हैं। मगर जो नहीं हैं वे भी तो उन्हीं के भाड़े के टट्टू हैं। नगर का सारा शासन कुछ इने-गिने पैसे वाले कुलीनों के हाथों में चला गया है।

डॉक्टर—मगर उन लोगों में योग्यता तो है। सूझ-बूझ तो है।

हूस्ताद—सूझ-बूझ और सारी योग्यता पाइप लगाते समय कहाँ चली गई थी ?

डॉक्टर—बेशक इस मामले में उनसे चूक हुई है। लेकिन अब तो सब ठीक हो ही जायगा।

हूस्ताद—क्या आपको इसका विश्वास है ? क्या यह आसानी से ठीक हो जायगा ?

डॉक्टर—कैसे भी हो, ठीक होना ही पड़ेगा।

हूस्ताद—ठीक तभी होगा जब अखबार का जोर पड़ेगा।

डॉक्टर—मैं आपसे सहमत नहीं, मिस्टर हूस्ताद ! इस बात की जरूरत ही न पड़ेगी। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे भाई—

हूस्ताद—जी नहीं, डॉक्टर साहब, इस मामले को जोर-शोर से उठाना पड़ेगा।

डॉक्टर—अखबार के द्वारा ?

हूस्ताद—जी हाँ। जब मैंने 'पीपुल्स मेसेंजर' को हाथ में लिया था तभी यह निश्चय कर लिया था कि सारी शक्ति अपनी मुट्ठी में

रखने वाले इन जिद्दी और पिद्दी खोखले दिमाग वालों का गुट तोड़-फोड़कर ही दम लूँगा।

डॉक्टर—और इसका नतीजा जो निकला वह आपने खुद ही मुझे बतलाया है। आपने अपना अखबार लगभग समाप्त ही कर डाला था!

हूस्ताद—हाँ, उस समय मुझे पीछे हट जाना पड़ा, क्योंकि उस समय यदि हम इनको इनके पदों से हटाने में सफल भी हो जाते तो हम्माम की योजना पैसों की कमी के कारण धरी रह जाती। पर अब बात कुछ और ही है। अब हमारा काम इन मोटे आदमियों के बिना भी चल सकता है।

डॉक्टर—इनके बिना काम चल सकता है, यह तो ठीक है। फिर भी हमारे ऊपर इनका कुछ अहसान है।

हूस्ताद—उनके अहसान को कृतज्ञता सहित स्वीकार किया जायगा। हमारे-जैसा जनवादी विचारों का पत्रकार ऐसे सुअवसर को हाथ से नहीं जाने दे सकता। "अधिकारी लोग सब ठीक ही करते हैं," इस ढोंग को तोड़े बिना हम चैन नहीं लेंगे। और सब ढोंगों की तरह इस ढोंग को भी ढहाना ही होगा।

डॉक्टर—ढोंग का विरोधी तो आप ही जैसा मैं भी हूँ, और जिसे आप ढोंग कहते हैं, अगर वह सचमुच ढोंग है तो जरूर आप उसे ढहाइये।

हूस्ताद—मुझे प्रेसिडेंट महोदय का विरोधी होने का जरूर दुःख होगा क्योंकि वे आपके भाई हैं, परन्तु डॉक्टर साहब, मुझे विश्वास है कि सत्य को आप सहोदर से भी अधिक प्रिय मानते हैं।

डॉक्टर—कौन कहता है कि नहीं? मगर, मगर आप जरा विचार तो कीजिये—

हूस्ताद—मेरे विषय में अन्यथा न सोचिये। जितना दूसरे हैं, उससे अधिक न तो मैं स्वार्थी हूँ और न महत्त्वाकाक्षी।

डॉक्टर—मेरे मित्र, मैंने यह कब कहा कि तुम ऐसे हो ?

हूस्ताद—आप तो जानते ही हैं कि एक साधारण कुल में मेरा जन्म हुआ है। मुझे कई अवसर यह जानने के लिए मिले हैं कि छोटे वर्ग के लोगों को किस बात की जरूरत है। जनता के सामाजिक जीवन के प्रबंध में कुछ हाथ उनका भी होना चाहिए डॉक्टर, यही वह चीज है जिससे गरीबों में भी योग्यता, स्वाभिमान और ज्ञान पैदा होता है।

डॉक्टर--में यह अच्छी तरह समझता हूँ।

हूस्ताद—मेरा यह निश्चित मत है कि वह पत्रकार, जो गरीबों को ऊपर उठाने का अवसर पाकर लापरवाही करता है, अपनी जिम्मेदारी से गिर जाता है। मैं जानता हूँ कि मुझे जनता को उभारने वाला कहकर मेरी कड़ी आलोचना की जायगी। परन्तु जब तक मेरी आत्मा शुद्ध है, मुझे किसी बात की परवाह नहीं।

डॉक्टर—ठीक है, बिलकुल ठीक, भाई हूस्ताद, लेकिन फिर भी—शैतान तेरा बुरा हो—(कोई कुंडी खड़खड़ाता है) कौन है भाई, आइये न !

अस्लाकसन—क्षमा कीजियेगा, डॉक्टर साहब !

डॉक्टर—क्या मिस्टर अस्लाकसन हैं ?

अस्लाकसन—हाँ, मैं ही हूँ, डॉक्टर साहब !

(अस्लाकसन भीतर आ जाता है)

हूस्ताद—(उठता है) क्या मुझसे कुछ कहना है ?

अस्लाकसन—नहीं तो, मैं नहीं जानता था कि आप यहीं हैं ? मुझे डाक्टर स्तोकमन से कुछ काम है।

डॉक्टर—कहिये, मैं क्या सेवा करूँ ?

अस्लाकसन—जो कुछ मिस्टर बिलिंग कह रहे थे क्या सच है, डॉक्टर साहब ? क्या आप हम लोगों के लिए अच्छा वाटर-वर्क्स होने का प्रयत्न कर रहे हैं ?

डॉक्टर—हाँ, हम्माम के लिए।

अस्लाकसन—हाँ, हाँ, वही तो। तब मैं आपसे यह कहने को आया हूँ कि आपके इस आंदोलन में मैं आपका पूरा साथ दूँगा।

हूस्ताद—(डॉक्टर स्तोकमन से) देखिये, मैं कहता न था।

डॉक्टर—मुझे आप पर पूरा भरोसा है। धन्यवाद ! परन्तु···

अस्लाकसन—हम मध्य-श्रेणी के लोगों का समर्थन पा जाने से आपको कोई क्षति न हो पायगी। नगर में हम लोगों का ठोस बहुमत है और बहुमत का बल हमेशा अच्छा होता है, डॉक्टर साहब !

डॉक्टर—बेशक, बेशक, लेकिन मैं नहीं समझता कि किसी खास आंदोलन की आवश्यकता पड़ेगी। ऐसे साफ और सीधे मामले में किसी प्रकार की—

अस्लाकसन—ठीक है, फिर भी क्या हर्ज है ? मैं यहाँ के अधिकारियों को अच्छी तरह जानता हूँ। ये लोग दूसरे लोगों के सुझाव को कभी स्वीकार नहीं करते। इसलिए अच्छा हो कि हम लोग एक छोटा-सा प्रदर्शन कर दें।

डॉक्टर—प्रदर्शन ? किस प्रकार के प्रदर्शन की बात आप सोच रहे हैं ?

अस्लाकसन—बिलकुल एक हलका-सा नम्र प्रदर्शन, डॉक्टर साहब ! मैं सदा नम्रता का पक्षपाती हूँ। नम्रता नागरिकता का सबसे पहला गुण है। कम-से-कम मेरा तो यही मत है।

डॉक्टर—हम सब लोग वह जानते हैं, मिस्टर अस्लाकसन !

अस्लाकसन—जी हाँ, मेरी नम्रता को प्रायः सभी लोग जानते हैं। हम साधारण मध्यम श्रेणी वालों के लिए यह वाटर-वर्क्स का मामला बड़ा महत्त्व रखता है। ये हम्माम हमारे नगर के लिए एक छोटी-मोटी सोने की खान ही होना चाहते हैं। हम लोगों, विशेष कर गृहस्थों की इनके सहारे गुजर होने वाली है। हम तो अपनी सारी ताकत से हम्माम का समर्थन करना चाहेंगे। गृहस्थों के संघ के चेयरमैन की हैसियत से···

डॉक्टर—अच्छा ?

अस्लाकसन—और मद्य-पान-विरोधी-सभा के एक सचेष्ट कार्यकर्ता की हैसियत से···

डॉक्टर—हाँ, हाँ।

अस्लाकसन—आप समझ सकते हैं कि मेरा बहुतों से सम्पर्क है। फिर आपने जैसा अभी मेरे विषय में स्वीकार किया है, दूसरे लोग भी मानते हैं कि मैं समझ-बूझकर पाँव रखने वाला, कानून का आदर करने वाला नागरिक हूँ। डॉक्टर साहब, नगर में मेरा थोड़ा असर भी है, और मेरे हाथ में थोड़ी ताकत भी है, हालाँकि मुझे अपने मुँह से ऐसा कहना नहीं चाहिए।

डॉक्टर—मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ, मिस्टर अस्लाकसन !

अस्लाकसन—एक मान-पत्र का आयोजन करना मेरे लिए आसान काम होगा।

डॉक्टर—मान-पत्र ?

अस्लाकसन—जी हाँ, मान-पत्र। क्या नगर के कल्याण के लिए किये गए आपके प्रयत्नों के प्रति नागरिकों की ओर से एक प्रकार का धन्यवाद का प्रस्ताव। प्रस्ताव की भाषा ऐसी नम्र रखनी पड़ेगी जिससे अधिकारी-वर्ग में से किसी को कोई आपत्ति न हो। हम नम्रता के साथ अपना काम करेंगे तो हमारा किसी से विरोध न होगा।

हूस्ताद—नम्रता तो ठीक है, पर इस तरह का धन्यवाद-प्रदर्शन उन लोगों को अच्छा न लगा तो ?

अस्लाकसन—नहीं, नहीं, नहीं। मिस्टर हूस्ताद, अधिकारी-वर्ग से संघर्ष करने की कोई जरूरत नहीं। मैं इसका बहुत अनुभव कर चुका हूँ। इससे कुछ लाभ नहीं होता। हाँ, विरोध और द्वेष की भावना त्यागकर नम्रता सहित नागरिक का स्वतन्त्र विचार हम बे-खटके प्रकट कर सकते हैं।

डॉक्टर—मिस्टर अस्लाकसन, अपने नगरवासियों का इस तरह का सहयोग पाकर मैं कितना प्रसन्न हूँ। शब्दों द्वारा यह प्रकट नहीं हो सकता। मुझे आपकी बातें अपार आनन्द दे रही हैं।

अस्लाकसन—धन्यवाद, धन्यवाद। मैं जाना चाहता हूँ। कृपया आज्ञा दें। मुझे नगर में घूमकर कुछ गृहस्थों से बातें करनी हैं। जनमत तैयार करना है।

डॉक्टर—परन्तु अस्लाकसन, मेरी समझ में यही आ रहा है कि अभी इन सब तैयारियों की कोई आवश्यकता नहीं है। मुझे तो यह मामला एकदम सरल और साधारण जान पड़ता है।

अस्लाकसन—मगर डॉक्टर साहब, ये अधिकारी बड़े दीर्घ-सूत्री होते हैं।

हूस्ताद—हम कल के अंक में उन्हें काफी झकझोर देंगे, मिस्टर अस्लाकसन !

अस्लाकसन—नहीं मिस्टर हूस्ताद, नम्रता ! उग्र होने की आवश्यकता नहीं। नम्रता से आगे बढ़िये। मैंने जीवन की पाठशाला में यही अनुभव प्राप्त किया है कि उग्रता से कोई काम हल नहीं होता। मेरा नमस्कार लें, डॉक्टर साहब ! इतना विश्वास रखें कि आप हम मध्यम श्रेणी के लोगों को सदैव एक सुदृढ़ दीवार की तरह अपने पीछे खड़ा पायेंगे। नगर का ठोस बहुमत आपके समर्थन के लिए तैयार रहेगा।

डॉक्टर—बहुत, बहुत धन्यवाद, मिस्टर अस्लाकसन, नमस्कार !

अस्लाकसन—मिस्टर हूस्ताद, आप भी दफ़्तर चल रहे हैं क्या ?

हूस्ताद—आप चलिये, मैं भी आ रहा हूँ।

(अस्लाकसन जाता है। डॉक्टर उसे दरवाजे तक पहुँचाता है)

हूस्ताद—(डॉक्टर के लौटकर आने पर) इस विषय में आपका क्या खयाल है डॉक्टर साहब ? क्या आप यह नहीं समझते कि इस मौके पर हमें इस प्रकार की कायरता और ढुलमुलपन दूर कर देना चाहिए ?

डॉक्टर—क्या आपका संकेत अस्लाकसन की ओर है ?

हूस्ताद—जी हाँ, अस्लाकसन बेशक साफ-सुथरा आदमी है, लेकिन वह भी तो इसी दलदल में फँसे लोगों में से है। यहाँ अधिकांश लोग इन्हीं महाशय-जैसे हैं। ये सब दो नावों पर पैर रखने वाले लोग हैं। इनमें साहस नहीं है। हिम्मत के साथ एक कदम भी आगे बढ़ जाने का इनमें हौसला नहीं है।

डॉक्टर—लेकिन अस्लाकसन तो मुझे पवित्र इरादों वाला व्यक्ति जान पड़ता है।

हूस्ताद—लेकिन डॉक्टर साहब ! पवित्र इरादों से भी ज्यादा कीमती चीज होती है दृढ़ता और आत्म-विश्वास।

डॉक्टर—यह तो आप बिलकुल ठीक कहते हैं।

हूस्ताद—मैं तो इस अवसर पर कुछ कर दिखाना चाहता हूँ। वाटरवर्क्स वाले मामले में मैं अधिकारी वर्ग की सारी कलई खोलकर रख देना चाहता हूँ। मैं इनकी तरफ से प्रत्येक नागरिक को सतर्क करूँगा। जनता जो आँखें मूँदकर इनकी पूजा करती है, वह पूजा समाप्त कर दूँगा।

डॉक्टर—अच्छी बात है। अगर आप जनता के हित में ऐसा करना ठीक समझते हैं तो ऐसा ही कीजिये। मगर जब तक मैं अपने भाई से बातचीत न कर लूँ तब तक तो शांत ही रहिये।

हूस्ताद—तो फिर तै रहा। इस बीच में अपना सम्पादकीय लेख लिखे लेता हूँ। अगर प्रेसिडेंट ने कुछ खयाल न किया तब ?

डॉक्टर—मगर आप पहले ही से ऐसा क्यों सोच लेते हैं ?

हूस्ताद—डॉक्टर, यह तो बड़ी सीधी बात है।

डॉक्टर—तब मैं वादा करता हूँ। हाँ, देखिये, मैं अपना लेख देता हूँ। इसे आप अक्षरशः ज्यों-का-त्यों रखियेगा। बाद में इसे वापस कर दीजियेगा।

हूस्ताद—धन्यवाद ! मैं ऐसा ही करूँगा। और अब मैं जाता हूँ।

नमस्कार !

डॉक्टर—नमस्कार, नमस्कार ! देखिये, याद रखियेगा। सब काम सहूलियत से होना चाहिए।

हूस्ताद—हम लोग सब ठीक ही करेंगे।

(जाता है)

डॉक्टर—कत्रीन ! इधर आओ। अच्छा पेतरा, तुम स्कूल से लौट आईं ?

पेतरा—(भीतर आकर) हाँ पिता जी, मैं अभी चली आ रही हूँ।

मिसेज स्तोकमन—(भीतर आती हैं) वे अभी तक नहीं आये।

डॉक्टर—पेतरा ? नहीं तो। यह तो हूस्ताद से बातें हो रही थीं। मेरी खोज के सम्बन्ध में वह बहुत उत्साह दिखा रहे हैं। पहले तो मैंने उसे इतने महत्त्व की चीज नहीं समझा था। हूस्ताद ने अपने अखबार द्वारा मेरी पूरी मदद करने का वचन दिया है।

मिसेज स्तोकमन—तो क्या आपको अखबार की शरण लेनी पड़ेगी ?

डॉक्टर—नहीं, मैं तो यह न करूँगा। फिर भी स्वस्थ और स्वतंत्र दृष्टिकोण रखने वाले किसी अखबार का अपना समर्थक होना मामूली बात नहीं है। एक और बात है। यह तो तुम्हें पता ही होगा कि मिस्टर अस्लाकसन गृहस्थों के संघ के चेयरमैन हैं। वे भी अभी यहाँ आये थे।

मिसेज स्तोकमन—अच्छा, वे क्या कहते थे ?

डॉक्टर—वे यह कहने आये थे कि वे मुझे अपना पूरा सहयोग देंगे। कत्रीन, तुम्हें पता है कि मेरे पीछे क्या है ?

मिसेज स्तोकमन—तुम्हारे पीछे ? यही कहा न ? तुम्हारे पीछे क्या है, मैं नहीं जानती।

डॉक्टर—जनता का ठोस बहुमत !

मिसेज स्तोकमन—ओह ? डॉक्टर साहब, इससे आपको क्या फायदा होगा ?

डॉक्टर—यह बड़े फायदे की चीज है कत्रीन, परमात्मा का अनुग्रह है। ऐसी प्रीति और सद्‌भावना का अनुभव करके मुझे कैसा अपार आनन्द हो रहा है।

पेतरा—अधिक-से-अधिक जनों को लाभ देने वाला इतना अच्छा काम करने का भी कैसा आनन्द होता है, पिता जी!

डॉक्टर—और अपने नगर-वासियों के लिए यह सब करने का सन्तोष भी।

मिसेज स्तोकमन—यह किसी ने घंटी बजाई।

डॉक्टर—वही होंगे (दरवाजे की कुंडी की खड़खड़ाहट) आ जाइए न! (प्रेसिडेंट स्तोकमन भीतर आता है) नमस्ते!

डॉक्टर—पेतर, आपके आने की मुझे कितनी प्रसन्नता है।

मिसेज स्तोकमन—नमस्ते भाई जी, आप प्रसन्न तो हैं।

प्रेसिडेंट स्तोकमन—धन्यवाद, अच्छा हूँ। (डॉक्टर से) कल शाम दफ्तर से लौटने पर मुझे हम्माम के पानी के सम्बन्ध में आपका लिखा एक लेख मिला था।

डॉक्टर—जी हाँ, आपने उसे पढ़ तो लिया?

प्रेसिडेंट—मैंने पढ़ डाला।

डॉक्टर—क्या राय है?

प्रेसिडेंट—हुँः! (औरतों की तरफ देखता है)

मिसेज स्तोकमन—पेतरा, चलो चलें।

(दोनों चली जाती हैं)

प्रेसिडेंट—(कुछ देर चुप रहने के बाद) क्या मुझसे छिपाकर इस तरह जाँच-पड़ताल करनी बहुत जरूरी थी?

डॉक्टर—क्यों नहीं? जब तक स्वयं मैं निश्चित न हो लेता कैसे···?

प्रेसिडेंट—तो अब आप बिलकुल निश्चित हो चुके हैं?

डॉक्टर—अपने लेख में क्या मैंने कोई संदेह की बात कही है?

प्रेसिडेंट—क्या इस लेख को अपनी रिपोर्ट के रूप में डाइरेक्टरों के बोर्ड

के सामने प्रेषित करने का आपका इरादा है ?

डॉक्टर—जरूर। कुछ तो इस विषय में शीघ्र होना ही चाहिए।

प्रेसिडेंट—सदा की तरह इस बयान में भी आपने बड़ी कड़ी भाषा का प्रयोग किया है। आपके ये शब्द हैं, "हम अपने नगर में आने वाले यात्रियों को पानी के रूप में हल्का-हल्का जहर पिलाते रहते हैं !"

डॉक्टर—पेतर ! न्याय से कहो, क्या यह गलत है ? जरा सोचो तो। पीने के लिए आने वाला पानी जहरीला, और नहाने के लिए मिलने वाला पानी भी जहरीला ! सो भी उन लोगों को, जिनका रोग अभी-अभी छूटा है। जो हमारे विश्वास पर यहाँ स्वास्थ्य-सुधार के लिए आते हैं, और इस पानी के लिए अच्छी रकम चुकाते हैं।

प्रेसिडेंट—और अपने लेख के निचोड़ में आप यह कहते हैं कि मिल की गन्दगी को इकट्ठा करके अलग बहाने के लिए एक संडास बनाना चाहिए। सारा पाइप उखाड़कर नये सिरे से बैठाना चाहिए।

डॉक्टर—भाई मेरी समझ में दूसरा कोई रास्ता नहीं जान पड़ता। आपको कोई उपाय सूझता हो तो बताइये !

प्रेसिडेंट—आज सबेरे एक बहाने से मैं इंजीनियर के पास गया और आपके सुझावों के आधार पर यह कहकर उससे पूछ-ताछ की कि शायद भविष्य में कुछ इस तरह के फेर-बदल करने पड़ें।

डॉक्टर—शायद भविष्य में ?

प्रेसिडेंट—वह मेरी बात पर खूब ही हँसा। आपने क्या यह भी सोचने का कष्ट किया है कि आपके सुझावों के अनुसार काम करने में कितना धन लगेगा ? इंजीनियर ने जो कुछ बतलाया उससे यही जान पड़ा कि करीब तीन-चार लाख रुपये लगेंगे।

डॉक्टर—इतना अधिक खर्च पड़ेगा ?

प्रेसिडेंट—जी हाँ। परन्तु यही एक अड़चन नहीं है। सारा काम पूरा करने में कम-से-कम दो वर्ष का समय भी लगेगा।

डॉक्टर—दो साल ? पूरे दो साल ?

प्रेसिडेंट—कम-से-कम दो साल। फिर यह बतलाइये कि इस बीच हम्मामों का क्या होगा ? उन्हें तो बन्द रखना ही होगा। फिर जब यह बात चारों तरफ फैल जायगी कि यहाँ का पानी विषैला हो गया है तो कोई यात्री यहाँ क्यों आयगा ?

डॉक्टर—जो कुछ हो पेतर, बात जो है, वह है।

प्रेसिडेंट—और यह सारी छेड़-छाड़ आपने तब शुरू की जब यात्रियों के आने का सीजन ऐसे अच्छे ढंग से आरंभ हो ही रहा है। आप यह जानते हैं कि पास-पड़ोस के दूसरे नगर भी स्वास्थ्य-वर्धक स्थान बन जाने के लिए प्रयत्नशील हैं। ऐसी परिस्थिति में ये सभी यात्री उन नगरों की तरफ खिंच जायँगे और हमारा काम बीच में ही ठप्प हो जायगा। इस तरह तो हमारे नगर का होनहार भविष्य ही मिट्टी में मिल जायगा। और इस सबका यश आपको मिलेगा !

डॉक्टर—मैं हूँ नगर के होनहार भविष्य को मिट्टी में मिलाने वाला ?

प्रेसिडेंट—समझने की बात है कि हमारे नगर के भविष्य की सारी उज्ज्वलता इन्हीं हम्मामों के आसरे है। यह बात आप भी उतनी ही अच्छी तरह समझते हैं जितनी अच्छी तरह मैं।

डॉक्टर—मगर आप यह नहीं बतलाते हैं कि किया क्या जाना चाहिए ?

प्रेसिडेंट—असल में मेरे मन में यह बात पैठ नहीं पाती है कि हम्मामों का पानी वास्तव में वैसा खराब है जैसा आप उसे सिद्ध करना चाहते हैं।

डॉक्टर—मैं कहता हूँ कि आपका यह संदेह सरासर अन्यायपूर्ण है, आँखों में धूल झोंकने का प्रयास है। जितना खराब मैं कह रहा हूँ आप उससे भी अधिक खराब समझिये। गरमी के दिनों में

इसकी दशा और भी भयानक हो जायगी।

प्रेसिडेंट—मैं फिर कहता हूँ कि आप बात बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा करते हैं। एक योग्य डॉक्टर का कर्त्तव्य होता है कि वह रोग के भयंकर होने के पहले ही उसकी रोक-थाम का उपाय सोच रखे और जरूरत पड़ते ही उस उपाय से रोग दूर करने का प्रयत्न करे।

डॉक्टर—बेशक, फिर आप कहना क्या चाहते हैं ?

प्रेसिडेंट—यही कि हमारे हम्माम जिस दशा में हैं उसी में रहें। समय अनुकूल मिलने पर जब अधिकारी इस सम्बन्ध में विचार करेंगे तब वे अवश्य ही इन सुझावों की ओर ध्यान देंगे।

डॉक्टर—और आप समझते हैं कि कि मैं इस तरह के गैर ईमानदारी के कामों में आप लोगों का हाथ बटाऊँगा ?

प्रेसिडेंट—क्या कहा ? गैर ईमानदारी के काम ?

डॉक्टर—जी हाँ। मैं तो इसे सरासर बेईमानी समझता हूँ। जनता के प्रति, समाज के प्रति यह अक्षम्य अपराध होगा। धोखा, जाल और सोलहों आने मक्कारी होगी !

प्रेसिडेंट - और मैं भी साफ-साफ कहता हूँ कि मेरे मन में यह बात नहीं बैठी है कि सचमुच कोई खतरा उपस्थित हो गया है।

डॉक्टर—यह हो नहीं सकता कि आप नहीं समझते हैं। मेरे प्रमाण बिलकुल पक्के हैं। आप समझते सब-कुछ हैं, केवल स्वीकार नहीं करना चाहते। बात यह है कि आपने अपनी जिद से वाटर-वर्क्स और हम्माम की इमारतों को उसी जगह बनवा डाला और अपनी इस भयंकर गलती को आज आप स्वीकार नहीं करना चाहते। क्या आप समझते हैं कि मैं आपके इस रहस्य को ताड़ नहीं रहा हूँ ?

प्रेसिडेंट—तुम भले ही ताड़ा करो। मुझे इसकी परवाह नहीं है। नगर के हित के लिए मुझे अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा हर उपाय से

करनी ही होगी। यदि मेरी प्रतिष्ठा को धक्का लगा तो मैं समाज-सेवा के कार्यों का ठीक तरह से संपादन न कर सकूँगा। इस विचार से भी और कितने ही दूसरे कारणों से सर्वथा यही उचित है कि तुम्हारी यह रिपोर्ट बोर्ड के डाइरेक्टरों के सामने पेश न हो। समाज के हित की दृष्टि से इसे इस समय रोक रखना ही ठीक होगा। बाद में मैं स्वयं इस मामले को विचारार्थ पेश करूँगा और जो कुछ संभव होगा चुपचाप कर दिया जायगा। लेकिन इस समय इस मनहूस बात को एकदम दबा देना होगा। एक शब्द भी इसका जनता के कान में नहीं जाना चाहिए।

डॉक्टर—लेकिन पेतर, अब यह बात दबाई ही कैसे जा सकेगी ?

प्रेसिडेंट—जैसे भी हो, इसे तो दबाना ही पड़ेगा।

डॉक्टर—मैं कहता हूँ कि ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि कितने ही लोग इसे जान चुके हैं।

प्रेसिडेंट—जान चुके हैं ? कौन लोग ! 'पीपुल्स-मेसेंजर' वालों से तो तुमने नहीं कहा ?

डॉक्टर—जी हाँ। वे लोग जान चुके हैं।

प्रेसिडेंट—तुम कैसे आदमी हो, तोमस ! क्या तुमने यह तनिक भी नहीं सोचा कि इससे स्वयं तुम्हारा ही सर्वनाश हो सकता है ?

डॉक्टर—मेरा सर्वनाश ? सो कैसे ?

प्रेसिडेंट—तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का सर्वनाश।

डॉक्टर—शैतान ही समझे कि तुम क्या कह रहे हो ?

प्रेसिडेंट—मैं तो समझता हूँ कि जब-जब अवसर आया है मैंने तुम्हारी मदद ही की है।

डॉक्टर—आपने जरूर मदद की है और मैं इसके लिए आपका कृतज्ञ हूँ।

प्रेसिडेंट—कृतज्ञता की कोई बात नहीं। कुछ अंश तक मैंने अपनी ही ओर देखकर, एक प्रकार से बाध्य होकर तुम्हारी मदद की है।

डॉक्टर—अच्छा तो यह बात है ? आपने जो कुछ किया है, मेरे खयाल से नहीं, अपने खयाल से किया है ?

प्रेसिडेंट—मैंने कहा है, एक प्रकार से। सामाजिक जीवन वाले व्यक्ति के लिए वह भयावह स्थिति होती है यदि उसका कोई सगा-सम्बन्धी फटी हालत में रहे और रह-रहकर ऊट-पटाँग मामलों में उलझता फिरे।

डॉक्टर—और तुम समझते हो कि मैं इसी प्रकार का तुम्हारा एक सगा-सम्बन्धी हूँ ?

प्रेसिडेंट—मेरी तो यही धारणा है। तुम इस तरह की ऊट-पटाँग परिस्थिति में बिना समझे ही फँस जाते हो। चंचलता, उच्छृङ्खलता, और मनमानी करने की तुम्हारी पुरानी आदत है। उचित-अनुचित बात का विचार किये बिना ही झटपट अखबार में दौड़ पड़ने में तुम्हें एक विचित्र तरह का मजा आता है।

डॉक्टर—मैं तो प्रत्येक नागरिक का यह पवित्र कर्तव्य समझता हूँ जब भी उसके मस्तिष्क में कोई नवीन कल्पना आय वह पब्लिक तक उसे अवश्य पहुँचा दे।

प्रेसिडेंट—बेकार की बात है। पब्लिक को नवीन कल्पनाओं की तनिक भी आवश्यकता नहीं होती। पब्लिक का सारा जीवन उन पुरानी, मानी-जानी, थोड़ी सी कल्पनाओं के अनुसार ही बड़े मजे में शान्ति के साथ चलता रहता है।

डॉक्टर—तो आप अब अपने असल रंग में आये हैं ?

प्रेसिडेंट—हाँ, मैं एक बार तुमसे खुलकर बातें कर लेना चाहता था। अब तक मैंने तुमसे कभी दो-टूक बातें नहीं कीं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम कैसे तुनुक मिजाज हो। पर अब मैं सच-सच कह डालने के लिए बिलकुल बाध्य हो गया हूँ। तोमस, तुमको कभी भी इस बात का आभास नहीं होता कि तुम अपने उतावले स्वभाव के कारण अपना कितना अहित कर लेते हो। तुम

अधिकारियों की, सरकार की, सभी की निंदा किया करते हो; पर कहते यह हो कि लोग तुम्हारी अवहेलना करते हैं। तुम-जैसे सरासर अनुपयुक्त आदमी के साथ दूसरे प्रकार का व्यवहार किया ही कैसे जा सकता है ?

डॉक्टर—ओह, सच कहते हैं आप। तो मैं अनुपयुक्त आदमी हूँ।

प्रेसिडेंट—हाँ तोमस, साथ काम करने के लिए तुम बिलकुल अनुपयुक्त हो। तुममें मुरौवत बिलकुल नहीं है। तुम्हें इस बात का जरा भी खयाल नहीं कि हम्माम की हेल्थ-अफसरी का पद तुम्हें मेरी मदद से मिला है।

डॉक्टर—मैं यह नहीं मानता। न्यायतः यह पद मुझको मिलना ही था। अपने इस नगर में हम्माम खोलने की सबसे पहले मेरी ही कल्पना हुई और बरसों तक मैंने इस कल्पना का जनता में प्रचार किया।

प्रेसिडेंट—यह तो ठीक है, पर तब यहाँ हुआ ही क्या था ? जिस समय इस योजना का आरम्भ हुआ और मैंने यह काम अपने हाथों में लिया, उस समय यदि मैंने तुम्हारे लिए प्रयत्न न किया होता तो आज इस पद पर न जाने कौन होता ?

डॉक्टर—जी हाँ। आपने हमारा खूब खयाल किया। हमारी उस योजना को अपने हाथों में लेकर सोने से मिट्टी कर डाला ! मैं अब यह साफ-साफ देख चुका कि तुम और तुम्हारे गुट वाले किस तरह के लोग हैं।

प्रेसिडेंट—पर मैं जो साफ-साफ देख रहा हूँ वह यह है कि तुम फिर से कुराह पर जाने के लिए एक बहाना ढूँढ रहे हो। अपने से बड़े लोगों पर वार करने की तुम्हारी बड़ी पुरानी आदत है। तुम अपने ऊपर किसी भी आदमी का अधिकार सहन नहीं कर सकते। अपने से ऊँचे पद वाले को तुम न जाने क्यों अपना दुश्मन समझने लगते हो और अच्छे-बुरे सब प्रकार के उपायों

से तुम उस पर हमला आरम्भ कर देते हो। अब मैंने तुम्हें अच्छी तरह समझा दिया। तुम्हारा यह खेल सारे नगर के लिए और विशेषतः मेरे लिए बड़ा खतरनाक है। इसलिए तोमस, सतर्क हो जाओ। जैसा मैं कहता हूँ वैसा करना ही होगा। इसी में सबका कल्याण है।

डॉक्टर—मुझे करना ही होगा ! मुझे क्या करना होगा ?

प्रेसिडेंट—जो मामला इतना नाजुक था, जिसकी चर्चा कान में भी किसी से न होनी चाहिए थी, उसे तुमने न जाने कितनों में बाँट दिया। इसलिए अब यह दबाया नहीं जा सकता। यह निश्चित है कि लोग नमक-मिर्च लगाकर तुम्हारे नाम पर तरह-तरह की बातों का प्रचार करेंगे। इसलिए तुम्हें साफ शब्दों में इन अफवाहों का खंडन करना पड़ेगा।

डॉक्टर—मैं खंडन करूँ ? किस तरह से ? मेरी समझ में नहीं आया।

प्रेसिडेंट—तुम्हें एक वक्तव्य निकालना होगा। उसमें तुम कहोगे कि तुमने इस मामले पर बहुत ध्यान से विचार किया है और यह तुम्हारा निश्चित मत है कि यह मामला पहले जितना भयंकर समझा गया था उतना भयंकर है नहीं।

डॉक्टर—ओह हो ! तो आप मुझसे यह काम कराना चाहते हैं ?

प्रेसिडेंट—इतना ही नहीं, और भी। तुम्हें बोर्ड के डाइरेक्टरों के प्रति पूर्ण विश्वास प्रकट करना होगा। यह कहना होगा कि डाइरेक्टर लोग बड़ी गंभीरता और तत्परता से इस मामले पर विचार कर रहे हैं और अगर त्रुटियाँ हुईं तो वे दूर की जायँगी।

डॉक्टर—यह तो ठीक है, पेतर ! पर मुझे यकीन नहीं है कि तुम लोग त्रुटियाँ दूर करने के लिए कभी राजी होगे।

प्रेसिडेंट—तोमस, तुम्हें ऐसा अविश्वास करने का कोई अधिकार नहीं है।

डॉक्टर—अधिकार नहीं है ?

प्रेसिडेंट—नहीं है। व्यक्तिगत तौर पर तुम्हें सब-कुछ अधिकार भले ही हो पर सरकारी तौर पर तुम्हें अपने अधिकारियों पर इस प्रकार अविश्वास करने की तनिक भी स्वतंत्रता नहीं है।

डॉक्टर—बस, बस। यह मेरे लिए एकदम असह्य है। हेल्थ-अफसर होते हुए भी, साइन्स का आदमी होते हुए भी, नागरिकों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में मुझे सच बात कहने का कोई अधिकार ही नहीं है? यह बड़ी असम्भव बात है।

प्रेसिडेंट—यह कोरा साइन्स का मामला नहीं है। इसका आर्थिक दृष्टि-कोण ही प्रमुख है।

डॉक्टर—हुँः। मेरे लिए वह दृष्टिकोण कुछ महत्त्व नहीं रखता। मैं किसी का बँधुआ नहीं रह सकता। मेरे जो भी निश्चित विचार होंगे उन्हें प्रकट करने की मेरी स्वतन्त्रता कोई छीन नहीं सकता।

प्रेसिडेंट—हम्माम के विषय को छोड़कर तुम जिस सम्बन्ध में जो चाहो कह सकते हो। बस हम्माम के सम्बन्ध में हम मना करते हैं कि तुम कुछ भी न कहो।

डॉक्टर—(चिल्लाकर) तुम मना करने वाले होते कौन हो? तुम! तुम लोग···

प्रेसिडेंट—मैं मना करता हूँ। मैं तुम्हारा अफसर तुमको मना करता हूँ। तुमको मेरी आज्ञा माननी होगी।

डाक्टर—(अपना आवेश रोकता है) पेतर, मगर तुम मेरे भाई न होते तो मैं कसम खाकर कहता हूँ कि···

पेतरा—(दरवाजा खोल देती है) पिताजी, आपको इस तरह नहीं दबाना होगा!

मिसेज स्तोकमन—पेतरा! पेतरा!!

प्रेसिडेंट—तो क्या हमारी बातें सुनी जा रही थीं?

मिसेज स्तोकमन—भाई जी, इसमें हमारा कोई कसूर नहीं। कमरों को

डॉक्टर—मेरा परिवार केवल मुझे देखता है, और अपने नगर की जितनी चिन्ता मुझे है उतनी अन्य किसी को भी नहीं। इसीलिए मैं अपने नगर-निवासियों को उस खतरे की सूचना दे देना चाहता हूँ जिसका उन्हें शीघ्र ही सामना करना है।

प्रेसिडेंट—वह आदमी, जो अपनी जिद के कारण नगर-निवासियों की आमदनी के जरिये को ही नष्ट कर देने पर तुला हो, नगर का हितैषी कभी नहीं कहा जा सकता।

डॉक्टर—आमदनी का यह जरिया जहर का प्याला है। तुम पागल हो गए हो क्या? इस प्रकार के नीच व्यवसाय से धन कमाकर क्या सचमुच हमारा नगर सम्पन्न हो सकेगा? धन की ऐसी कमाई से पला हुआ हमारा सामाजिक जीवन और नगर का साज-बाज विष का वह पौधा होगा जो फैल जाने पर सदियों तक हमारे नगर को और हमारे देश ही को नीचता और दुराचार का केन्द्र बनाये रखेगा।

प्रेसिडेंट—यह सब सनक की बातें हैं। जो आदमी जनता को इस तरह की क्षति पहुँचाने का कारण बन सकता हो वह देश का प्रेमी नहीं, देश-भर का दुश्मन है!

डॉक्टर—(उसकी तरफ आवेश में बढ़ जाता है) तुम्हारी हिम्मत मुझे देश-भर का···

मिसेज स्तोकमन— (झपटकर बीच में खड़ी हो जाती है) यह क्या है डाक्टर?

पेतरा—(डॉक्टर का हाथ पकड़कर) शान्त होइये पिताजी!

प्रेसिडेंट—अब मैं यहाँ ऐसे स्वागत के लिए और नहीं रुक सकता। मैंने चेतावनी दे दी। अपने और अपने कुटुम्ब के प्रति तुम्हारा जो कर्तव्य हो उस पर विचार करना। नमस्कार!

(जाता है)

डॉक्टर—(इधर-उधर टहलता हुआ) कमीन! मुझे यह सब सहना

पड़ेगा। अपने ही घर के भीतर। क्यों ?

मिसेज स्तोकमन—सचमुच बड़े शर्म की बात है।

पेतरा—चाचाजी को ऐसा नहीं चाहिए था।

डॉक्टर—यह मेरा ही कसूर है बेटी, मुझे इन मक्कारों को बहुत पहले ही फटकार देना चाहिए था। उसने मुझे 'देश-भर का दुशमन' कह डाला। ओह ! देश-भर का दुश्मन मैं हूँ ? यह बात मेरे कलेजे में तीर-जैसी धँस गई है। मेरे लिए यह असह्य है।

मिसेज स्तोकमन—क्या करें तोमस ? हमें यह सब सहना पड़ रहा है। आज तुम्हारे भाई के हाथ में अधिकार है।

डॉक्टर—पर कत्रीन ! मेरे हाथ में भी सत्य है।

मिसेज स्तोकमन—हाँ, सत्य तो है, पर सत्य का क्या फायदा जब शस्त्र नहीं है ?

पेतरा—ओह माँ ! तुम इस तरह की बात कह रही हो ?

डॉक्टर—क्या सत्य कुछ भी नहीं है, कत्रीन ? एक स्वाधीन समाज में सत्य का अपने पक्ष में होना महत्त्व ही नहीं रखता ? कत्रीन ! मैं तो सत्य का पुजारी हूँ। फिर जनता का अखबार और ठोस बहुमत भी मेरा समर्थन कर रहे हैं। क्या यह कमजोर शस्त्र है ?

मिसेज स्तोकमन—तोमस, क्या तुम अपने ही भाई के विरुद्ध कमर कस रहे हो ?

डॉक्टर—मेरी समझ में नहीं आता कि तुम ऐसा क्यों रही हो ? सत्य और न्याय को छोड़कर कहो तुम मुझसे और किसका समर्थन कराना चाहती हो ?

पेतरा—यही मैं भी जानना चाहती हूँ।

मिसेज स्तोकमन—इस सबसे फायदा ही क्या है ? यदि वे लोग नहीं सुनना चाहते तो नहीं सुनेंगे।

डॉक्टर—अजी तुम्हें क्या पता ? जरा देखती चलो। मैं भी अपनी

लड़ाई लड़ना जानता हूँ।

मिसेज स्तोकमन—हाँ, यह तो मैं जानती हूँ। आप लड़ेंगे और खूब लड़ेंगे। और तब तक लड़ेंगे जब तक नौकरी से हाथ न धो बैठेंगे।

डॉक्टर—जैसा तुम कहती हो शायद वैसा ही हो। पर वे यह भी देख लेंगे कि जिसे वे देश-भर का दुश्मन कहते हैं, उसने क्षति उठाकर भी जनता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर दिया।

मिसेज स्तोकमन—पर अपने कुटुम्ब के लोगों के प्रति भी तो कुछ कर्तव्य होता है।

पेतरा—माँ, हर बात में तुम हम लोगों को ही क्यों ऊपर रखती हो?

मिसेज स्तोकमन—मेरी पेतरा ऐसा कह सकती है, क्योंकि बुरे दिन आने पर भी भगवान् ने उसे अपने पैरों खड़ी रह सकने के लायक रखा है। पर तोमस, छोटे बच्चों का तो खयाल करो। कुछ अपने लिए और मेरे लिए भी तो सोचो।

डॉक्टर—कत्रीन, तुम्हारी मति अवश्य मारी गई है। क्या तुम यह चाहती हो कि मैं अत्यन्त अधम कायर हो जाऊँ और पेतर तथा उसके नीच साथियों के आगे माथा टेक दूँ? ऐसा करने के बाद क्या मेरे जीवन में मेरे लिए सुख का एक भी पल शेष रह जायगा?

मिसेज स्तोकमन—इस सम्बन्ध में मैं क्या कहूँ? ईश्वर हमारे सुखों की रखवारी करे। नहीं तो फिर हमारे वे पिछले दिन आ जायँगे जब कि हमारा कहीं कोई ठिकाना न था। तोमस, जीवन में हम कितनी ठोकरें खा चुके हैं। इसे हम भूल नहीं सकते। जरा सोचो तो सही। इस सबका क्या परिणाम होने वाला है?

डॉक्टर—(विचलित होता और हथेली मलता है) कितनी दारुण बात है कत्रीन, ऊँची-ऊँची कुर्सियों पर बैठे ये चिड़ी के गुलाम एक बे-लौस और ईमानदार आदमी के ऊपर विपत्तियों का ऐसा

पहाड़ ढहा सकते हैं ।

मिसेज स्तोकमन——यह तो सच है । ये लोग तुम्हारे साथ बड़ी नीचता का व्यवहार कर रहे हैं । किन्तु परमात्मा जाने, मनुष्य को इस संसार में कितने असंख्य अन्यायों के सामने आँख मूँदकर झुकना पड़ता है । ये तुम्हारे बच्चे हैं, तोमस ! जरा आँख उठाकर इन्हें देखो तो । इनकी कैसी दुर्दशा होने वाली है । ओह, यह नहीं हो सकता । तुम इतने निठुर नहीं हो सकते ।

(एलिफ और मोर्तन उसी समय स्कूल से घर लौटते हैं)

डॉक्टर——ये हमारे बेटे ! (सहसा अत्यन्त दृढ़ होकर) कभी नहीं, कदापि नहीं । चाहे सारा संसार ही मिट जाय, मैं पेतर के जुए में अपनी गरदन नहीं डाल सकता ।

(चुपचाप स्वाध्याय वाले कमरे की तरफ जाता है)

मिसेज स्तोकमन——(उसके पीछे लगी जाती है) बताओ तोमस, तुम क्या करोगे ?

डॉक्टर——(दरवाजे पर ही रुककर) लड़के जब सयाने और समझदार हो जायँगे उस समय मैं उनकी तरफ आँख उठाकर देख सकने के लायक बना रहूँ । कत्रीन, मैं यही करूँगा ।

मिसेज स्तोकमन——(रो पड़ती है) आह ! परमात्मन् तुम्हीं हमारे बच्चों के रक्षक हो !

पेतरा——पिता जी सच्चे पथ पर हैं, माँ वे कभी पीछे पैर न रखेंगे ।

(एलिफ और मोर्तन कुछ न समझ पाने के कारण बड़े उत्सुक से दिखाई पड़ते हैं । पेतरा उन्हें चुप रहने के लिए संकेत करती है ।)

तीसरा अंक

['पीपुल्स-मेसेंजर' का दफ्तर। संपादक का कमरा। कमरे के मध्य में एक बड़ा टेबुल, जिन पर पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ अस्त-व्यस्त पड़ी हैं। कोने में एक डैस्क और उसके सामने एक बड़ा सा स्टूल। दीवाल से सटी चार-पाँच कुर्सियाँ। कुर्सियों और कमरे की अन्य वस्तुओं से उदासी प्रकट है। छपाई के कमरे में एक हैंड प्रेस है और वहीं एक कोने में एक-दो कम्पोजीटर काम कर रहे हैं।]

(हूस्ताद बैठा हुआ डैस्क के सहारे कुछ लिख रहा है। बिलिंग डॉक्टर स्तोकमन का लेख हाथ में लिये उसके पास आता है)

बिलिंग--गजब कर दिया है!

हूस्ताद--तुमने पूरा पढ़ लिया?

बिलिंग--(डैस्क पर लेख रखकर) अवश्य।

हूस्ताद--डॉक्टर का लेख तगड़ा है कि नहीं?

बिलिंग--अपने सिर की कसम, तगड़ा क्या लोहे के घन-सा चकनाचूर कर देने वाला है।

हूस्ताद--मगर ये कम्बख्त पहले ही वार में चूर न होंगे।

बिलिंग--यह तो सच है। मगर हम लोग कब चुप रहेंगे। एक के बाद दूसरी ऐसी ही चोट तब तक करते रहेंगे जब तक कि इन ताना-शाहों का ताना-बाना रेशे-रेशे करके उड़ नहीं जायगा। जिस समय मैं यह लेख पढ़ रहा था, मुझे ऐसा लग रहा था मानो क्रांति की गड़गड़ाहट मुझे कुछ ही दूरी पर सुनाई दे रही हो!

हूस्ताद--(उसकी तरफ गरदन मोड़कर) चुप, चुप! धीरे-धीरे बोलो। कहीं अस्लाकसन सुनता न हो।

बिलिंग--(धीरे स्वर मे) अस्लाकसन ? सफेद खून वाला, बुजदिल आदमी। खबरदार इस मामले में उसकी न चलने पाय। डॉक्टर का यह लेख छपेगा न ?

हूस्ताद--डॉक्टर से मिलने पर अगर प्रेसिडेंट रास्ते पर न आया तो अवश्य छपेगा।

बिलिंग—तब तो बड़ा गुल खिलेगा।

हूस्ताद--यह तो है ही। जो भी हो, अपन हर हालत में मजे में रहेंगे। अगर प्रेसिडेंट हमारे डॉक्टर के सुझाव मानने को राजी न हुआ तो गृहस्थों के संघ के सदस्य और निम्न मध्य श्रेणी के लोग उसके विरोधी हो जायँगे। और अगर वह राजी हो गया तो हम्माम-कम्पनी के हिस्सेदार, जो उसके पक्के समर्थक हैं, उससे फूट जायँगे।

बिलिंग—अपने सिर की कसम, जरूर फूट जायँगे, क्योंकि उन्हें बहुत सा रुपया जुटाना पड़ेगा।

हूस्ताद—फिर ज्यों ही उनमें फूट पड़ी, हम रात-दिन जनता के कान में यही भरेंगे कि प्रेसिडेंट बड़ा नालायक आदमी है, और नगर-पालिका का सारा प्रबंध उदार दल वालों के हाथ में आना चाहिए।

बिलिंग--अपने सिर की कसम यही सच्ची बात है। बस हमें तो यही दिखाई दे रहा है कि अब हम क्रांति के द्वार पर पहुँच ही गए हैं।

(दरवाजे पर खड़खड़ाहट)

हूस्ताद--बिलिंग चुपचाप रहो। आइये न, कौन है ?

(डॉक्टर स्तोकमन आता है)

हूस्ताद--(उसके समीप जाता है) वाह, वाह ! डॉक्टर साहब, आप आ गए।

र --छाप डालिये उसे मिस्टर हूस्ताद !

हूस्ताद--अच्छा तो यह होकर ही रहा ?

बिलिंग—वाह ! वाह !! वाह !!!

डॉक्टर---बस आप छाप डालिये। यही होकर रहा। जैसा वे चाहते हैं वैसा ही उन्हें दिया जाय। मिस्टर बिलिंग, लड़ाई अब छिड़ गई।

बिलिंग—कुछ परवाह नहीं, डॉक्टर साहब ! खून-पसीना एक कर दिया जायगा।

डॉक्टर—यह लेख तो बस पहली पकड़ है। मैंने चार-पाँच लेखों की एक लेख-माला ही प्रकाशित करने की ठान ली है। यह तो बतलाइये कि अस्लाकसन का कमरा किधर है ?

बिलिंग—(छपाई वाले कमरे की तरफ जाता है) अस्लाकसन ! जरा एक पल के लिए यहाँ तो आ जाइए।

हूस्ताद—क्या कहा आपने डॉक्टर साहब ? चार-पाँच लेख आप और देंगे ? इसी सम्बन्ध में ?

डॉक्टर—यह नहीं मित्र, उन लेखों का विषय बिलकुल भिन्न होगा। मगर होंगे वे सब वाटर-वर्क्स और सफाई के ही सम्बन्ध में ही। एक का विषय दूसरे से जुड़ा होगा।

बिलिंग—अपने सिर की कसम, यह बहुत ठीक होगा। यह तय है कि आप तब तक पीछा न छोड़ेंगे जब तक कि इस धाँधली का अन्त न हो जायगा।

अस्लाकसन—(आता है) जब तक अन्त न हो जायगा। किसका अन्त न हो जायगा ? हम्माम का ही अंत तो नहीं करना है ?

हूस्ताद—ऐसी कोई बात नहीं है। घबराइये नहीं, मिस्टर अस्लाकसन !

डॉक्टर--बिलकुल नहीं। हम लोग दूसरी बात कर रहे थे। खैर, मेरे लेख के विषय में आपका क्या विचार है, मिस्टर हूस्ताद ?

हूस्ताद—आपका लेख ? बेशक यह उच्चकोटि का लेख है।

डॉक्टर--ऐसा ? मैं सचमुच प्रसन्न हूँ कि आपके ऐसे विचार हैं। मैं

बहुत प्रसन्न हूँ, मिस्टर हूस्ताद !

हूस्ताद—एक-एक वाक्य स्पष्ट और गंभीर है। कम पढ़े-लिखे लोग भी आपका लेख आसानी से समझ लेंगे। मुझे विश्वास है कि सभी समझदार नागरिक आपका समर्थन करेंगे। कल वाले अंक में आपका लेख जायगा।

डॉक्टर—बहुत ठीक है। मिस्टर अस्लाकसन, मैं चाहता हूँ कि मेरे लेख की छपाई में आप विशेष दिलचस्पी लें।

अस्लाकसन—ऐसा ही होगा, डॉक्टर साहब !

डॉक्टर—इस लेख का एक-एक शब्द महत्त्व रखता है। इसलिए छापे की कोई गलती न होने पाय। मैं एक बार फिर आऊँगा। शायद तब तक आप प्रूफ तैयार कर रखें। आप समझ सकते हैं कि मैं इस लेख को छपा देखने के लिए कितना उत्सुक हूँ। कितनी लालसा मुझे इस सम्बन्ध में नागरिकों का निर्णय जानने की है। आप लोगों को क्या पता कि आज मुझे कितना सुनना और सहना पड़ा है। मुझे तरह-तरह की धमकियाँ दी गई हैं। मुझसे मनुष्यों के सामान्य अधिकार तक छीन लिये जाने का प्रयत्न किया गया है।

बिलिंग—क्या ? मनुष्यता के सामान्य अधिकारों पर आक्रमण ? यह कैसी बात ?

डॉक्टर—मुझसे कहा गया कि मैं घुटने टेक दूँ। नहीं तो मुझे धूल फाँकनी पड़ेगी। अपने निश्चित विचारों और पवित्र सिद्धांतों को लात मारकर व्यक्तिगत लाभ और हानि की विशेष चिन्ता करने की सलाह भी दी गई।

बिलिंग—अपने सिर की कसम, यह तो बड़ी गन्दी बात हुई।

हूस्ताद—उन लोगों से आप और आशा ही क्या कर सकते हैं ?

डॉक्टर—पर उन्हें भी इसका मजा चखना पड़ेगा। मैं 'पीपुल्स मेसेंजर' के द्वारा उनसे प्रतिदिन भेंट करूँगा। मैं उन पर लेख के गोले

एक के बाद दूसरा बराबर दागता रहूँगा।

अस्लाकसन—सो तो है, मगर देखिये…

बिलिंग—हुर्रे, हुर्रे ! लड़ाई का बिगुल बजा दिया है।

डॉक्टर—मैं उन्हें मिट्टी में मिला दूँगा, मसल दूँगा, जनता की निगाह में उनका जो गढ़ है उसे ढहाकर जमीन के बराबर कर दूँगा ! मै यह सब करूँगा।

अस्लाकसन—पर सबके ऊपर उदारता और नम्रता, डॉक्टर साहब !

बिलिंग—हरगिज नहीं। बिलकुल नहीं। गोला-बारूद खर्च करना ही होगा।

डॉक्टर—अब केवल वाटर-वर्क्स और संडास का ही मामला नहीं रहा। अब तो समूचे समाज की गंदगी दूर करनी है।

बिलिंग—आशा का यही महान् संदेश है !

डॉक्टर—पुराने ढोंगियों को एकदम निकाल बाहर करना है। हर महकमे को शुद्ध करना है और उन सबकी जगह नये खून और नये विचार वाले युवकों को स्थापित करना है।

बिलिंग—वाह ! वाह !! वाह !!!

डॉक्टर—बस हम लोग संगठित रहें, सारी क्रांति बड़ी शांति से, बड़ी सरलता से सफल हो जायगी। क्यों भाई, क्या राय है ?

हूस्ताद—मुझे पूरा विश्वास है। हमारी म्युनिसिपैलिटी को अब योग्य हाथों में गया ही समझिये !

अस्लाकसन—हमारा भी विश्वास है कि अगर हम थोड़ा नरम होकर बढ़े तो हमारे रास्ते में कोई खतरा न आयगा।

डॉक्टर—खतरे की हमको परवाह नहीं है। मुझे परवाह है केवल सत्य की, केवल अन्तरात्मा की।

हूस्ताद—हर हालत में आपका समर्थन करना हमारा कर्तव्य है।

अस्लाकसन—इसमें क्या संदेह है ? डॉक्टर हमारे नगर के सच्चे हितैषी हैं। ये नगर के सच्चे दोस्त हैं।

बिलिंग– अपने सिर की कसम, अस्लाकसन ! हमारे डॉक्टर देश के सच्चे दोस्त हैं।

अस्लाकसन—मुझे विश्वास है कि गृहस्थों का संघ शीघ्र ही इस आशय की प्रस्तावना करेगा।

डॉक्टर—(प्रेम से उससे हाथ मिलाकर) धन्यवाद, साथियो, धन्यवाद ! आपके ये उद्‌गार मुझे सच्चा आनन्द देते हैं। मेरे भाई ने मुझे कुछ दूसरी ही उपाधियाँ दी हैं। कुछ परवाह नहीं। जो कुछ उन्होंने मुझे दिया है मैं वह सब उन्हें व्याज सहित लौटा दूँगा। इस समय आप मुझे जाने की अनुमति दीजिये। एक रोगी को देखने निकला था। कुछ देर में फिर आऊँगा। बस लेख कम्पोज कराना शुरू कर ही दीजिये ! नमस्कार !

(आपस में नमस्कार-नमस्ते होती है। डॉक्टर बाहर जाता है)

हूस्ताद- यह आदमी हमारे लिए बड़ा कीमती सिद्ध होगा।

अस्लाकसन—केवल तभी तक जब तक हम्माम का मामला छिड़ा है। अगर उसके आगे बढ़े तो हमारा इनके साथ रहना ठीक न होगा।

हूस्ताद—देखा जायगा।

बिलिंग—तुम हमेशा न जाने कैसी कायरता दिखाया करते हो, मिस्टर अस्लाकसन !

अस्लाकसन—हाँ मिस्टर बिलिंग, अपने नगर के अधिकारियों पर हमला करने के लिए अवश्य मुझमें साहस नहीं है। अनुभव की पाठ-शाला में मैंने संकोच का सबक सीखा है। आप यह याद रखिये। जरा ऊँची पौलिटिक्स पर आइये तब देखिये कि अस्लाकसन कायर है या नहीं।

बिलिंग—यही तो बात है। आप कायर नहीं हैं। मगर फिर भी हैं। अजीब विरोधाभास है !

अस्लाकसन—भाई, असल बात यह है कि मुझे अपनी जिम्मेदारियों का

विशेष ध्यान रहता है। मेरे विचार में अगर आप सरकार पर आघात करते हैं तो उससे समाज में उतनी कटुता नहीं फैलती, क्योंकि जिन अफसरों पर कटाक्ष होता है वे इसकी कोई परवाह नहीं करते। पर आपके आघात से स्थानीय कार्य-कर्ताओं में उथल-पुथल पैदा हो सकती है और उनको हटाकर उनकी जगह अयोग्य आदमी बैठ सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में बहुत अधिक विषमता फैलने की संभावना रहती है।

हूस्ताद—लेकिन स्वयं अपना शासन चलाने से जनता को एक प्रकार की शिक्षा भी मिलती है। यह भी तो आप ही का कहना है।

अस्लाकसन—पर एक विशेष संस्था की सार-सँभार का भार जिस आदमी के ऊपर हो वह सब तरफ नहीं देख सकता।

हूस्ताद—क्षमा कीजियेगा, मिस्टर अस्लाकसन, 'पीपुल्स मेसेंजर' या दूसरा कोई स्वार्थ मेरी निगाह में ऐसा नहीं है जैसा आप कहते हैं।

अस्लाकसन—(मुस्कराता है और हूस्ताद के डैस्क की तरफ संकेत करता है) मिस्टर हूस्ताद, आपके पहले सम्पादक की इसी कुर्सी पर मिस्टर स्तेन्सगोर्द भी बैठ चुके हैं।

बिलिंग—बस रहने दीजिये। यहाँ रँगे सियारों की चर्चा न कीजिये।

हूस्ताद—मिस्टर अस्लाकसन, हम हवा के रुख पर घूमने वाली कोई कागजी चिड़िया नहीं हैं!

अस्लाकसन—मिस्टर हूस्ताद, राजनीति का खिलाड़ी किसी बात का पक्का भरोसा नहीं करता। और मिस्टर बिलिंग, आपको एक या अधिक-से-अधिक दो स्टूलों पर ही पैर रखना चाहिए। क्या आप म्युनिसिपल काउंसिल के मंत्री की जगह के लिए उम्मीदवार नहीं हैं?

हूस्ताद—क्या यह सच है मिस्टर बिलिंग?

बिलिंग—हाँ। तो? मैंने तो सिर्फ उन गंदे, अक्ल के दुश्मनों को

खिझाने के लिए ही एक चाल चल दी है।

अस्लाकसन—खैर, यह हमारा मामला नहीं है। मुझ पर जो कायरता का आरोप लगाया गया है उसका जवाब यह है कि मेरा राजनीतिक जीवन दर्पण की तरह स्वच्छ है। पैंतरा बदलना मुझे नहीं आता। हाँ, एक बात जरूर है कि मेरी नीति आप लोगों की नीति से कुछ अधिक उदार है। मेरा हृदय जनता का ही है, पर मेरा माथा स्थानीय अधिकारियों से समझ-बूझकर चलने की सलाह देता रहता है।

(छपाई वाले कमरे में लौट जाता है)

बिलिंग—मिस्टर हूस्ताद, क्या राय है ? क्या इस आदमी को किसी तरह अलग नहीं रखा जा सकता ?

हूस्ताद—पैसे से मदद करने वाला कोई दूसरा आदमी निगाह में आता भी तो नहीं।

बिलिंग—अपने सिर की कसम, यह बड़ी खराब बात है। अपने पास कोई पूँजी नहीं है।

हूस्ताद—(डैस्क के पास बैठकर) हाँ, अगर थोड़ा पैसा होता तो··

बिलिंग—आप डॉक्टर स्तोकमन से कहें तो कैसा है ?

हूस्ताद—(कागज उलटता-पुलटता हुआ) इस कहने से फायदा क्या ? उसके पास एक कौड़ी नहीं है।

बिलिंग—लेकिन एक मालदार का उसे सहारा है। वही मोर्तन चील जिसे लोग 'बैजर' कहते हैं।

हूस्ताद—आप ठीक जानते हैं कि वह मालदार है ?

बिलिंग—अपने सिर की कसम वह बड़ा पैसे वाला है। उसके धन का एक हिस्सा डॉक्टर स्तोकमन के परिवार को मिलने वाला है। कम-से-कम डॉक्टर के बच्चों को तो वह कुछ धन देगा ही।

हूस्ताद—यह तो व्यर्थ की आशा है। और काउंसिल के मंत्री का पद

पाने की आपकी आशा भी व्यर्थ है। वह स्थान आपको मिलने का नहीं।

बिलिंग—तो क्या मैं इतना भी नहीं समझता। मैं तो केवल उनका इन्कार सुनना चाहता हूँ। इससे विरोध करने की भावना तीव्र होती रहेगी। इस नगर में जहाँ कोई अच्छी प्रेरणा नहीं मिलती प्रतिकार की तीव्र भावना भी अपना महत्त्व रखती है।

हूस्ताद—हाँ, हाँ, यह तो ठीक है।

बिलिंग—मैं जाता हूँ। गृहस्थों के संघ के लिए एक अपील लिखे डालता हूँ।

(दूसरे कमरे में जाता है)

हूस्ताद—(अपना कलम दाँत से दबाकर कुछ सोचता है तब तक द्वार पर खड़खड़ाहट) आइये न! कौन है?

(पेतरा आती है)

हूस्ताद—(खड़ा हो जाता है) अच्छा आप, ओहो! बैठिये न!

पेतरा—नहीं, धन्यवाद। मुझे शीघ्र ही वापस होना है। मैं यह अंगरेजी का उपन्यास लौटाने आई थी।

हूस्ताद—आप इसे वापस क्यों करती है?

पेतरा—मैं इसका अनुवाद न कर सकूँगी।

(किताब टेबुल पर रख देती है)

हूस्ताद—क्यों, क्या बात है!

पेतरा—बात यह है कि इस किताब में एक ऐसी अलौकिक शक्ति का वर्णन है जो तथाकथित बड़े लोगों की रक्षा करती है और केवल उन्हीं को समस्त अच्छी चीजों का अधिकारी समझती है। बाकी सब लोग दंड के पात्र होते हैं और उन्हें दुःख तथा कष्ट भोगना आवश्यक है।

हूस्ताद—तब तो यह अच्छी किताब नहीं है। लेकिन ऐसे विषयों को हमारे पत्र के ग्राहक बहुत पसंद करते हैं।

पेतरा—तो क्या आप जनता को इस तरह का गंदा साहित्य देना उचित समझते हैं ! आप स्वयं तो इस तरह की बातों पर विश्वास नहीं करते। फिर यह कैसी बात !

हूस्ताद—यह सच है। परन्तु संपादक का जीवन ही अजीब होता है। वह सदा अपनी इच्छा के ही अनुसार नहीं चलता। उसे छोटी-मोटी बातों में कभी-कभी जनता की अच्छी वृत्ति के सामने झुकना भी पड़ता है। जीवन में राजनीति का प्रधान स्थान है—कम-से-कम अखबार के संपादक के लिए। सो अगर हम चाहते हैं कि जनता हमारे साथ-साथ स्वतंत्र विचारों की ओर बढ़ती रहे तो यह जरूरी हो जाता है कि हम उसके मन में अपने अखबार के प्रति चिहुँकन पैदा करें। कभी-कभी एकाध नैकतिकता के लेख पढ़ते रहने से जनता क्रान्ति के विचारों को भी विश्वास के साथ पढ़ती और हजम कर लेती है।

पेतरा - यह तो पाठकों के लिए मकड़ी का जाला बुनना हुआ। आप क्या कोई मक्कार मकड़ा हैं मिस्टर हूस्ताद ?

हूस्ताद—(मुसकराता है) इस सुन्दर मत के लिए आपको धन्यवाद ! मगर यह विचार मेरा नहीं मिस्टर बिलिंग का है।

पेतरा—बिलिंग का ?

हूस्ताद—जी हाँ। दो दिन हुए वे कुछ इसी आशय की बातें कर रहे थे। असल में बिलिंग ही इस उपन्यास को पत्र में छापने के लिए उत्सुक हैं। मैंने तो इसे पढ़ा भी नहीं है।

पेतरा—मगर बिलिंग तो प्रगतिशील विचार वाले बनते हैं।

हूस्ताद—जी हाँ। वास्तव में बिलिंग कई पहलू वाले आदमी हैं। मालूम हुआ है कि उन्होंने म्युनिसिपल काउंसिल के मंत्री की जगह के लिए दरखास भी दे रखी है।

पेतरा—मुझे विश्वास नहीं होता, मिस्टर हूस्ताद !

हूस्ताद—यह तो आप उनसे ही पूछ सकती हैं।

पेतरा—कम-से-कम मिस्टर बिलिंग के सम्बन्ध में मैं कभी ऐसी कल्पना नहीं कर सकती थी।

हूस्ताद—आपको इतना आश्चर्य नहीं होना चाहिए। कुमारी पेतरा, हम पत्रकार कुछ अधिक भले आदमी नहीं होते।

पेतरा—क्या आप यह बात हृदय से कह रहे हैं ?

हूस्ताद—अपने लोगों के सम्बन्ध में मुझे प्रायः ऐसा ही देखने में आता है।

पेतरा—छोटी-छोटी बातों में मुझे प्रायः ऐसा ही हो। पर मिस्टर हूस्ताद इस समय आप लोगों ने एक बड़े सिद्धान्त की बात उठाई है।

हूस्ताद—कौन सी बात ? यही आपके पिता वाली बात न ?

पेतरा—जी हाँ। इस काम में आपको अपने पत्रकार भाइयों से ऊपर उठकर कुछ कर दिखाना होगा।

हूस्ताद—अवश्य, अवश्य। आज मैं भी कुछ इसी प्रकार सोच रहा था।

पेतरा—आपको ऐसा सोचना ही चाहिए। कितने गौरव का जीवन आपने अपने लिए चुना है। अज्ञात और अस्वीकृत सत्य को पहचानना, नवीन और तेजपूर्ण विचारों की प्रस्तावना करना और अपमानित व्यक्ति को सहारा देने का साहस दिखलाना साधारण कार्य नहीं होते।

हूस्ताद—और विशेष यह कि जब अपमानित व्यक्ति सज्जन और ईमानदार हो।

हूस्ताद—(धीरे से) जबकि वह आपका पिता हो !

पेतरा—यह बात ?

हूस्ताद—हाँ पेतरा, कुमारी पेतरा !

पेतरा—अच्छा तो यह मालूम हुआ। इस सारी उछल-कूद में आपका मन्तव्य कुछ और ही रहा है ? सिद्धान्त नहीं, सत्य नहीं, पिता जी का उदार और महान् व्यक्तित्व भी नहीं ?

हूस्ताद—क्यों नहीं ? यह सब ही हमारा ध्येय है।

पेतरा—नहीं, कदापि नहीं। धन्यवाद, आपकी इस घनिष्ठता के लिए। आपने अपना भरम खो दिया, मिस्टर हूस्ताद, विश्वास मानिये, अब किसी भी बात के लिए आपका भरोसा नहीं किया जा सकता।

हूस्ताद—मिस पेतरा, क्या आप मेरे ऊपर इतनी निष्ठुरता इसलिए कर कर रही हैं कि मैंने आप ही के खयाल से ··

पेतरा—मिस्टर हूस्ताद, मेरी निगाह में आप इसलिए दोषी हैं कि आपने पिता जी के साथ अशुद्ध व्यवहार किया है। आप उनसे बराबर यही कहते हैं कि आप उनका साथ न्याय और समाज के हित के लिए दे रहे हैं। किन्तु आपने पिता जी का और मेरा दोनों का असम्मान किया है। मालूम हो गया कि आप जैसे सुपुरुष बन रहे थे वैसे हैं नहीं। मैं यह बात कभी न भूल सकूँगी। कभी नहीं।

हूस्ताद—मिस पेतरा, आपको यह सब ऐसे कठोर ढंग से नहीं कहना चाहिए। विशेषतः वर्तमान परिस्थिति में।

पेतरा—किस परिस्थिति में ?

हूस्ताद—जब कि आपके पिता मेरी सहायता पर आश्रित हैं।

पेतरा—(घृणा की दृष्टि से उसे देखती है) तो अब आप अपने असल रंग में प्रकट हुए हैं। धिक्कार है।

हूस्ताद—मेरा मतलब यह नहीं है, कुमारी पेतरा ! मैं कुछ बे-समझे ऐसा कह गया। आप इसे भूल जाइए।

पेतरा—मुझे क्या भूलना चाहिए और क्या नहीं भूलना चाहिए यह मैं अच्छी तरह जानती हूँ, मिस्टर हूस्ताद !

(अस्लाकसन आ जाता है)

अस्लाकसन—आफत है मिस्टर हूस्ताद ! (पेतरा को देखता है) ओह ! कुछ भी नहीं।

पेतरा—यह अपनी किताब रखिये। किसी और से अनुवाद करा लीजियेगा।

(चल देती है)

हूस्ताद—(उसके पीछे-पीछे) लेकिन मिस पेतरा ··

पेतरा—नमस्कार !

(चली जाती है)

अस्लाकसन—मिस्टर हूस्ताद !

हूस्ताद—जी हाँ, कहिये न, क्या है ?

अस्लाकसन—प्रेसिडेंट स्तोकमन यहाँ आ पहुँचे हैं ! छपाई वाले कमरे में हैं। पिछवाड़े वाले दरवाजे से आये हैं। वह आपसे मिलना चाहते हैं। समझा आपने ?

हूस्ताद—इसका मतलब क्या है ? ठहरिये। मैं स्वयं लिवा लाता हूँ।

(जाता है और प्रेसिडेंट को साथ लाता है)

हूस्ताद—(अस्लाकसन से) देखिये, मिस्टर अस्लाकसन, जरा नजर रखियेगा। कोई भी···

अस्लाकसन—हाँ, ठीक। मैं समझ रहा हूँ।

(अस्लाकसन छपाई वाले कमरे में जाता है)

प्रेसिडेंट—मिस्टर हूस्ताद, यह तो आप सोच न सकते होंगे कि इस समय मैं आपके यहाँ आ रहा हूँ।

हूस्ताद—कैसे कहूँ कि यह सोच ही रहा था ?

प्रेसिडेंट—(इधर-उधर नजर दौड़ाता है) आपका यह स्थान बहुत अच्छा और सुहावना है।

हूस्ताद—ओह !

प्रेसिडेंट—मैं तो बिना आपकी आज्ञा लिये ही यहाँ आ गया। आपका कितना अमूल्य समय ले रहा हूँ।

हूस्ताद—हमें आपका आगमन बहुत शुभ है श्रीमान्, हम लोग तो सेवक हैं। आज्ञा दीजिये। लाइये टोपी और छड़ी दीजिये। रख दूँ।

कृपया बैठ तो जाइये !

(छड़ी और टोपी लेकर कुर्सी पर बैठ जाता है)

प्रेसिडेंट—(बैठ जाता है) धन्यवाद, मिस्टर हूस्ताद, मैं आज बहुत चिन्तित हो रहा हूँ।

हूस्ताद—क्या बात है, प्रेसिडेंट जी ?

प्रेसिडेंट—डॉक्टर ने मुझे कितना परेशान कर रखा है।

हूस्ताद—अच्छा, डॉक्टर ने ?

प्रेसिडेंट—यह डॉक्टर हम्माम के पानी के सम्बन्ध में बढ़ा-चढ़ाकर कितनी ही त्रुटियाँ बतलाते हैं और हम्माम बोर्ड के डाइरेक्टरों पास लम्बा-चौड़ा स्मृति-पत्र भेज रहे हैं।

हूस्ताद—सचमुच ?

प्रेसिडेंट—हाँ, सचमुच। क्या उन्होंने इस विषय में आपसे कुछ भी नहीं कहा है ?

हूस्ताद—हाँ, कुछ-कुछ तो याद आ रहा है। एक बार कुछ कह रहे थे।

अस्लाकसन—(छपाई वाले कमरे से निकलता है) ओह, मुझे वह लेख दीजिये।

हूस्ताद—(कुछ रुखाई से) देख लीजिये, यहीं कहीं पड़ा होगा।

अस्लाकसन—(डेस्क पर से लेख उठाकर) धन्यवाद !

प्रेसिडेंट—क्या यही लेख है ?

अस्लाकसन—जी, यही डॉक्टर स्तोकमन का लेख है।

हूस्ताद—क्या आप इसी के विषय में कह रहे थे ?

प्रेसिडेंट—जी बिलकुल इसी के विषय में। कैसा है यह लेख ?

हूस्ताद—मैं तो कोई विशेषज्ञ नहीं हूँ और मैंने अभी सरसरी तौर से ही देखा है।

प्रेसिडेंट—फिर भी आप इसे छापने जा रहे हैं ?

हूस्ताद—नाम देकर भेजे हुए लेखों को मैं रोक भी कैसे सकता हूँ, प्रेसिडेंट जी ?

अस्लाकसन—प्रेसिडेंट महोदय, मेरा तो बस छापने का काम है। सम्पादन में मेरा कोई हाथ नहीं रहता।

प्रेसिडेंट—हाँ, यह तो मैं जानता हूँ।

अस्लाकसन—जो कुछ मेरे हाथ में रख दिया जाता है उसे छाप डालना मेरा काम है।

प्रेसिडेंट—हाँ, हाँ, । यह तो है ही।

अस्लाकसन—इसलिए मैं मजबूर हूँ।

(जाना चाहता है।)

प्रेसिडेंट—जरा ठहरिये मिस्टर अस्लाकसन, अगर आपकी अनुमति हो मिस्टर हूस्ताद !

हूस्ताद—जी हाँ, जी हाँ !

प्रेसिडेंट—मिस्टर अस्लाकसन आप एक समझ-बूझ वाले सुलझे प्राणी हैं।

अस्लाकसन—मुझे बड़ी प्रसन्नता है प्रेसिडेंट महोदय, जो मेरे विषय में आपका ऐसा विचार है।

प्रेसिडेंट—और लोगों पर आपका प्रभाव भी बहुत है।

अस्लाकसन—जी हाँ, खासकर निम्न-मध्य वर्ग के लोगों पर।

प्रेसिडेंट—और अपने नगर में मामूली कर देने वाले ये ही लोग अधिक हैं भी।

अस्लाकसन—जी हाँ, यही बात है।

प्रेसिडेंट—और मुझे विश्वास है कि आप उनकी भावनाओं को भली-भाँति जानते भी हैं।

अस्लाकसन—जी हाँ, प्रेसिडेंट महोदय !

प्रेसिडेंट—बेशक यह कितने गौरव की बात है कि हमारे नगर के इन निर्धन व्यक्तियों में अपने सुख का बलिदान देने की इतनी प्रबल भावना है।

अस्लाकसन—सो कैसे, महाशय ?

हूस्ताद—अपने सुख का बलिदान ?

प्रेसिडेंट—इसमें क्या सन्देह ? समाज-बोध की ऐसी भावना बेशक सराहनीय है। मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि मुझे ऐसी आशा कभी न थी। पर आपको तो इसका पता रहा ही होगा ?

अस्लाकसन—आप यह कह क्या रहे हैं, प्रेसिडेंट महोदय ?

प्रेसिडेंट—यही कि डॉक्टर स्तोकमन के सुझावों के अनुसार पाइप उखाड़ने और नये सिरे से बैठाने में करीब तीन-चार लाख रुपये लगेंगे और इसके लिए हमें नागरिकों से कर के रूप में उधार लेना पड़ेगा।

हूस्ताद—(उठकर खड़ा हो जाता है) क्या आप नागरिकों से···?

अस्लाकसन—तो आप बेचारे इन निम्न-मध्य वर्ग के लोगों की गरदन नापेंगे ?

प्रेसिडेंट—प्रिय महाशय, फिर आप कहाँ से इतने रुपयों का प्रबन्ध करेंगे ?

अस्लाकसन—यह तो हम्माम के शेयर-होल्डरों को सोचना चाहिए।

प्रेसिडेंट—शेयर-होल्डर तो अब एक पैसा भी और लगाने को राजी नहीं हैं।

अस्लाकसन—प्रेसिडेंट महोदय, क्या आप यह पक्की बात कह रहे हैं ?

प्रेसिडेंट—यह मैं आपको बिलकुल निश्चित रूप से कह रहा हूँ। इसलिए जो यह नया खर्च पड़ने वाला है इसका सारा बोझ नगर-निवासियों को ही ढोना पड़ेगा।

अस्लाकसन—तेरा सत्यानाश हो ! क्षमा कीजियेगा, प्रेसिडेंट महोदय, यह तो एक नई ही परिस्थिति है। मिस्टर हूस्ताद ?

हूस्ताद—बिलकुल नई परिस्थिति है।

प्रेसिडेंट—इतना ही नहीं, जब तक मरम्मत चलेगी तब तक के लिए हम्माम बन्द भी रखने पड़ेंगे।

हूस्ताद—एकदम बन्द रखने पड़ेंगे ?

अस्लाकसन—पूरे दो साल तक !

प्रेसिडेंट—जी हाँ, यह सब करने में कम-से-कम दो साल तो लगेंगे ही।

अस्लाकसन—तेरा सत्यानाश हो ! प्रेसिडेंट महोदय, यह तो बड़ा कठिन होगा। हम गृहस्थों की रोजी फिर कैसे चलेगी ?

प्रेसिडेंट—मैं क्या बताऊँ, मिस्टर अस्लाकसन ? आप ही कहिये कि क्या किया जाय ? यहाँ आने वाले यात्रियों को यदि यह वहम करा दिया जाय कि वाटर-वर्क्स का पानी विषैला हो गया है और इसी कारण उसकी मरम्मत होने जा रही है तो क्या आप समझते हैं कि कोई भी यात्री यहाँ आयगा ?

अस्लाकसन—मैं तो समझता हूँ कुछ नहीं है। बस, यह सब कोरा वहम ही है।

प्रेसिडेंट—मैं तो हजारों प्रयत्न करके भी अपने भाई के मन में यह न बैठा सका, कि यह उसका कोरा वहम है।

अस्लाकसन—तब तो यह डॉक्टर स्टोकमन की सरासर ज्यादती है।

प्रेसिडेंट—सच बात यही है जो आप कह रहे हैं, मिस्टर अस्लाकसन ! दुर्भाग्यवश इस प्रकार की जल्दबाजी करने का सदा से हमारे भाई का स्वभाव ही है।

अस्लाकसन—ऐसे आदमी का साथ देना आप सोच रहे थे मिस्टर हूस्ताद !

हूस्ताद—यह किसको मालूम था कि ··

प्रेसिडेंट—वास्तविक स्थिति का उल्लेख करते हुए मैंने एक छोटा सा वक्तव्य तैयार किया है और उसमें यह स्पष्ट कह दिया है कि जो भी सुधार आवश्यक होंगे हम्माम-बोर्ड उन पर पूरा-पूरा ध्यान देगा।

हूस्ताद—क्या वह वक्तव्य आप साथ लाये हैं, प्रेसिडेंट जी ?

प्रेसिडेंट—(अपनी जेब टटोलता है) जी हाँ, मैं उसे इसीलिए लेता आया हूँ कि शायद आप ··

अस्लाकसन—(जल्दी-जल्दी) तेरा सत्यानाश हो ! लो वह भी आ धमके !

प्रेसिडेंट--कौन ? मेरा भाई ?

हूस्ताद --कहाँ, कहाँ ?

अस्लाकसन—छपाई वाले कमरे से होते हुए इधर ही आ रहे हैं।

प्रेसिडेंट—यह तो भारी घोटाला हुआ। मैं उनसे यहाँ बात नहीं करना चाहता। पर आप लोगों से अभी कई जरूरी बातें करनी हैं।

हूस्ताद—(दाहिनी ओर के दरवाजे से संकेत करता है) आप वहाँ चले जाइए !

प्रेसिडेंट—लेकिन···

हूस्ताद—मिस्टर बिलिंग वहाँ हैं।

अस्लाकसन--जल्दी कीजिए प्रेसिडेंट महोदय, वह आने ही वाले हैं।

प्रेसिडेंट--(धीरे से) कृपया उन्हें जल्दी ही निपटा दीजियेगा।

(प्रेसिडेंट दाहिनी ओर के दरवाजे में जाता है और अस्लाकसन उसे बंद करता है)

हूस्ताद—अस्लाकसन, ऐसा रंग बनाओ जिससे पता लगे कि हम लोग बहुत व्यस्त हैं।

(हूस्ताद सिर झुकाकर लिखने लगता है। अस्लाकसन एक कुर्सी पर पड़े अखबारों को उलट-पुलट रहा है)

डॉक्टर—यह लो जी, मैं तो हो आया !

(अपनी छड़ी और हैट एक कुर्सी पर रख देता है। हूस्ताद लिखता ही जा रहा है)

हूस्ताद—(गरदन नीची ही किये हुए) इतनी जल्दी, डॉक्टर साहब ? देखिये मिस्टर अस्लाकसन, अभी जो हमने कहा था जरा जल्दी कर दीजिये। आज तो दम मारने की भी फुरसत नहीं है।

डॉक्टर—प्रूफ तो अभी तक तैयार न होगा।

अस्लाकसन—(वैसे ही मुँह दूसरी ओर किये हुए) जी नहीं। अभी

तैयार नहीं हैं।

डॉक्टर—अच्छा तो मैं फिर आ जाऊँगा। जरूरत हुई तो दो बार और आ जाऊँगा। आप समझ सकते हैं कि इसे छपा देखने के लिए मैं कितना उत्सुक हूँ।

हूस्ताद—मिस्टर अस्लाकसन, क्या प्रूफ तैयार होने में अभी कुछ अधिक समय लगेगा ?

अस्लाकसन—हाँ, अभी तो देर है।

डॉक्टर—बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, मेरे मित्रो, मैं दोबारा आ जाऊँगा।

(जाना ही चाहता है पर रुकता है और मुड़कर)

डॉक्टर—हाँ, एक बहुत जरूरी बात है। उसे बता देना चाहता हूँ।

हूस्ताद—क्षमा करेंगे, डॉक्टर साहब, कोई दूसरा समय नहीं ठीक होगा ?

डॉक्टर—मैं दो शब्दों में समाप्त किये देता हूँ। देखिये बात यह है कि मेरे नगर-निवासी जब कल सवेरे मेरा लेख अखबार में पढ़-पढ़-कर यह सोचेंगे कि मैं चुपचाप जाड़े-भर उनके हित की चिन्ता में कैसा परिश्रम करता रहा हूँ उस समय···

हूस्ताद—यह तो ठीक है मगर डॉक्टर साहब···

डॉक्टर—मैं जानता हूँ कि आप आगे क्या कहना चाहते हैं। पर जो सच बात है उसे आप भी जानते ही हैं। मैंने यह जो कुछ किया है केवल अपने कर्तव्य की प्रेरणा से ही। यह दूसरी बात है कि बेचारे मेरे प्यारे नगर-निवासी मेरे विषय में ऐसी अच्छी धारणा रखते हैं।

अस्लाकसन—हाँ डॉक्टर साहब, नगर के लोग आपके सम्बन्ध में आज तक तो अच्छी ही धारणा रखते आए हैं।

डॉक्टर—यही तो बात है। इसीलिए तो मैं यह कह देना चाहता हूँ कि जब मेरे विचार तक पहुँचे और वे नगर का सारा प्रबंध अपने हाथों में ले लेने के लिए प्रोत्साहित हों तो ··

हूस्ताद—क्षमा कीजिये डॉक्टर स्तोकमन, मैं आपसे कुछ छिपाना नहीं चाहता···

डॉक्टर—आ हा ! मुझे सन्देह हो ही रहा था कि कुछ भीतर-ही-भीतर चल रहा है। मगर मिस्टर हूस्ताद आपको यह रोकना ही पड़ेगा। मैं नहीं चाहता कि मेरे नगर-निवासी मेरे प्रेम के कारण मेरे लिए कोई ··

हूस्ताद—आपके लिए क्या ?

डॉक्टर—यही झंडों के साथ कोई जुलूस, या कोई मान-पत्र या कोई दावत, या ऐसा ही दूसरा कोई स्वागत करना चाहें तो आप उसे रोकने की जरूर कोशिश करेंगे। आप वचन दीजिए कि आप उसे रोक देंगे। मिस्टर अस्लाकसन आप भी वादा कीजिये !

हूस्ताद—क्षमा कीजये, डॉक्टर साहब, पहिल हम आपसे सच्ची बात कह डालें।

(मिसेज स्तोकमन आती हैं)

मिसेज स्तोकमन—मेरा अनुमान ठीक निकला।

हूस्ताद—(मिसेज स्तोकमन के पास जाकर) अच्छा, आप भी आ गईं ?

डॉक्टर—कत्रीन, यह कौन सी आफत है जो तुम भी यहाँ आ पहुँची हो ?

मिसेज स्तोकमन—आप समझते हैं मैं यहाँ क्यों आई हूँ ?

हूस्ताद—आप कृपा करके बैठ तो जाइये।

मिसेज स्तोकमन—धन्यवाद ! आप कष्ट न कीजिये और न मेरे यहाँ आने से बुरा ही मानिये। आप लोगों को यह भूलना न चाहिए। कि मेरे तीन बच्चे हैं।

डॉक्टर—यह कौन सा बात करने का तरीका है ? यह किसे नहीं मालूम है ?

मिसेज स्तोकमन—यह सबको भले ही मालूम हो, पर यह बिलकुल साफ है कि आज आप अपने बाल-बच्चों को बिलकुल भूल रहे हैं। नहीं तो हम सबको एक-साथ ही इस प्रकार मुसीबत में

डाल देने के लिए आप कभी तैयार न होते।

डॉक्टर—तुम एकदम पागल तो नहीं हो गई हो कत्रीन! क्या बाल-बच्चों वाले आदमी को सत्य का घोष वर्जित है? अपने नगर के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करना क्या गुनाह है?

मिसेज स्तोकमन—हर काम के करने का एक ढंग होता है, तोमस!

अस्लाकसन—बिलकुल ठीक। यही तो मैं भी कहता हूँ। हर काम में नम्रता की नीति बरती जानी चाहिए।

मिसेज स्तोकमन—मिस्टर हूस्ताद, मेरे पति को हम लोगों से जुदा करके और उन्हें बेवकूफ बनाकर आप हमारे साथ भारी अन्याय कर रहे हैं।

हूस्ताद—मैंने किसी को बेवकूफ नहीं बनाया है।

डॉक्टर—क्या तुम समझती हो कि लोग मुझे बेवकूफ बनाये जा सकते हैं?

मिसेज स्तोकमन—जी हाँ। मैं मानती हूँ कि इस नगर में आप सबसे अधिक प्रतिभावान व्यक्ति हैं, फिर आपको लोग आसानी से बेवकूफ बना लेते हैं। मिस्टर हूस्ताद आपको मालूम होना चाहिए कि अगर आपने डॉक्टर का लेख अपने अखबार में छापा तो इनकी नौकरी चली जायगी।

अस्लाकसन—क्या?

हूस्ताद—डॉक्टर स्तोकमन क्या यह सच है?

डॉक्टर—(हँसता है) हा हा! करें वे ऐसा, अगर करना चाहते हैं। एक नहीं बीसों बार उन्हें सोचना पड़ेगा। मेरे पीछे ठोस बहुमत है।

मिसेज स्तोकमन—यही तो बड़े भारी दुर्भाग्य की बात है कि तुम्हारे पीछे ऐसी बेहूदा चीज है।

डॉक्टर—फिजूल बात कत्रीन, तुम घर जाओ और अपनी गृहस्थी सँभालो। समाज का काम मुझे देखने दो। समझ में नहीं

आता कि मुझे इस प्रकार प्रसन्न और अविचल देखकर भी तुम्हें ऐसी घबराहट क्यों हो रही है ? (टहलने लगता है) सत्य की और जनता की सदा विजय होती है। इस बात का तुम्हें पक्का विश्वास होना चाहिए। (एक कुर्सी के पास रुककर और उसी तरफ ध्यान से देखता हुआ) ओ हो ! यह क्या बला है ?

अस्लाकसन—हे भगवान् !

हूस्ताद—(घबराकर) उफ् !

डॉक्टर—वाह भई, वाह ! यह तो बड़े अफसर की ध्वजा—पताका है।

(प्रेसिडेंट की टोपी और बेंत हाथ में ले लेता है)

मिसेज स्तोकमन - यह तो भाई जी की टोपी है।

डॉक्टर—हाँ ! मगर ये चीजें यहाँ आई कैसे ?

हूस्ताद—जी हाँ, यह तो···

डॉक्टर—ठीक तो है। मैं समझ गया। वह यहाँ आये ही होंगे कि आप लोगों से कुछ बातें करें तब तक जो मुझे देखा तो सटक गए ! क्यों मिस्टर अस्लाकसन ? जनाब को पता नहीं कि यहाँ उनकी दाल नहीं गलेगी।

अस्लाकसन—यही बात है डॉक्टर साहब, पत्ता तोड़ भाग गए।

डॉक्टर—(हँसता है) भाग खड़ा हुआ, बगटुट, और बेचारा यह छड़ी और अपनी नुमाइशी टोपी यहीं भूलता गया। मगर एक बात है। पेतर अपनी चीज यों कभी नहीं भूलता। जरूर यहीं कहीं छिपा होगा। वहाँ, उस तरफ ? क्यों ? जरूर वहीं होगा। अब देखो तमाशा, कत्रीन !

मिसेज स्तोकमन—डॉक्टर, मैं मना करती हूँ।

अस्लाकसन—यह ठीक नहीं है डॉक्टर !

(डॉक्टर स्तोकमन प्रेसिडेंट वाली टोपी अपने सिर पर रखता है और छड़ी हाथ में लेकर दरवाजे के पास जाता है। धक्का देकर उसे खोल देता है। दरवाजा खुलते ही प्रेसिडेंट को फौजी ढंग से सलाम करता

है। प्रेसिडेंट गुस्से में लाल कमरे से बाहर आता है। उसके पीछे बिलिंग आता है।)

प्रेसिडेंट—इस मजाक का क्या मतलब है ?

डॉक्टर—इज्जत करो इस टोपी की पेतर ! अब इस नगर की शक्ति मैं हूँ।

(बड़े रौब से इधर-उधर टहलता है।)

मिसेज स्तोकमन—(बड़ी उलझन में) यह क्या कर रहे हो, तोमस ?

प्रेसिडेंट—(उसके पीछे-पीछे चलता है) मेरी टोपी और छड़ी वापस दो।

डॉक्टर—तुम पुलिस के प्रधान भले ही बने रहो, पर म्युनिसपल कार्उसिल का प्रेसिडेंट मैं हूँ। सारे नगर का रक्षक अब मैं हूँ। समझा ?

प्रेसिडेंट—मेरी टोपी अपने सिर से उतारो। मैं कहता हूँ। याद रखो यह सरकारी टोपी है। कानून की चीज है।

डॉक्टर—यह भी एक ही कही। क्या तुम समझते हो कि प्रजातन्त्र का जगा हुआ सिंह इस सलमे-सितारे वाली टोपी को देखकर डर जायगा ? देखना, कल सारे नगर में क्रान्ति की ज्वाला उठ खड़ी होगी। तुमने मुझे बरखास्त करने की धमकी दी, लेकिन मैं तुम्हें बरखास्त करूँगा। तुम्हारे सारे अधिकार छीन लूँगा। तुम समझते हो मैं ऐसा न कर सकूँगा ? मैं कहता हूँ मैं ऐसा कर सकूँगा। समाज की अमोघ शक्ति मेरे पास है। जब हूस्ताद और बिलिंग 'पीपुल्स मेसेंजर' द्वारा गरजेंगे और अस्लाकसन गृहस्थों के संघ को लेकर मैदान में उतरेंगे तब तुम्हें पता चल जायगा।

अस्लाकसन—मैं तो इस झमेले में न पड़ूँगा डॉक्टर साहब !

डॉक्टर—तुम्हें तो पड़ना ही होगा। तुम्हारे बिना काम कैसे चलेगा ?

प्रेसिडेंट—हाँ, हाँ। शायद मिस्टर हूस्ताद तुम्हारी सेना में भरती होना चाहें।

हूस्ताद—नहीं प्रेसिडेंट जी, मुझसे भी यह सब न होगा।

अस्लाकसन – नहीं साहब, मिस्टर हूस्ताद ऐसे मूर्ख नहीं हैं कि अपने और अपने पत्र को एक वहम के पीछे बरबाद कर दें।

डॉक्टर – (हूस्ताद की तरफ ध्यान से देखता है)—यह सब मामला क्या है ?

हूस्ताद — डॉक्टर, आपने अपना मामला एक नकली रंग चढ़ाकर हमारे सामने रखा था। इसलिए अब हम आपका साथ देने में असमर्थ हैं।

बिलिंग—अपने सिर की कसम, प्रेसिडेंट महोदय ने बड़ी कृपा करके सारी बातें मुझे समझा दीं तो अब मैं भी···

डॉक्टर—क्या कहा, नकली रंग चढ़ाकर ? महाशय उसकी जिम्मेदारी तो मेरे ऊपर है। आप तो बस मेरा लेख छाप दीजिये। देखिये मैं एक-एक बात साबित करके दिखाता हूँ कि नहीं।

हूस्ताद—महाशय मुझे न तो छापने की हिम्मत है, न छाप सकता हूँ, और न छापूँगा ही।

डॉक्टर—हिम्मत नहीं है ? यह कैसी बात ? आप तो सम्पादक हैं। फिर सम्पादक लेख छापना चाहे तो दूसरा कौन रोकने वाला है ?

अस्लाकसन — सम्पादक ही पत्र नहीं होता डॉक्टर, वास्तव में पत्र होता है उसके ग्राहक।

बिलिंग—यह बात बिलकुल ठीक है।

अस्लाकसन—समझदार नागरिक, मध्यवर्ग के गृहस्थ और समाज-भावना रखने वाली जनता जो जनमत बनाती है उसी के सहारे अखबार चलते हैं। सम्पादक या प्रकाशक अखबार नहीं चला सकता।

डॉक्टर—तो आप समझते हैं कि ये सब हमारे खिलाफ हैं ?

अस्लाकसन – हाँ, हैं। हम यह समझ चुके हैं। अगर आपका लेख छप गया तो नगर को भारी क्षति पहुँचेगी।

डॉक्टर—अच्छा ?

प्रेसिडेंट – कृपया मेरी टोपी और घड़ी…।

(डाक्टर सिर पर से टोपी उतारकर टेबुल पर रखता है। वहीं छड़ी भी रख देता है। प्रेसिडेंट उन्हें उठा लेता है।)

प्रेसिडेंट—आपका अधिकार कुछ क्षणों में ही समाप्त हो गया, डॉक्टर !

डॉक्टर – समाप्ति अभी कहाँ है, महाशय, अभी तो आरम्भ भी नहीं हो पाया है। (हूस्ताद से) तो यह सम्भव नहीं कि मेरा लेख 'मेसेंजर' में छप सके ?

हूस्ताद – इसका छपना बिलकुल असंभव है। आपके परिवार का खयाल तो रखना ही होगा।

मिसेज स्तोकमन—मिस्टर हूस्ताद, परिवार को इसमें क्यों सानते हैं ?

प्रेसिडेंट (जेब से एक लिफाफा निकालता है)—जब मेरा यह वक्तव्य 'मेसेंजर' में कल छप जायगा तो जनता को हर बात की ठीक-ठीक जानकारी हो जायगी। हूस्ताद (लिफाफा लेकर) इसे अवश्य छाप देंगे, प्रेसिडेंट जी !

डॉक्टर – और मेरा न छपेगा ? मिस्टर हूस्ताद, आप समझते है कि आप मेरी और सत्य दोनों की हत्या अपने मौन रहने के षड्यंत्र द्वारा कर सकते हैं ? याद रखिये यह काम उतना आसान नहीं है जितना आप समझते हैं। मिस्टर अस्लाकसन, क्या आप कृपा करके मेरे लेख की पाँच सौ प्रतियाँ एक पुस्तिका के रूप में छाप देंगे ? मैं छपाई का दाम अभी पेशगी दे दूंगा।

अस्लाकसन—नहीं डॉक्टर साहब, अगर आप कागज के वजन के बराबर भी नोटों की गड्डी देना चाहें तो भी नहीं। मैं जनमत के विरुद्ध कोई काम कर नहीं सकता। शायद नगर का कोई भी प्रेस छापने को तैयार न हो।

डॉक्टर—तब कृपया उसे लौटा दीजिये !

हूस्ताद—(लौटा देता है) यह लीजिये !

डॉक्टर (हैट और छड़ी उठाता है) — मैं तो इसे जनता तक पहुँचाकर ही दम लूंगा। जनता की भीड़ जुटाऊँगा, और यह लेख पढ़-पढ़-कर लोगों को सुनाऊँगा। मेरे नगर वासी सत्य की गूँज से वंचित न रहने पायँगे।

प्रेसिडेंट—नगर की कोई भी संस्था ऐसे काम के लिए आपको अपना हॉल ही न देगी।

अस्लाकसन— मैं भी यही समझता हूँ।

बिलिंग—अपने सिर की कसम जो कहीं कोई हॉल मिले।

मिसेज स्तोकमन — यह तो बड़े शर्म की बात होगी। (डॉक्टर से) क्या बात है डॉक्टर साहब, जो ये सब लोग इस तरह आपके विरोध के लिए कमर कसकर तैयार हो गए हैं ?

डॉक्टर—(कुछ क्रोध में)—मैं तुम्हें बतलाऊँगा कत्रीन ! बात यह है कि इस नगर में सभी लोग तुम्हारी ही-जैसी बूढ़ी औरतें हैं। ये सब केवल अपने कुटुम्ब का ध्यान रखते हैं। जनता के हित की इन्हें कोई चिन्ता नहीं।

मिसेज स्तोकमन (डॉक्टर की बाँह पकड़ती है) — कुछ परवाह नहीं तोमस ! इन्हें मैं दिखाऊँगी कि एक बूढ़ी औरत भी समय आने पर मर्द बन सकती है। अब तक मैं तुम्हारे पीछे-पीछे रहूँगी।

डॉक्टर—शाबाश ! अब हमें कौन रोक सकेगा ? सत्य प्रकट होकर ही रहेगा। अगर ये लोग मुझे कोई हॉल न मिलने देंगे तो मैं भाड़े पर एक नगाड़ा लूंगा और उसके पीछे-पीछे सड़क के नुक्कड़ों पर भीड़ के सामने अपना लेख पढ़ता हुआ चलूँगा।

प्रेसिडेंट—जो सरासर पागल होगा वही यह करेगा।

डॉक्टर—मैं किस पागल से कम हूँ, पेतर ?

अस्लाकसन—नगर का एक भी आदमी तुम्हारे जुलूस के साथ न जायगा।

बिलिग—अपने सिर की कसम जो कोई भी साथ जाय।

मिसेज स्तोकमन—तोमस, चिन्ता मत करो। हमारे दोनों बेटे आपके साथ जायँगे !

डॉक्टर—यह तो बहुत खूब होगा।

मिसेज स्तोकमन—मोर्तन तो बहुत खुश होगा। एलिफ भी साथ जायगा।

डाक्टर—और पेतरा भी !

मिसेज स्तोकमन · अवश्य।

डॉक्टर—मेरे दोस्तो, अब हम मैदान में उतर आए हैं। अब देखना है कि जो देश-भक्त समाज के उत्थान के लिए खड़ा हो चुका है उसका मुँह आपके रँगरूट कैसे बन्द कर पाते हैं ?

(डॉक्टर स्तोकमन और मिसेज स्तोकमन का साथ-साथ बाहर जाना)

प्रेसिडेंट—(घबराकर) अब तो इसने उसे भी पागल बना लिया।

चौथा अंक

[कप्तान होस्तर के मकान का पुराने ढंग का एक बहुत बड़ा कमरा। कमरे की पीछे की दीवार में एक मुड़ने वाला दरवाजा, जिससे होकर दूसरे कमरे में जाने का रास्ता। बाईं दीवार में तीन खिड़कियाँ और दाहिनी दीवार के ठीक बीचों-बीच फर्श पर एक चबूतरा। चबूतरे पर एक छोटा टेबुल। टेबुल पर दो मोमबत्तियाँ जल रही हैं, एक पानी भरी बोतल, गिलास और एक घण्टी है। खिड़कियों के बीच दो-तीन लालटेनें जल रही हैं जिनसे कमरा प्रकाशित है। फर्श के सामने बाईं तरफ एक टेबुल है। उस पर एक मोमबत्ती जल रही है। टेबुल के सामने एक कुर्सी है। दाईं तरफ एक दरवाजा है और उसके निकट दीवार से सटी कई कुर्सियाँ हैं।]

(सब प्रकार के नागरिकों की एक बड़ी भीड़ जुटी है। भीड़ में स्त्रियाँ और विद्यार्थी भी हैं। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती जाती है और सारा कमरा ठसाठस भर जाता है)

पहला नागरिक—(पास ही खड़े दूसरे नागरिक से) **अच्छा, तुम भी आ गए हो लेनस्ताद ?**

दूसरा नागरिक—**भाई, मैं तो हर मीटिंग में आता हूँ।**

तीसरा नागरिक—**आप अपनी सीटी लाये हैं कि नहीं ?**

दूसरा नागरिक—**मैं तो ले आया हूँ ! आप लाये हैं कि नहीं ?**

तीसरा नागरिक—**मैं भी लाया हूँ। एवनसन ने कहा था कि वह अपना भोंपू भी लायगा।**

(भीड़ में हँसी-मजाक हो रहा है)

चौथा नागरिक—(इनके पास आकर) आज यहाँ यह क्या होने को है जी ?

दूसरा नागरिक—आपको मालूम नहीं क्या ? यहाँ डॉक्टर स्तोकमन का प्रेसिडेंट स्तोकमन के खिलाफ व्याख्यान होने जा रहा है।

चौथा नागरिक—मगर प्रेसिडेंट तो डॉक्टर का भाई है न ?

प्रथम नागरिक—इससे क्या हुआ ? डॉक्टर को प्रेसिडेंट का डर नहीं है।

तीसरा नागरिक—लेकिन डॉक्टर की गलती है। 'पीपुल्स-मेसेंजर' से से यही मालूम होता है।

दूसरा नागरिक- जान पड़ता है, इस बार डॉक्टर की गलती है, क्योंकि नागरिकों का क्लब या गृहस्थों का संघ उनका समर्थन नहीं कर रहा है।

पहला नागरिक—हम्माम के दफ्तर वाला हॉल तक तो उन्हें मिला नहीं।

एक व्यक्ति—(दूसरे गिरोह का)—अजी, आज हमें किसके इशारे पर चलना है ?

दूसरा—(उसी गिरोह का) बस अस्लाकसन को भाँपते रहो। जैसे-जैसे वह चलें अपने को वैसे ही चलना है।

बिलिंग—(हाथ में एक अटैची लिये भीड़ को चीरता भीतर आ रहा हैं) क्षमा कीजिए, महाशय, मुझे भीतर आने दीजिये। आपके 'पीपुल्स-मेसेंजर' के लिए रिपोर्ट लेनी है। धन्यवाद, अनेक-अनेक धन्यवाद !

(भीतर पहुँचकर बिलिंग बाईं ओर वाले टेबुल पर अधिकार जमाता है)

एक मजदूर—यह कौन है, भाई ?

दूसरा मजदूर—तुम इसे नहीं जानते ? यह वही है बिलिंग, जो मिस्टर अस्लाकसन के अखबार में काम करता है।

(दाहिनी तरफ वाले दरवाज़े में से कप्तान होस्तर, मिसेज स्तोकमन, पेतरा, तथा एलिफ और मोर्तन को साथ लिये आता है)

होस्तर—आप लोग यहीं बैठिये। यहाँ से जब चाहें, आसानी से उठ सकते हैं।

मिसेज स्तोकमन—मिस्टर होस्तर, क्या कुछ गोल-माल का अन्देशा है?

होस्तर—कोई खतरा नहीं, पर इस तरह की भीड़ का क्या ठिकाना है। फिर भी आप निश्चित रहें।

मिसेज स्तोकमन—आपने अपना यह कमरा देकर बड़ी कृपा की है।

होस्तर—जब दूसरों ने मना कर दिया तब···

पेतरा—आपने यह बेशक साहस का काम किया।

होस्तर—साहस की इसमें कोई बात नहीं।

(हूस्ताद और अस्लाकसन साथ ही पहुँचते हैं परन्तु हॉल में अलग-अलग जाते हैं)

अस्लाकसन (होस्तर के पास जाकर)—डॉक्टर अभी नहीं आये क्या?

होस्तर—जी, वे भीतर बैठे हैं। प्रतीक्षा कर रहे हैं।

(दरवाजे पर खस-मस होने लगती है)

हूस्ताद (बिलिंग से)—जान पड़ता है प्रेसिडेंट स्तोकमन आ रहे हैं।

बिलिंग—अपने सिर की कसम! वह देखिये, सामने आ गए।

(प्रेसिडेंट भीड़ में से होकर आता है। दाहिने-बाएँ के लोगों को बड़े प्रेम से झुक-झुककर नमस्कार करता आ रहा है। हॉल में पहुँचकर दीवार के सहारे अस्लाकसन और हूस्ताद के पास खड़ा हो जाता है।)

(डॉक्टर स्तोकमन तुरन्त ही दाहिनी ओर वाले दरवाजे से भीतर आता है। जब वह आता है पहले तो हल्की सी ताली बजती है परंतु बाद में सिसकारी भी होती है। फिर सब शान्त होते हैं।)

डॉक्टर (धीरे से)—कैसा लग रहा है कत्रीन?

मिसेज स्तोकमन—आप मेरी चिन्ता न करें। कृपा करके यहाँ उत्तेजित न होइएगा!

डॉक्टर—मैं सब देख लूँगा। तुम फिक्र न करो।

(बढ़ी देखता है। फिर चबूतरे पर चढ़ता है और लोगों को नमस्कार करता है)

डॉक्टर—समय से पन्द्रह मिनट ऊपर हो चुके। अब मैं आरम्भ करूँ—

(जेब से अपना लेख निकालता है)

अस्लाकसन—लेकिन चेयरमैन का तो अभी चुनाव ही नहीं हुआ।

कई लोग—(एक साथ) चेयरमैन, चेयरमैन!

डॉक्टर—चेयरमैन की कैसे आवश्यकता होती है? अपना लिखा हुआ व्याख्यान सुनाने के लिए सभा तो मैंने बुलाई है।

प्रेसिडेंट—आपके व्याख्यान से सहमत न होने पर दूसरा कोई बोलना चाहे तो उसे अनुमति कौन देगा? चेयरमैन तो होना ही चाहिए।

कई लोग—(फिर एक साथ ही) चेयरमैन, चेयरमैन!

हुस्ताद—जान पड़ता है कि जनता इस सभा के लिए चेयरमैन चाहती है।

डॉक्टर—(आवेग रोककर) बहुत अच्छा, जो आपको करना है कीजिये!

अस्लाकसन—चेयरमैन के आसन के लिए मैं प्रेसिडेंट स्तोकमन का नाम प्रस्तावित करता हूँ।

दो-तीन लोग—(एक साथ) ठीक है, ठीक है!

प्रेसिडेंट—सज्जनो, आप लोग मुझे क्षमा करें। मेरा चेयरमैन होना ठीक नहीं है। कारण आप सब जानते हैं। संयोग से हम लोगों के बीच इस समय एक ऐसे सुपुरुष यहाँ उपस्थित हैं जिन्हें चेयरमैन चुनने में आप सब मेरा समर्थन कर सकेंगे। इसलिए मैं गृहस्थों के संघ के चेयरमैन मिस्टर अस्लाकसन का नाम प्रस्तावित करता हूँ।

बहुत से लोग—(एक साथ ही) हाँ, हाँ। बहुत ठीक है। अस्लाकसन जिंदाबाद!

(डॉक्टर स्तोकमन अपना लेख जेब में रखकर चबूतरे से उतर आता है। अस्लाकसन चबूतरे पर चढ़ता है)

अस्लाकसन--अगर मेरे भाइयों की यही आज्ञा है तो मैं इन्कार कैसे कर सकता हूँ ?

बिलिंग--(लिखता हुआ बोलता जाता है) सो मिस्टर अस्लाकसन जनता की जय-जयकार के बीच चेयरमैन चुने गए--

अस्लाकसन--आप लोगों ने मुझे चेयरमैन की कुर्सी पर बिठाकर मेरे ऊपर अपना बड़ा भारी प्रेम दिखलाया है। उसके नाते मैं आप लोगों से कुछ प्रार्थना करना चाहता हूँ। आप सब लोग जो मुझे जानते हैं यह भी जरूर जानते होंगे कि मैं शान्ति पसन्द करने वाला नागरिक हूँ। मैं हर काम में उदारता और नम्रता का पक्षपाती हूँ। आप सब यह जानते हैं।

कई लोग—(एक साथ) हाँ, हाँ, मिस्टर अस्लाकसन ठीक कहते हैं।

अस्लाकसन—मैंने अनुभव तथा जीवन की पाठशाला में यही सीखा है कि नम्र-नीति वह गुण है जिससे हर नागरिक को हर समय लाभ ही होता है।

प्रेसिडेंट स्तोकमन—हिअर, हिअर !

अस्लाकसन—इस उदारता और नम्र-नीति से प्रत्येक व्यक्ति और सारे समाज का भी हित होता है। इसलिए मैं अपने नगर के उन प्रतिष्ठित नागरिकों से, जिन्होंने आज की यह सभा जुटाई है, प्रार्थना करूँगा कि जहाँ तक हो सके वे नम्र-नीति की सीमा लाँघने की कोशिश न करेंगे।

एक आदमी—(दरवाजे के पास खड़ा-खड़ा) मद्य-पान-विरोधी सभा जिन्दाबाद, जिन्दाबाद !

एक नागरिक—कौन है रे, यह ?

दूसरा नागरिक—चुप, चुप !

अस्लाकसन—सज्जनो, शोर-गुल बन्द कीजिये। क्या किसी को कुछ कहना है ?

प्रेसिडेंट—चेयरमैन महोदय !

अस्लाकसन—सज्जनो, प्रेजिडेंट स्तोकमन कुछ भाषण करना चाहते हैं।

प्रेसिडेंट—हम्माम के हेल्थ-अफसर से मेरा जो नाता है वह आप सब लोग जानते हैं। उसका खयाल करके मैंने पहले यही सोचा था या कि मेरा यहाँ भाषण करना ठीक न जँचेगा। लेकिन हम्माम-कमेटी का चेयरमैन होने के नाते और इस नगर के हित की चिन्ता करने का स्वभाव बन जाने के कारण मैं यहाँ एक प्रस्ताव रख देना उचित समझता हूँ। मुझे विश्वास है कि हमारे नगर के नागरिक यह बात एक स्वर से स्वीकार करेंगे कि हमारे हम्मामों की सफाई आदि के सम्बन्ध में किसी फालतू और बेतुकी बात का बाहर के शहरों में प्रचार होना बहुत ही अनुचित होगा।

कई लोग—(एक साथ ही) हरगिज नहीं, कदापि नहीं। हम लोग इस बात के विरोधी हैं।

प्रेसिडेंट—इसलिए मैं यह प्रस्ताव करता हूँ कि, "नागरिकों की इस सभा का यह निश्चय है कि हम्माम के हेल्थ-अफसर का हम्मामों के विषय में आज जो व्याख्यान या भाषण होने को है उसे सुनना हमें स्वीकार नहीं है।"

डॉक्टर—(उत्तेजित होकर) सुनना स्वीकार नहीं है? इसका मतलब क्या है?

मिसेज स्तोकमन—उँह-हूँह!

डॉक्टर—(आवेश रोककर) हाँ, तो लोग मेरा व्याख्यान न सुनने पायेंगे?

प्रेसिडेंट—'पीपुल्स-मेसेंजर' में मेरा जो वक्तव्य छपा है उसके द्वारा मैंने जनता को सारी बातों का परिचय करा दिया है। मुझे विश्वास है कि उस वक्तव्य को पढ़कर नगर के सभी सुलझे हुए लोग, जो कुछ करना उचित है उसका निर्णय कर चुके होंगे। उस वक्तव्य से आपको यह भी मालूम हो गया होगा कि इन हेल्थ-अफसर साहब ने एक योजना तैयार की है। वह योजना क्या

हैं टट्टी की आड़ में नगर के आने-जाने वाले व्यक्तियों की इज्जत का शिकार खेलना। सारे शहर वालों पर व्यर्थ के लिए टिकस का बोझ लादने का बहाना।

(भीड़ में विरोध-सूचक स्वर और सिसकारी आरम्भ हो जाती है)

अस्लाकसन—(घण्टी बजाता है) सज्जनो, शान्त हो जाइए! मैं बहुत नम्रता के साथ प्रेसिडेंट महोदय के प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ। जैसा कि प्रेसिडेंट महोदय ने अभी-अभी कहा है, मुझे भी डॉक्टर स्तोकमन के आन्दोलन के भीतर कुछ भेद जान पड़ता है। हम्माम के बहाने एक उथल-पुथल करने का इनका साफ इरादा जान पड़ता है। नगर का शासन करने वाली शक्ति में ये हेर-फेर कर देना चाहते हैं। यह सच है कि इसमें डॉक्टर की कुछ बुरी नीयत नहीं है। वास्तव में जनता का शासन अच्छी चीज है और मैं भी इसका समर्थक हूँ। किन्तु नागरिकों पर किसी भी हालत में टिकस का बोझ बढ़ना नहीं चाहिए। मेरी समझ में डॉक्टर की योजना में टिकस का बोझ बढ़ने का पूरा खतरा है। इसी कारण इस मामले में मैं डॉक्टर साहब का साथ नहीं दे सकता।

(सब तरफ से ताली बजने की गड़गड़ाहट होती है)

हूस्ताद—सज्जनो, इस अवसर पर मैं भी अपना मत स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। आरम्भ में डॉक्टर स्तोकमन के इस आन्दोलन के प्रति बहुत से लोगों की सहानुभूति हो गई थी। हमने भी इनके तर्कों से प्रभावित होकर इनका समर्थन किया था। किन्तु बाद में पता चला कि हमें जो बातें बतलाई गई थीं, वे झूठी थीं।

डॉक्टर—क्या कहा? झूठी थीं?

हूस्ताद—झूठ भले ही न हों, पर विश्वास करने योग्य नहीं थीं। प्रेसिडेंट महोदय के वक्तव्य ने यह साबित ही कर दिया है। वैसे तो हमारी उदारता की नीति है और इस बात का किसी को भी

सन्देह नहीं हो सकता। जितनी भी बड़ी-बड़ी राजनीतिक समस्याएँ हैं उनके बारे में हमारे 'मेसेंजर' का दृष्टिकोण भी आप सब लोगों को मालूम है। पर हमने अनुभवी और विचारवान लोगों से यह सीखा है कि अपने नगर या स्थान के मामलों में अखबार वालों को बहुत दूर तक सोच-विचार करके ही कलम उठानी चाहिए।

अस्लाक्सन - मैं वक्ता महोदय से पूरे तौर से सहमत हूँ।

हूस्ताद—और यह बात बिलकुल साफ है कि आज इस सभा के सामने जो मामला है उसमें जनमत डॉक्टर स्तोकमन के पक्ष में नहीं है। फिर आप लोग बतलाइये कि बेचारा अखबार का सम्पादक क्या करे? क्या उसे अपने ग्राहकों की भावना के अनुसार नहीं चलना चाहिए? क्या सद्भावना के रूप में उसे अपने ग्राहकों से उनका यह आदेश नहीं मिला है कि सम्पादक सदा उनका हित ही सबसे ऊपर रखे? या ऐसा समझने में मुझसे ही गलती हो रही है?

बहुत से लोग—नहीं, नहीं, नहीं। मिस्टर हूस्ताद ठीक समझते हैं।

हूस्ताद—डॉक्टर स्तोकमन के परिवार में इधर कुछ दिनों से मुझे घर के प्राणी-जैसा स्नेह मिलता रहा है। साथ ही डॉक्टर साहब ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें आज तक इस नगर में हर एक आदमी सम्मान की दृष्टि से देखता रहा है। इसलिए ऐसे व्यक्ति से अलग होने में मुझे काफी मानसिक संघर्ष करना पड़ा है।

कुछ लोग (छुट-पुट कई जगह से)—डॉक्टर स्तोकमन जिंदाबाद!

हूस्ताद—(जोर-जोर से) मगर मित्रो, समाज का हित मुझे सबसे अधिक प्यारा है। इसलिए मैंने अपने को इनसे अलग कर लिया है। इसके अतिरिक्त एक और बात है। मुझे इनके परिवार की तरफ भी देखना है। इसी कारण मैं इनका विरोध करने के लिए मजबूर हुआ हूँ। इतना ही नहीं, मैं यह भी कोशिश करूँगा

कि ये जिस खतरनाक मार्ग पर कदम रख रहे हैं उसे ही मैं रूँध दूँ।

डॉक्टर—बस, आगे न बढ़िये जनाब! वाटर-वर्क्स और संडास तक ही अपने को सीमित रखिये!

हूस्ताड · इनकी पत्नी और बेचारे बच्चों के खयाल से भी, सज्जनो!

मोर्तन—यह हम लोगों के लिए क्या है माँ?

मिसेज स्तोकमन—हुश!

अस्लाकसन—बस, अब मैं प्रेसिडेंट महोदय का प्रस्ताव वोट के लिए उपस्थित करना चाहता हूँ।

डॉक्टर—चेयरमैन महाशय, इस प्रस्ताव की कोई जरूरत ही नहीं है; मैं हम्माम की गंदगी के सम्बन्ध में व्याख्यान ही न दूँगा। मैं बिलकुल दूसरे विषय पर भाषण करूँगा।

प्रेसिडेंट—(धीरे से) पता नहीं अब किस बात पर बोलेगा?

शराब में चूर एक आदमी—मैं भी टिकस चुकाने वाला एक नागरिक हूँ। मुझे भी अपनी बात कहने का अधिकार है। मेरी यह पक्की, ठोस, जँची हुई राय है कि ·

कई आदमी एक साथ—चुप, चुप, चुप!

दूसरे लोग—वह पियक्कड़ है। हटाओ उसे यहाँ से।

(कई लोग धक्के देकर उसे निकाल बाहर करते हैं)

डॉक्टर—क्या मैं भाषण आरम्भ कर सकता हूँ?

अस्लाकसन—(घंटी बजाता है) सज्जनो, सावधान! डाक्टर स्तोकमन भाषण करने जा रहे हैं।

डॉक्टर—आप सब लोग यह अच्छी तरह देख रहे हैं कि आज मेरा मुँह बंद कर देने का कैसा प्रयत्न किया गया है। इसके पहले अगर किसी और दिन ऐसा कोई प्रयत्न हुआ होता, तो विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मैं शेर की तरह लड़ा होता। लेकिन आज मेरा ध्यान महत्त्व की कुछ बड़ी बातों की तरफ है।

मैं उन्हें आपके सामने रखना चाहता हूँ। (लोग डॉक्टर के करीब आ-आकर खड़े होने लगते हैं। मोर्टन कील भी सामने की पंक्ति में दिखाई दे रहा है) मैं पिछले कई दिनों से कई बातें बनाकर सोचता-ही-सोचता रहा। यहाँ तक कि मेरे मन में एक बवंडर ही उठ खड़ा हुआ।

प्रेसिडेंट हुँः !

डॉक्टर—लेकिन धीरे-धीरे उद्वेग शान्त हुआ, विचार स्पष्ट हुए और सारी गुत्थियाँ सुलझती दिखाई पड़ने लगीं। इसलिए मैं इस समय आपके सामने खड़ा हुआ हूँ। मेरे प्यारे नगरवासियो ! मैं आज आपके सामने कुछ महान् रहस्य उघारना चाहता हूँ। हमारा वाटर-वर्क्स विषैला हो गया है, हमारे स्वास्थ्य-सदन सड़ी भूमि पर बनवाये गए हैं, यह एक छोटी बात है। इससे कहीं अधिक महत्त्व की अपनी खोज मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ।

कई आदमी—(चिल्लाकर) हम्माम के बारे में मत बोलिये ! हम नहीं सुनना चाहते !

डॉक्टर—मैं तो कह चुका कि मैंने अभी केवल एक दो दिन हुए जो खोज की है उसी के सम्बन्ध में भाषण करूँगा। मेरी वह खोज यह है कि हमारे नैतिक जीवन का सारा स्रोत विष में डूब गया है। हमारे सामाजिक जीवन की दीवाल झूठ की सड़ी-गली नींव पर खड़ी है।

कई लोग—(सकपकाकर एक साथ ही) यह क्या कह रहे हैं ?

प्रेसिडेंट—इतना बड़ा आरोप ?

अस्लाकसन—(घंटी पर हाथ रखकर) मैं भाषण करने वाले महाशय से निवेदन करूँगा कि वे अपनी भाषा नम्र रखने की कृपा करें।

डॉक्टर—मैंने इसी नगर में जन्म पाया, जिससे मुझे भी इससे उतना ही गहरा प्रेम हुआ जितना प्रेम किसी आदमी को अपने बचपन के

नगर से हो सकता है। फिर मैं छोटा ही था तभी मुझसे मेरा नगर छूट गया। किन्तु यहाँ की दूरी, यहाँ की स्मृति और यहाँ लौटने की उत्कंठा ने इस नगर और यहाँ के निवासियों के प्रति मेरे हृदय में अपार अनुराग भर दिया। (कुछ लोग ताली बजाकर डॉक्टर की प्रशंसा करते हैं) मुझे यहाँ से अत्यन्त दूर उत्तर में वर्षों तक मानो एक भयंकर जिल में कैद रहना पड़ा। मैं वहाँ का डॉक्टर था। उस समय दूर-दूर बीरान पहाड़ के टीलों में बिखरे हुए वहाँ के निवासियों को मैं देखता तो मेरे मन में वेदना के मारे यह भाव उठता कि इन अभागे गरीबों को मेरे ऐसे डॉक्टर के बजाय पशुओं का डॉक्टर मिलता तो शायद अधिक अच्छा होता।

बिलिंग--अपने सिर की कसम, मैंने ऐसा कभी न सुना था कि ··

हूस्ताद--यह तो सीधे-सादे किसानों का अपमान है।

डॉक्टर--जरा सुनिये! लेकिन दोस्तो, मैं इस हालत में रहते हुए भी अपने इस नगर को नहीं भूल सकता था। मैं पहाड़ी हंस की तरह हम्माम की कल्पना के पखेरू को सेता रहा। (कुछ लोग ताली बजाते हैं और कुछ लोग गड़बड़ी करना चाहते हैं) और अंत में जब भाग्य ने मुझे खींचा तब मैं यहाँ आ पहुँचा। तब मेरे नगरवासियो, मेरे मन में कोई दूसरी अभिलाषा नहीं रह गई। क्योंकि मेरी यही अभिलाषा थी—एक ही जाग्रत, ज्वलन्त और जगमगाती हुई अभिलाषा कि मैं अपने प्रिय नगर और यहाँ के निवासियों की सेवा कर सकूँ।

प्रेसिडेंट--(कुछ घबराया सा) क्या ही अजीब चुनने का तरीका है। हुँः!

डॉक्टर--इस प्रकार मैं अपनी इस सुखदायी कल्पना में खुशियाँ मनाता चला जा रहा था कि कल सबेरे, या यों कहिये कि दो दिन हुए मेरे दिमाग की आँखें उघार दी गईं और मेरे सामने अधिकारियों की जड़ता झलझलाने लगी।

(शोर-गुल, चिल्ल-पों और हंसी-मज़ाक होने लगता है। मिसेज़ स्तोकमन खांसती है) !

प्रेसिडेंट —चेयरमैन महोदय !

अस्लाकसन—(घंटी बजाता है) चेयरमैन होने के नाते मैं

डॉक्टर—मेरे किसी एक शब्द को पकड़कर आप आसानी से आपत्ति उठा सकते हैं, मगर मिस्टर अस्लाकसन, जो मैं कह रहा हूँ वह यह है कि जब मेरी आँख खुल गई तो मैंने देखा कि हमारे नगर के बड़े लोगों ने हम्माम के मामले में कितना बड़ा अपराध किया है। मुझे इन लोगों से घृणा हो गई। मैंने अपने जीवन में पहले भी इन लोगों को खूब देखा है। ये बड़े लोग सुघर, सुडौल बगीचे में पड़ी हुई बकरियों के समान हैं जो जिस ओर मुड़ जाती हैं उधर की सारी हरियाली चर डालती हैं। ये बकरियाँ ईमानदार आदमियों को किसी तरफ भी नहीं बढ़ने देतीं। इसलिए दूसरे खतरनाक जानवरों की भाँति ही इनका भी सफाया किया जा सके तो बड़े आनन्द की बात है।

(हॉल में बड़ी भारी अशान्ति फैल जाती है)

प्रेसिडेंट—चेयरमैन महोदय, क्या इस प्रकार के उद्गारों के लिए अनुमति दी जा सकती है ?

अस्लाकसन—(घंटी पर हाथ रखे हुए) डॉक्टर स्तोकमन !

डॉक्टर—मुझे स्वयं ही अचरज है कि मैंने इन बड़े आदमियों की असलियत इतनी देर बाद क्यों पहचानी ? सूझ-बूझ में मन्द परन्तु दुर्भावना में स्वच्छन्द अपने भाई पेतर को, जो इनका सबसे सुन्दर नमूना है, तो मैं रोज ही अपने सामने पाता रहता था।

(हँसी, शोर-गुल और सीटी की आवाज। मिसेज स्तोकमन फिर खाँसती है। अस्लाकसन जोर-जोर से घंटी बजाता है।)

वही शराबी—(जो फिर लौट आया है) तुम मुझे कह रहे हो ? जरूर मेरा ही नाम पेतरसन है। लेकिन मैं बताये देता हूँ ··

दूसरे लोग—भगाओ इस पियक्कड़ को ! इसे बाहर करो।

(फिर धक्के देकर लोग उसे बाहर निकालते हैं)

प्रेसिडेंट—कौन था वह ?

एक आदमी—मैं नहीं जानता, प्रेसिडेंट जी !

दूसरा आदमी—वह हमारे शहर का नहीं है।

तीसरा आदमी—वह लकड़ी का सौदागर है। कहीं बाहर से आया है।

(और अधिक कुछ साफ सुनाई नहीं देता)

अस्लाकसन—वह तो एक शराबी था। डाक्टर स्तोकमन, भाषण कीजिये। लेकिन कृपा करके जरा खयाल रखिये। एक बात। नम्रता।

डॉक्टर—तो मेरे नगर-निवासियो, बड़े आदमियों के लिए मैं न कहूँगा। मैंने अभी जो कुछ कहा उससे अगर किसी ने यह समझा है कि मैं चाहता हूँ कि आज ही इन बड़े आदमियों का काम तमाम हो जाय तो यह उसकी गलती है। क्योंकि मेरे संतोष के लिए मेरा यह पक्का विश्वास ही बहुत है कि ये बड़े आदमी बड़ी तेजी से स्वयं ही अपना सत्यानाश कर रहे हैं। अन्तिम साँसों के टूटने का इनका कष्ट दूर करने के लिए इन्हें किसी डॉक्टर की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। फिर ये वे लोग हैं नहीं जिनसे हमारे समाज को असल खतरा है। हमारे नैतिक जीवन को विषैला बनाकर, हमारे पाँव के नीचे की सारी जमीन को प्लेग का केन्द्र बनाने में जो दिन-रात जुटे हैं, और हमारे समाज में सचाई और आजादी के जो सबसे कट्टर दुश्मन हैं, वे ये बड़े लोग नहीं, कोई दूसरे ही लोग हैं।

लोग चारों ओर से—वे कौन हैं ? कौन हैं ? नाम लीजिये, नाम लीजिये !

डॉक्टर—धीरज रखिये, प्यारे श्रीमान्, मैं आपको बताऊँगा। क्योंकि मैंने इन्हें कल पहचान लिया है। (जरा जोर देकर) हमारे बीच

सचाई के, आजादी के, कट्टर दुश्मन ये ठोस बहुमत वाले लोग ही हैं। ठीक-ठीक कहता हूँ। ये दुश्मन यही ठोस बहुमत वाले, यही उदार दल वाले, यही बहुसंख्यक लोग हैं। लीजिये, मैंने दो टूक कह दिया।

(भारी कोलाहल और अशान्ति मच जाती है। लोग चिल्लाना, पैर पटकना, सीटी बजाना आरम्भ कर देते हैं। कुछ बड़े-बुजुर्ग आनन्द में एक-दूसरे की तरफ कनखियों से देखने और इस दृश्य का मजा लेते हैं। मिसेज स्तोकमन परेशानी में उठ खड़ी होती हैं। एलिफ और मोर्तन धमकी देते हुए, जो स्कूली लड़के शोर मचा रहे हैं उनकी तरफ बढ़ते हैं। अस्लाकसन बारंबार घंटी बजा रहा है। हूस्ताद और बिलिंग भी शान्त रहने के लिए प्रार्थना करते हैं पर कुछ सुनाई नहीं देता। अन्त में कुछ देर बाद लोग शान्त होते हैं।)

अस्लाकसन—डॉक्टर स्तोकमन, आपने जो ये अनुचित शब्द कहे हैं उन्हें वापस लीजिए !

डॉक्टर—कदापि नहीं मिस्टर अस्लाकसन, क्योंकि यह वही ठोस बहुमत है जो मेरी आजादी छीन रहा है। जो मुझे सच कहने से रोक रहा है।

हूस्ताद—सत्य हमेशा बहुमत ही होता है डॉक्टर स्तोकमन !

बिलिंग – और न्याय भी, अपने सिर की कसम !

डॉक्टर—एकदम गलत बात। मिस्टर हूस्ताद बहुमत कभी सही नहीं होता। कभी नहीं। यह एक बड़ा भारी सामाजिक झूठ है, जिसके विरुद्ध अपने जीवन में प्रत्येक चिंतनशील और स्वतन्त्र प्राणी को विद्रोह करना पड़ता है। देखिए तो जरा। किसी भी देश की सोचिए ! बहुमत में कौन लोग हैं ? बुद्धिमान या मूर्ख लोग ? मुझे विश्वास है कि यह बात आप लोग भी स्वीकार कर लेंगे कि संसार में समस्त देशों में भारी भयानक ठोस बहुमत मूर्खों ही का है। फिर यह समझ में नहीं आता कि

बुद्धिमानों के ऊपर बहुमत का नाम देकर मूर्खों का शासन होना किस प्रकार न्याय कहा जा सकता है ? (शोर-गुल और चिल्लाहट होती है) हाँ, आप चिल्लाकर मुझे बैठा सकते हैं, पर आप मेरी बातों का जवाब नहीं दे सकते। बहुमत के पास शस्त्र भले ही हों, पर सत्य उसके पास नहीं होता। मैं और मेरे-जैसे दूसरे अकेले व्यक्ति ही सही होते हैं। अल्पमत ही सही होता है। बहुमत कभी सही नहीं होता।

(फिर शोर-गुल होता है)

हूस्ताद—हुः, हुः ! यह लीजिये, परसों से डॉक्टर स्तोकमन कुलीनों के समर्थक बन गए हैं।

डॉक्टर—मैं कह चुका हूँ कि पतली छाती और छोटी नसों वाले तुच्छ जीवों के सम्बन्ध में मैं अपना एक शब्द भी व्यर्थ न खरचूँगा। विकास की ओर उभरे उमंगपूर्ण जीवन के लिए अब ऐसे-ऐसों की तनिक जरूरत नहीं रही। मैं तो अपने लोगों के बीच के केवल उन इने-गिने व्यक्तियों की बातें करूँगा जो जीवन के बिरवे को पनपाने वाले सत्य को अपना चुके हैं। यही वे लोग हैं जो अगले नाकों पर खड़े हैं। ये जीवन-यात्रा में भीड़ की अगली पाँत से इतनी दूर आगे बढ़ चुके हैं कि ठोस बहुमत वाली भीड़ उनके पास पहुँच नहीं पाती। वहाँ एकाकी डटे हुए बहु-संख्यक भीड़ से ऊपर उठे ये लोग, विश्व-चेतना में बिलकुल ताजे, नये समाये हुए, सत्यों को प्राप्त करने के लिए संग्राम कर रहे हैं।

हूस्ताद—वाह अब तो ये क्रान्तिकारी हो रहे हैं।

डॉक्टर—हाँ, हूँ। मिस्टर हूस्ताद, परमात्मा की शपथ मैं क्रान्तिकारी हूँ। यह कहना कि बहुमत जो करे वही सत्य होता है, एक भारी झूठ है, और मैं इस झूठ के खिलाफ क्रान्ति करने के लिए उठ खड़ा हुआ हूँ। क्या आपने कभी यह सोचने का कष्ट किया है कि आपका बहुमत किस प्रकार

के सत्यों की पलटन खड़ी करता है ? उन सत्यों की, जो समय की मार के कारण सूखकर, सिकुड़कर खोखले हो चुके रहते हैं। और जो सत्य बूढ़ा होकर ऐसा खोखला हो चुकता है वह सत्य, सत्य न रहकर झूठ का समीपवर्ती हो जाता है। ऐसा सत्य द्रोपदी का चीर नहीं हो सकता। (हँसी-मजाक) आप विश्वास मानें या न मानें, बात ऐसी ही है। ऐसे सत्य अधिक-से-अधिक सत्रह-अठारह साल या खींच-तानकर बीस साल तक जीते हैं। समय की चोट खाये हुए ये सत्य जब बहुत ही दुर्बल हो जाते हैं उस समय बहुमत इन्हें पौष्टिक भोजन कहकर समाज के लिए उपयोगी घोषित करता है। पर इनमें कोई दम नहीं रहता। इस प्रकार के बहुमत-पोषित सत्य को आप साल भर का बासी सिझाया हुआ मांस समझिये, जिसे ग्रहण करने से भयानक नैतिक रोग उत्पन्न होते हैं और सारा समाज नष्ट हो जाता है।

अस्लाकसन—मुझे तो लगता है कि माननीय वक्ता महोदय विषय से बहुत दूर होते जा रहे हैं।

प्रेसिडेंट—मैं आपके मत का समर्थन करता हूँ, चेयरमैन महोदय !

डॉक्टर—क्यों, कैसे पेतर ? दिमाग तो ठीक है न ? मैं भरसक अपने विषय में ही सीमित हूँ। मेरा वक्तव्य बिलकुल यही है कि जिसे तुम ठोस बहुमत कहते हो वही बहु-संख्यक समूह, वही भीड़, हमारे नैतिक जीवन को जड़ ही में जहर भरकर विषैला बनाती है। वही हमारे सारे धरातल को भी भीतर-ही-भीतर प्लेग का केन्द्र बनाती है।

हूस्ताद—और आप इस महान् स्वतन्त्र बहु-संख्यक जनता पर इसीलिए हमला कर रहे हैं न कि उसमें ऐसी सूझ-बूझ है जिससे वह केवल कुछेक मान्य सत्यों को ही अपनाना ठीक समझती है ?

डॉक्टर—आह ! मिस्टर हूस्ताद, कुछेक सत्य कहकर न टालिये ! भीड़

द्वारा मान्य सत्य हमारे बाप-दादों के समाज की अगली पाँत वालों के कुछेक सत्य अवश्य थे। आज के समाज के हम अगली पाँत वाले उन्हें बिलकुल स्वीकार नहीं करते। आज इस बात के सिवा दूसरा कोई कुछेक सत्य नहीं है कि इन पुराने सिकुड़े हुए सत्यों का आधार लेकर कोई समाज टिका नहीं रह सकता।

हूस्ताद—क्या ही अच्छा होता कि इन सब गोल-मोल बातों के बजाय हम लोगों द्वारा अपनाये ऐसे कुछ पुराने सूखे सत्यों का उदाहरण दिया जाता।

(कई कोनों में लोग इस बात का समर्थन करते हैं)

डॉक्टर—महाशय, इस भारी गन्दे घूरे को कुरेदने की मेरी इच्छा नहीं है, पर इस तरह का मान्य एक सत्य, जो वास्तव में भीतर से एकदम घिनौना झूठ है, फिर भी जिसे 'पीपुल्स मेसेंजर' और उस 'मेसेंजर' से सम्बन्धित लोग अपने जीवन का आधार बनाये हुए हैं, नमूने के लिए काफी है।

हूस्ताद—वह क्या है ?

डॉक्टर—यह वही धारणा है जिसे आपने अपने बाप-दादों से विरासत में पाया है और जिसकी आप आँख मूँदकर चारों तरफ घोषणा करते फिरते हैं कि यह जन-समुदाय, यह भीड़, यह भब्बड़ ही जनता का हरि है, कि यही जनता है, कि ये साधारण लोग, ये समाज के अधकचरे नादान प्राणी, तिरस्कार करने, अनुमोदन करने, सलाह देने और शासन करने के वैसे ही अधिकारी हैं जैसे कि चुने हुए थोड़े से बुद्धिमान लोग।

बिलिंग—अपने सिर की कसम !

हूस्ताद—(चिल्लाकर) नगरवासियो, कृपया आप लोग इसे भी सुन लें।

क्रोधभरी आवाजें—ओह हो ! तो हम लोग जनता नहीं हैं ? बस ऊँचे-ऊँचे लोग ही राज करें ?

एक मजदूर—निकाल बाहर करो, ऐसा कहने वाले को !

दूसरे लोग—निकाल दो, निकाल दो !

एक नागरिक—एवरसन ! तुम्हारा भोंपू कहाँ है ?

(जोर-जोर से भोंपू की आवाज होने लगती है। सीटियां बजती हैं और भयानक शोर-गुल आरम्भ होता है)

डॉक्टर—(हुल्लड़ कुछ कम होने पर कृपा करके आप थोड़ा समझदार बनिए ! क्या एक बार भी सत्य की आवाज आपको सहन नहीं है ? मै आपसे यह कदापि नहीं चाह रहा हूँ कि आप लोग एकदम मुझसे सहमत हो जायँ। हाँ, मिस्टर हूस्ताद से मैं जरूर यह आशा करता था कि थोड़ी स्थिरता से सोचने पर वह मेरा समर्थन करेंगे। क्योंकि मिस्टर हूस्ताद अपने को स्वतन्त्र विचार वाला आदमी समझते हैं।

कई आवाजें—क्या कहा, स्वतन्त्र विचार वाला ? वह कैसा ? मिस्टर हूस्ताद स्वतन्त्र विचार वाले ?

हूस्ताद—(चिल्लाकर) इसे साबित कीजिए डॉक्टर स्तोकमन ! मेरे किस लेख में आपने ऐसा देखा है ?

डॉक्टर—नहीं, नहीं, आपका कहना ठीक है। ऐसा लिखने की स्पष्टता आपमें कभी नहीं रही। मिस्टर हूस्ताद, आप विश्वास रखें। मैं आपको उलझन में न डालूँगा। आप नहीं तो खैर, मुझे ही स्वतन्त्र विचार वाला बनने दीजिये और मेरे नगर-निवासियो, मुझसे साफ-साफ सुनिये ! यह 'पीपुल्स-मेसेंजर' आपको यह समझाकर कि यह बहुसंख्यक जनता और यह भीड़ ही समाज का हरि हैं, आपकी नाक पकड़कर एक शर्मनाक ढंग से आपको घुमा रहा है। सच मानिये, यह एक अखबारी झूठ है। यह बहुमत वाली भीड़ एक प्रकार का कच्चा मसाला है जिसे पक्की और ठोस जनता का रूप देने के लिए कुछ तैयारी आवश्यक होती है। (फुसफुसाहट, और हँसी-मजाक) यही बात सभी अन्य जीवित प्राणियों की भी है। मामूली जानवरों

और नस्ल सुधारे हुए जानवरों में कितना अन्तर होता है।
एक मामूली मुर्गी में क्या धरा है? पर एक स्पेन वाली या
जापानी मुर्गी को देखिये और दोनों का अन्तर आपको साफ
मालूम हो जायगा। यही नहीं। कुत्ता, जो हमारा सबसे नज-
दीकी जानवर है उसी को लीजिये। एक मामूली गली के कुत्ते
और 'पूडल' कुत्ते में कितना महान् अन्तर होता है। जो 'पूडल'
कितनी ही पीढ़ियों से अच्छे वातावरण में रहा है, जिसने नरम
और बढ़िया खुराक पाई है, और संगीत के मधुर स्वर जिसे
सुनने को मिले है, क्या उसका दिमाग साधारण गली के कुत्ते
के दिमाग की अपेक्षा अधिक विकसित नहीं रहता? आप
विश्वास मानिये कि उसका दिमाग कुछ और ही होता है। इसी
कारण थोड़े अभ्यास के बाद ही सरकस के अखाड़े में जो असा-
धारण चमत्कार वह दिखाता है वह चमत्कार प्रलय-काल
तक सिखाये जाने पर भी गली का कुत्ता कभी नहीं दिखला
सकता।

(सब तरफ से शोर-गुल और हँसी सुनाई पड़ती है)

एक नागरिक—क्या हमें अब कुत्ता बनाया जा रहा है?

दूसरा नागरिक—हम जानवर नहीं हैं, डॉक्टर!

डॉक्टर—हाँ, हाँ, यह तो ठीक है। पर हम सब जानवर हैं, मेरे प्यारे श्रीमान्! हम सब और हममें से एक-एक जानवर है। आप चाहे इसे पसन्द करें या नापसन्द करें। हाँ यह जरूर है कि खानदानी जानवर हममें से बहुत कम ही हैं। मनुष्य-पूडल और मनुष्य-गली के कुत्ते में बड़ा फरक है। और मजाक की बात तो यह है कि मिस्टर हूस्ताद चार पैर वाले जानवरों की बात में तो मेरा समर्थन करते हैं···

हूस्ताद—खतम कीजिये, यह जानवरों की बात साहब!

डॉक्टर—हाँ, हाँ। मगर जब मैं इस सिद्धान्त को दो पैर वाले जानवरों

पर लागू करता हूँ तो मिस्टर हूस्दाद बगलें झाँकने लगते हैं। तब अपनी कोई राय स्थिर करने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ती अथवा यों कहिये कि तब वे अपने लिए कुछ सोच ही नहीं पाते। तब उनका सारा ज्ञान औंधा हो जाता है, और तब वे 'पीपुल्स-मेसेंजर' की सीटी बजा-बजाकर कहते फिरते हैं कि साधारण मुर्गी और गली के कुत्ते अपने बाड़े के सर्वोत्तम नमूने हैं। मगर कीजियेगा क्या साहब ? जब तक आदमी अपनी रगों में से साधारणपन को निकालकर अध्यात्मिक विशेषत्व की प्राप्ति के लिए संघर्ष नहीं करता तब तक उसकी यही दशा रहती है।

हूस्ताद—मैं तो किसी प्रकार के विशेषत्व का दावा नहीं करता। मैं गरीब किसानों का वंशज हूँ और मुझे इस बात का गर्व है कि मेरी जड़ उन साधारण लोगों के बीच गहराई तक गड़ी हुई है जिनका आज यहाँ मजाक उड़ाया जा रहा है।

कई मजदूर—हूस्ताद जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद !

डॉक्टर—महाशय, मैं जिस तरह के साधारण लोगों की चर्चा कर रहा हूँ वे केवल निम्न वर्ग के ही लोगों में नहीं हैं। वे रेंगते, सिमटते, समाज की ऊँची-से-ऊँची चोटी तक चढ़ते हमारे चारों ओर दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए चिकने-चुपड़े, सन्मानधारी म्युनिसिपल-काउन्सिल के अपने प्रेसिडेंट ही को लीजिये। यह मेरा भाई पेतर भी तो उसी तरह के साधारण लोगों के खानदान से है जिस तरह का साधारण दो पैरों पर चलने वाला कोई भी आदमी हो सकता है।

(हँसी और सिसकारी)

प्रेसिडेंट—चेयरमैन महोदय, मैं इस प्रकार के व्यक्तिगत आक्षेप का विरोध करता हूँ।

डॉक्टर—(अविचलित भाव से) सुनिये तो सही मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि मेरी ही तरह पेतर भी पामरेनिया या उसके पास

के किसी स्थान के एक पुराने निकम्मे समुद्री डाकुओं का वंशज है। सज्जनो, यही हम लोगों के पूर्वजों का इतिहास है।

प्रेसिडेंट—ऐसी घृणित परंपरा। यह कोरी कल्पना है।

डॉक्टर—जी, नहीं। बात यह है कि पेतर महाशय, रेंगकर काफी ऊपर उठ गए हैं, पर सचाई यह है कि ये अपने कुछ नहीं हैं। जो विचार इनके ऊपर के अधिकारियों के होंगे वही विचार इनके विचार होते हैं। इनकी राय भी उनकी ही राय होती है। और इस तरह के जितने लोग होते हैं बुद्धि से भीड़-भब्भड़ के ही वर्ग के होते हैं। इसी कारण ऊपर से कुलीन लगते हुए भी हमारा भाई पेतर भीतर से कुलीन नहीं है। इसी से इसमें तनिक भी उदारता नहीं है।

प्रेसिडेंट—चेयरमैन महोदय

हूस्ताद—अच्छा, तो इस देश में कुलीन ही उदार नीति वाले होते हैं। यह तो आपने एक ही कही। यह एक नई बात मालूम हुई।

(लोग हँसने लगते हैं)

डॉक्टर—हाँ, हाँ, यह मेरी नई खोज का ही एक अंश है। विचार की उदारता का ही दूसरा नाम सदाचार है। इसी कारण 'पीपुल्ल मेसेंजर' का अक्षम्य अपराध है जो वह प्रतिदिन झूठे सिद्धान्त की घोषणा करता रहता है कि भारी समूह, भीड़-भब्भड़ और ठोस बहुमत ही उदारता और सदाचार का ठेकेदार है। और व्यभिचार तथा सारी नैतिक गंदगी संस्कृति से ही ठीक उसी प्रकार उपजती है जिस प्रकार नाले के ऊपर वाली चमड़े की फैक्टरी की सारी गन्दगी भीतर-ही-भीतर हम्माम में पसीजा करती है। (लोग चिल्लाते और बाधा उपस्थित करते हैं, किन्तु डॉक्टर उसी अविचल भाव से मुस्कराता हुआ) यही अखबार इस भीड़-भब्भड़ को जीवन के उच्च आदर्श प्राप्त करने का उपदेश भी देता रहता है। किंतु आप

लोग याद रखियेगा ! 'मेसेंजर' के सिद्धान्त पर चलने से जीवन का उच्च आदर्श प्राप्त करने का अर्थ सर्वनाश के सिवा और कुछ न होगा। खैरियत यही है कि यह कल्पना कि संस्कृति हमें निकम्मा करती है, एक पुराना झूठ है। वास्तव में जड़ता, गरीबी और जीवन का भोंडापन ही शैतान बनकर सर्वनाश करते हैं। जिस मकान में ताजी हवा का संचार नहीं, जो ठीक तरह बुहारा नहीं जाता, बुहारना क्या, मेरी पत्नी कत्रीन तो फर्श का रोज धोना भी जरूरी समझती है—ऐसे मकान में दो-तीन साल बाद रहने वालों की विचारने की शक्ति और सदाचार का जीवन बिताने का उल्लास नष्ट हो जाता है। ओषजन की कमी आत्मा को अशुद्ध बना देती है। अफसोस है कि हमारे नगर के बहु-संख्यक घरों में इस पवित्र ताजे ओषजन की काफी कमी पड़ गई है, क्योंकि यह ठोस बहुमत धोखे और झूठ के कीचड़ पर ही अपने भविष्य में भवन की नींव रखना चाहता है।

अस्लाकसन—नगरवासियों के ऊपर अपमान की ऐसी भयानक बौछार मैं अब बन्द कर देना चाहूँगा।

एक नागरिक—चेयरमैन महोदय, मेरा प्रस्ताव है कि आप वक्ता को बैठ जाने के लिए कह दीजिये !

कई लोग—(एक साथ) हाँ, हाँ। यही ठीक है। बैठ जाइये ! बैठ जाइये !

डॉक्टर स्तोकमन—(उत्तेजित होकर) तो मैं सड़क के हर मोड़ पर खड़ा होकर सचाई की घोषणा करूँगा। मैं दूसरे नगरों के अखबारों में लेख छपाऊँगा। सारे देश को बतलाऊँगा कि यहाँ किस तरह का धंधा चल रहा है।

हूस्ताद—तो क्या आप सारे नगर को एकदम बरबाद करने पर तैयार हो गए हैं ?

डॉक्टर—बेशक। मुझे अपने नगर से इतना अधिक प्रेम है कि झूठ के

सहारे इसे फैलता देखने की अपेक्षा इसे रौंद देना मैं अधिक उचित समझता हूँ।

अस्लाकसन—यह तो बड़ी कड़ी बात है।

(शोर-गुल और सीटी की आवाज। मिसेज स्तोकमन फिर खाँसती हैं। परन्तु डॉक्टर स्तोकमन अब उनके खाँसने पर ध्यान नहीं देते)

हूस्ताद (शोर-गुल के बीच चिल्ला-चिल्लाकर)—जो आदमी सारी जाति को इस तरह बरबाद करने पर उतारू हो वह अपने देश का अवश्य दुश्मन है।

डॉक्टर—(उत्तेजना से) झूठ से पली जाति का सत्यानाश हो जाय तो हर्ज ही क्या है? उसे ढहाकर मिट्टी में रौंद देना चाहिए। मैं तो यही कहता हूँ। जितने भी लोग झूठ के सहारे जी रहे हैं उन सबको कीड़ों-मकोड़ों की तरह मसल देना ही ठीक है। तुम लोग धीरे-धीरे सारे राष्ट्र में जहर भर दोगे। तुम लोग ऐसा कर डालोगे जिससे एक दिन सारा देश ही नष्ट कर देने लायक हो जायगा। और जब ऐसा ही दुर्दिन आ जायगा तो मेरा यही उद्‌गार होगा कि नष्ट कर दो उस देश के निवासियों को।

एक आदमी—(भीड़ में से) अरे यह आदमी तो देश-भर के दुश्मन की तरह बात कर रहा है।

बिलिंग—अपने सिर की कसम, हम सब लोगों की यही राय है।

सब लोग—(चिल्लाकर) हाँ, हाँ, ठीक कहते हो। यह देश-भर के दुश्मन की तरह बोल रहा है। यह आदमी देश-भर का दुश्मन है। यह अपने देश से घृणा करता है, अपनी जनता से घृणा करता है।

अस्लाकसन—इस नगर के एक नागरिक की हैसियत से और एक साधारण आदमी की हैसियत से मैं यही कहता हूँ कि हमें आज यहाँ जो कुछ सुनना पड़ा है उसे सुनकर मुझे बड़ा भारी

धक्का लगा है। डॉक्टर स्तोकमन ने जो यह वीभत्स रंग पकड़ा है उसकी मुझे सपने में भी कल्पना नहीं थी। मुझे इस बात का दुःख है। अभी-अभी किसी सुयोग्य नागरिक ने जो बात कही है उससे सहमत होने के लिए मैं बाध्य हूँ। मैं समझता हूँ कि वह यहाँ उपस्थित जनता का ही मत है। अतः जनता के उस मत को एक प्रस्ताव के रूप में इस सभा के सामने रख देना उचित है। इसलिए मैं यह प्रस्ताव रख रहा हूँ कि—"यह सभा निश्चय करती है कि हेल्थ-अफसर डाक्टर स्तोकमन देश-भर का दुश्मन है।"

(चारों तरफ से प्रस्ताव के अनुमोदन की ललकार होती है। बहुत से लोग डॉक्टर को घेर लेते हैं। मिसेज स्तोकमन और पेतरा उठकर खड़ी हो जाती हैं। एलिफ और मोर्तन तथा दूसरे स्कूली लड़कों में घूँसेबाजी होने लगती है, क्योंकि वे लड़के भी अन्य लोगों की तरह डॉक्टर का उपहास कर रहे थे। कुछ लोग उन्हें विलगा देते हैं)

डॉक्टर—अरे मूर्खो, मैं तुमसे कहता हूँ···

अस्लाकसन— (डॉक्टर को रोकता और घंटी बजाता है) **अब डॉक्टर का बोलना बेकायदे है। अब तो प्रस्ताव पर मत लिया जाना चाहिए। लेकिन व्यक्तिगत भावनाओं के विचार से बिना नाम प्रकट किये लिखित वोट लिया जायगा।** (बिलिंग से) **कुछ कोरा कागज है क्या ?**

बिलिंग —जी हाँ, अपने सिर की कसम, यह लीजिये ! सफेद और नीला दोनों रंग का कागज है।

अस्लाकसन —ठीक, बहुत ठीक। इससे काम बन जायगा। इसे फाड़ ता लीजिये। हाँ, ऐसे ही। ठीक है। (लोगों से) **नीले कागज का अर्थ प्रस्ताव का विरोध और सफेद का अर्थ समर्थन होगा। मैं स्वयं हर-एक से कागज लूँगा।**

(प्रेसिडेंट स्तोकमन सभा छोड़कर बाहर चला जाता है। **अस्लाक-**

सन और एक-दो दूसरे लोग हैट में कागज लेकर चारों ओर घूम-घूमकर लोगों में बाँटते हैं)

एक आदमी—(हूस्ताद से) क्या हो गया है डॉक्टर को ? यह मामला क्या है ?

हूस्ताद—आप तो देख ही रहे हैं। कैसा जिद्दी आदमी है।

दूसरा आदमी—(बिलिंग से) आप तो अक्सर उसके घर जाते रहते हैं। कहिये, पीता तो नहीं ?

बिलिंग—अपने सिर की कसम, मैं क्या बताऊँ ? जो कोई उसके घर जाय ताड़ी उसे वहाँ बराबर टेबुल पर धरी दिखाई पड़ेगी।

तीसरा आदमी—यह कुछ नहीं, मेरी समझ में तो यह उन्माद का एक दौरा है।

पहला आदमी—शायद खानदानी पागलपन हो।

बिलिंग—कोई ताज्जुब नहीं।

चौथा आदमी—यह कुछ नहीं। हमें तो कोई डाह की बात जान पड़ती है। बदला लेने के ही लिए यह सब किया जा रहा है।

बिलिंग—कौन जाने, यही बात हो। कई दिन हुए अपनी तनख्वाह की तरक्की के लिए जरूर कह रहा था। पर तरक्की हुई नहीं।

वे तीनों आदमी—(एक साथ ही) अह हा ! तो यह कहिये ! अब असल भेद मालूम हो गया।

वही शराबी—(भीड़ में से) मुझे लाइये, नीला वाला दीजिये ! फिर मैं एक सफ़ेद वाला भी लूँगा।

कई आदमी—(एक साथ ही) अरे यह पियक्कड़ फिर यहाँ आया ? निकालो इसे बाहर !

मोर्तन चील—(डॉक्टर स्तोकमन के पास आकर) देखा ? अब देख लो अच्छी तरह से। स्तोकमन समझो, इस बौड़मपन का क्या नतीजा होता है ?

डॉक्टर—मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया।

मोर्तन चील—और चमड़े की फैक्टरी को तुम क्या कह रहे थे ?

डॉक्टर—जो कुछ कहा वह तो आप सुन ही रहे थे। मैंने कहा था कि सारी गन्दगी उसी तरफ से आती है।

मोर्तन चील—हमारी फैक्टरी से भी ?

डॉक्टर दुर्भाग्यवश आपकी तो सबसे खराब है।

मोर्तन चील—क्या तुम यह बात भी अखबार में छपाओगे ?

डॉक्टर—मैं कोई बात कैसे छिपाऊँगा ?

मोर्तन चील—तुम्हें इससे काफी घाटा होगा, समझ रखना !

(चला जाता है)

एक मोटा आदमी—(कप्तान होस्तर के पास जाकर) क्यों कप्तान, कहिये, आप देश के दुश्मनों को अपना मकान देते हैं ?

होस्तर—क्या अपने मकान का मालिक मैं नहीं हूँ श्रीमान् ?

मोटा आदमी—जरूर ! लेकिन आप ही की तरह यदि मैं करूँ तो आप बुरा तो न मानेंगे ?

होस्तर—आपका मतलब क्या है श्रीमान् ?

मोटा आदमी—मतलब आपको कल मालूम हो जायगा।

(मुड़ता और चला जाता है)

पेतरा—आपके जहाज के मालिक थे यह ?

होस्तर—जी हाँ, यही मिस्टर वीक हैं।

(अस्लाकसन मत-पत्र हाथ में लेकर चबूतरे पर चढ़ता है। घण्टी बजाता है)

अस्लाकसन—सज्जनो, अब मैं वोटिंग के परिणाम की घोषणा करता हूँ। एक को छोड़ बाकी सबने ..

एक नवयुवक—महाशय, वह तो वही पियक्कड़ था।

अस्लाकसन—बस उस एक शराबी को छोड़कर नागरिकों की इस सभा ने एक मत होकर हम्माम के हेल्थ-अफसर डॉक्टर तोमस स्तोकमन को 'देश-भर का दुश्मन' घोषित कर दिया है। (तालियाँ बजती

हैं) हमारी म्युनिसिपल-काउन्सिल जिन्दाबाद ! (फिर तालियाँ बजती हैं) काउन्सिल के हमारे योग्य प्रेसिडेंट जिन्दाबाद ! अब सभा बरखास्त हुई !

(चबूतरे के नीचे उतर आता है)

बिलिंग—आज की सभा के चेयरमैन जिन्दाबाद !

सब लोग—मिस्टर अस्लाकसन जिन्दाबाद !

(फिर तालियाँ बजती हैं)

डॉक्टर—पेतरा, मेरा हैट और ओवरकोट उठाओ। कप्तान होस्तर, आपके जहाज में 'नये संसार' (अमेरिका) के कुछ और यात्रियों के लिए स्थान होगा क्या ?

होस्तर—आपके और आपके घर वालों के लिए जगह हो जायगी।

डॉक्टर—(पेतरा उसे ओवर कोट पहनाती है) ठीक है। चलो कत्रीन ! चलो बच्चो !

(अपनी पत्नी के लिए हाथ बढ़ाते हैं)

मिसेज स्तोकमन—(धीरे से) क्यों न हम लोग पीछे के दरवाजे से निकल चलें ?

डॉक्टर—कत्रीन, पीछे का रास्ता हमारा नहीं है। (जोर से) अपने पैर की धूल झाड़ने के पहले ही देख लेना 'देश भर का दुश्मन' खबर लेकर रहेगा। कत्रीन, मैं उतना सीधा नहीं हूँ जितना सीधा कोई एक आदमी था, क्योंकि मैं उसकी तरह यह नहीं कह सकता—मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ, तुम जो नहीं जानते कि तुम क्या कर रहे हो !

अस्लाकसन—(चिल्लाकर) डॉक्टर स्तोकमन, आपकी यह तुलना तो बड़े अधर्म की बात है।

बिलिंग—अपने सिर की कसम, ऐसी भयानक बात सही नहीं जा सकती।

एक शुष्क आदमी—और यह हम सबको धमकी अलग से दे रहा था।

बहुत से रुष्ट लोग--चलो इसकी खिड़कियाँ कूंच दें ! इसे बाँध में धँसा दें !

एक आदमी – (भीड़ में से) **एवरसन ! अपना भोंपू बजाओ ! बजा, भलेमानुस, जल्दी बजा !**

(भोंपू की आवाज । सीटियाँ बजती हैं । हुल्लड़ मच जाता हैं। डॉक्टर स्तोकमन अपने परिवार के लोगों को लेकर दरवाजे की तरफ बढ़ता हैं। कप्तान होस्तर उन लोगों के आगे-आगे रास्ता करता जा रहा है ।)

सब लोग - (डॉक्टर स्तोकमन के पीछे-पीछे चिल्लाते हैं) **देश-भर का दुश्मन ! देश-भर का दुश्मन ! देश-भर का दुश्मन !**

बिलिंग--अपने सिर की कसम जो आज रात मैं डॉक्टर स्तोकमन के घर कॉफी पीने जाऊँ !

(सारी भीड़ कमरे में से निकलकर सड़क पर इकट्ठी होती है। धीरे-धीरे शोर-गुल आगे की तरफ बढ़ता चलता है। फिर सड़क पर दूर से 'देश-भर का दुश्मन !' 'देश-भर का दुश्मन ?' 'देश-भर क दुश्मन !' का स्वर सुनाई पड़ता है ।)

पाँचवाँ अंक

[डॉक्टर स्नोकमन के स्वाध्याय का कमरा। दीवाल के सहारे किताबों के रैक और शीशे की अलमारियों में पुस्तकें। दाहिनी ओर की दीवालों में शीशे की दो खिड़कियाँ, जिनके सभी शीशे चूर-चूर हो गए हैं। कमरे के बीचों-बीच डॉक्टर का लिखने-पढ़ने का टेबुल, जिस पर पुस्तकें और पत्रिकाएँ पटी पड़ी हैं। कमरा अस्त-व्यस्त। समय दिन का तीसरा पहर]

(डॉक्टर स्तोकमन झुककर छाते मे किताबों की अलमारी में कुछ कुरेद रहा है)

डॉक्टर—कत्रीन, यह लो, एक और !

मिसेज स्तोकमन—अभी तो कोड़ियों निकलेंगे।

डॉक्टर—(उस टुकड़े को टेबुल पर रखे अन्य टुकड़ों की ढेरी में मिला देता है) **मैं इन पत्थरों को पवित्र स्मारक की तरह सँजोकर रखूँगा। एलिफ और मोर्तन इन्हें प्रतिदिन देखेंगे और मरने के बाद यही मेरी उनको थाती रहेगी।** (किताब के रैक को ठेलता है) **अरे क्या उसका नाम है ? वह शीशागर को बुलाने गई या नहीं ?**

मिसेज स्तोकमन—हाँ, हाँ। वह तो हो आई ! शीशागर ने कहा है कि वह आज शायद न आयगा।

डॉक्टर—बेचारे की शायद आने की हिम्मत न हो रही हो।

मिसेज स्तोकमन—यही तो बात है। रनदीन कहती थी कि वह अपने पड़ोसियों के डर के मारे नहीं आया। (दूसरे कमरे की तरफ मुड़कर) **क्या है रनदीन ? अच्छा ! आई** (उठकर जाती है, और तुरन्त ही लौट आती है) **डॉक्टर एक खत आया है।**

डॉक्टर—देना तो। (लिफाफा खोलकर पढ़ता है) अहा !

मिसेज स्तोकमन—किसका खत है ?

डॉक्टर—मकान-मालिक का। उसने हमें मकान खाली करने का नोटिस दिया है।

मिसेज स्तोकमन—ऐसे अच्छे आदमी हैं। फिर भी उन्होंने ऐसा···

डॉक्टर· (पत्र की ही तरफ आँख किये है) लिखते हैं कि वे कभी ऐसा करना नहीं चाहते थे। पर उन्हें यह करना ही पड़ा है। उन्हें पड़ौसियों, नागरिकों और जनता के प्रभाव से ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। कुछ खास बड़े आदमियों को नाराज करने की उनकी हिम्मत नहीं है।

मिसेज स्तोकमन—देख लो, तोमस !

डॉक्टर—हाँ, हाँ। मैं अच्छी तरह से देख रहा हूँ। ये सब कायर हैं। शहर-भर के लोग। इनमें का एक-एक कायर है। इनमें एक भी ऐसा नहीं है जो बाकी सबों से डर के मारे कुछ दूसरा कर सकता हो। (टेबुल पर खत पटककर) लेकिन अब हमें इससे क्या ? कत्रीन, जब हम 'नये संसार' के लिए चल देने वाले हैं तब···

मिसेज स्तोकमन—आपने क्या इस पर अच्छी तरह विचार कर लिया है ? हमारा यहाँ से चला जाना समझदारी का काम होगा ?

डॉक्टर—इन लोगों ने 'देश-भर का दुश्मन' कहकर मेरा संहार किया, मुझे दाग दिया, मेरी खिड़कियाँ चकनाचूर कर दीं। फिर भी कत्रीन, तुम चाहती हो कि मैं यहीं पड़ा रहूँ ? यह देखो पीछे, मेरी पतलून को कैसा चीथ डाला है।

मिसेज स्तोकमन—अरे राम ! यही तो तुम्हारे पास एक अच्छी पतलून थी।

डॉक्टर—यह मेरी ही चूक है कत्रीन ! आजादी और सचाई की लड़ाई के लिए जाने वाले को अपनी अच्छी पतलून पहनकर कभी

नहीं जाना चाहिए। पर मुझे इसकी फिक्र नहीं। तुम इसकी मरम्मत करके फिर से नया-जैसा ही कर दोगी। मेरे गले के नीचे जो बात नहीं उतर पा रही है वह यह है कि मुझे अपनी बराबरी का समझकर मुझ पर आक्रमण करने की इन हुल्लड़-बाजों ने हिम्मत कैसे की ?

मिसेज स्तोकमन—इसमें सन्देह नहीं कि यह बड़ा वीभत्स व्यवहार हुआ। पर क्या इसके कारण हम अपना देश ही छोड़ दें ?

डॉक्टर—कत्रीन, तुम समझती होगी कि मैं सोचता हूँ दूसरे देशों में जनता कहलाने वाले ये लोग कम पशु होंगे। बिलकुल नहीं। ये सभी जगह एक ही-जैसे होते हैं। फिर भी मुझे इसकी चिन्ता नहीं। भले ही ये कुत्ते भूँका करें। सबसे बुरी यह बात है कि दुनिया-भर में हर आदमी अपनी एक-न-एक पार्टी का दास है। पश्चिमी देशों में भी ठोस बहुमत, सुलझी जनता की राय और ऐसी ही अन्य बेहूदी बातें यहाँ से किसी प्रकार कम नहीं हैं। पर वहाँ की परिस्थिति यहाँ से अधिक विस्तृत, है। वहाँ वे आपको मार भले ही डालें पर यहाँ की तरह घुला-घुलाकर यंत्रणा न देंगे। यहाँ की तरह आत्मा में कील न ठोंक देंगे। फिर वहाँ जरूरत हुई तो हम इस सबसे अलग भी रह सकते हैं। (इधर-उधर टहलने लगता है) ओह ! यदि कहीं कोई आदि युग का जंगल या दक्षिणी समुद्र का कोई एक छोटा टापू सस्ते दामों पर बिकाऊ होता तो ··

मिसेज स्तोकमन—पर बच्चों का क्या होगा, तोमस ?

डॉक्टर—(टहलना बंद करके) गजब का खयाल तुम्हारा भी है। क्या इस तरह के सड़े हुए समाज में बच्चों का पाला जाना तुम्हें पसंद है ? क्या कल तुमने स्वयं अपनी आँखों यह नहीं देख लिया कि नगर का आधा जन-समुदाय किस प्रकार सोलहों आने

विक्षिप्त है। बाकी आधा केवल इसीलिए पागल नहीं हुआ कि उन खूँखार श्वानों को कुछ समझ है ही नहीं जिसमें से वे थोड़ा खोकर पागल बन सकें।

मिसेज स्तोकमन - पर प्रिय, आप इतनी कठोरता से बातें क्यों कहते हैं ?

डॉक्टर—तो क्या जो मैं उनसे कहता हूँ वह सच नहीं है ? क्या वे समझदारी से पूर्ण विचारों को सिर-पैर उलटकर अटपटी और बेतुकी नहीं बना डालते ? क्या वे सही और गलत को एकम-एक करके दोनों की खिचड़ी नहीं पका देते ? क्या वे हमारे प्राप्त किये हुए सत्वों को असत्य नहीं कहते ? और सबके ऊपर जो पागलपन की बात देखने में आई वह यह कि बड़े-बूढ़ों की ऐसी भारी-भरकम भीड़ उदार होने का दावा करने के साथ-साथ स्वयं को समझाती और औरों को यह समझने के लिए बहकाती है कि आजादी के सच्चे दोस्त बस वे ही हैं। ऐसा भी तुमने कहीं सुना था कत्रीन ?

मिसेज स्तोकमन—हाँ, हाँ। बेशक, यह सब अनुचित है। लेकिन ··

(पेतरा पिछले कमरे से आती है)

मिसेज स्तोकमन—अच्छा, स्कूल हो आई ?

पेतरा—जी हाँ, मुझे परवाना मिल गया।

मिसेज स्तोकमन—तुम्हें बरखास्त कर दिया ?

डॉक्टर—तुम्हें भी ?

पेतरा—मिसेज बुस्क ने मुझे नोटिस दिया, पर मैंने सोचा कि बस आज ही अलग हो जाना चाहिए।

मिसेज स्तोकमन—कौन सोच सकता था कि मिसेज बुस्क ऐसी व्यर्थ महिला है ?

पेतरा—ओह माँ, मिसेज बुस्क का कोई दोष नहीं है। वे कहती थीं ऐसा न करने का उनका वश ही नहीं था। साफ दिखाई दे रहा था कि मुझे बरखास्त करने में उन्हें बड़ी वेदना हो रही थी।

डॉक्टर—(हँसता और हथेली मलता है) क्या कहा, ऐसा न करने का वश ही नहीं था ? बिलकुल औरों की तरह। कैसी मजे की बात है ?

मिसेज स्तोकमन—जी, कल रात वाले उस भयानक हुल्लड़ के वाद कौन

पेतरा - सिर्फ वही बात न थी माँ, पिताजी सोचिये तो सही ?

डॉक्टर—अच्छा ?

पेतरा—मिसेज बुस्क ने मुझे तीन-तीन चिट्ठियाँ दिखलाई। वे आज ही सवेरे उनके पास आई थीं।

डॉक्टर – गुमनाम होंगी वे ?

पेतरा—हाँ, तीनों गुमनाम थीं।

डॉक्टर—अपना नाम तक जाहिर करने का इनमें साहस नहीं।

पेतरा—और उन पत्रों में से दो में यह लिखा था कि कोई एक भला आदमी जो अक्सर हमारे यहाँ आया करता है कल रात क्लब में कह रहा था कि कई मामलों में मैं काफी अग्रगामी विचार रखती हूँ।

डॉक्टर—मुझे विश्वास है कि तुमने इसका खंडन न किया होगा।

पेतरा हरगिज नहीं। सच तो यह है कि मिसेज बुस्क स्वयं अग्रगामी विचारों की हैं। जब हम दोनों अकेले होते हैं तब वह अपने मन के भाव प्रकट करती हैं। लेकिन अब जब यह बात मेरे विषय में जाहिर हो गई है तब वे मुझे अपने पद पर बनाये रखने में बेवस हो गई हैं।

मिसेज स्तोकमन—वह कौन भला आदमी है जो अक्सर हमारे यहाँ आया करता है ? देखा तोमस, अपनी इस खातिरदारी का नतीजा ?

डॉक्टर—अब हम और एक दिन भी न रहेंगे सूअरों के इस बाड़े में। जितनी जल्दी हो सके सामान बाँध-बूँधकर तैयारी करो। कत्रीन, चलो निकल चलें यहाँ से !

मिसेज स्तोकमन—ठहरिये तो, मुझे लगता है यहाँ कोई आया है। पेतरा देखना तो जरा !

पेतरा—(दरवाजा खोलती है) आहा ! आप हैं कप्तान होस्तर ? भीतर आइये !

होस्तर—(पीछे वाले कमरे से) नमस्कार ! मैंने सोचा कि जरा देख आऊँ। आप लोगों का हाल-चाल लेता आऊँ।

डॉक्टर—(हाथ मिलाता है) बहुत-बहुत धन्यवाद ! यह आपकी बड़ी कृपा है।

मिसेज स्तोकमन—और कल रात जो आप हमें घर तक छोड़ गए, उसके लिए अनेक-अनेक धन्यवाद !

पेतरा - आपको अपने घर तक पहुँचने में कोई कठिनाई तो नहीं हुई कप्तान साहब ?

होस्तर—जी नहीं। बात यह है कि एक तो मेरे हाथ-पैर भी कुछ ऐसे कमजोर नहीं हैं, दूसरे वे फिसादी लोग जितना बलवान भूँकने में हैं उतना काटने में नहीं।

डॉक्टर - यह सूअरों वाली कायरता कमाल की चीज है। आइये, मैं आपको कुछ दिखाऊँ कप्तान होस्तर ! (टेबुल के पास ले जाता है) ये पत्थर कल रात उन्होंने हमारे घर में फेंके। बस आप तो इन्हें देखिये। कसम खाकर कहता हूँ कि इस तमाम ढेर में शायद ही दो-तीन टुकड़े ऐसे निकलें जिन्हें कुछ कहा जा सके। बाकी सब-के-सब बस कंकड़ हैं, कंकड़। झुंड-के-झुंड वे यहाँ खड़े-खड़े भूँकते रहे। गरजते, चिल्लाते, कसम खा-खाकर कहते थे कि बरबाद किये बिना यहाँ से हटेंगे ही नहीं। पर कर वे कुछ न सके। कुछ कर दिखाने में यहाँ वालों का कलेजा काँप उठता है।

होस्तर—खैर जो कुछ हुआ, इस बार के लिए तो भगवान् को धन्यवाद दिया ही जाय।

डॉक्टर –हाँ, हाँ। सो तो है ही। लेकिन फिर भी यह बात दिल तोड़ दे रही है। क्योंकि अगर कभी कोई राष्ट्रीय संघर्ष हुआ तो आप देखियेगा कप्तान होस्तर, इस ठोस बहुमत के पाँव उखड़ जायेंगे, और भेड़ों की यह भीड़ जान लेकर पत्ता तोड़ भागती नज़र आयगी। यही वह मेरे इतने भारी दुःख की बात है जो हृदय को विकल किये दे रही है। लेकिन मैं भी कैसा बेशर्म हूँ। मुझे इस सबसे वास्ता क्या ? वे लोग तो मुझे देश-भर का दुश्मन कह रहे हैं ठीक है, अब तो मैं देश-भर का दुश्मन ही बनूँगा।

मिसेज स्तोकमन—यह तो तुम होना भी चाहो तो न हो सकोगे।

डॉक्टर तुम कसम खाकर तो यह कहना मत ! बुरा नाम धरा जाना फेफड़े में काँटे की चुभन-जैसा होता है। मैं इस कलंकित शब्द को भुलाने की कोशिश करके भी नहीं भुला पाता हूँ। यह मेरे कलेजे में बहुत गहरा धँस गया है और तेजाब की तरह काटता और चाटता चला जा रहा है। कोई भी मरहम मुझे अच्छा नहीं कर सकता।

पेतरा—वाह, आपको तो इस पर बस हँसी आनी चाहिए, पिता जी !

होस्तर—लोगों के खयाल बस जल्दी ही बदलने लगेंगे।

मिसेज स्तोकमन—हाँ, यह बिलकुल निश्चित है।

डॉक्टर—हाँ। शायद ऐसा ही हो। लेकिन तब तक तो तीर हाथ से छूट चुका होगा। खैर, जैसा किया है वैसा फल भोगें। अच्छी तरह वे कीचड़ में मेंड़िया मारें। और एक देश-भक्त को निर्वासित करने का पश्चात्ताप पायें। आपका जहाज किस दिन खुलेगा कप्तान होस्तर ?

होस्तर—हुँः। यही तो बात है जिसके सम्बन्ध में आपसे सलाह करने आया हूँ।

डॉक्टर—आपके जहाज में कोई गड़बड़ी हो गई है क्या ?

होस्तर—जी नहीं। बात यह है कि जहाज के साथ मुझे नहीं जाना है।

पेतरा—कहीं आप भी तो बरखास्त नहीं किये गए हैं ?

होस्तर—(मुस्कराता है) जी हाँ।

पेतरा—आप भी ?

मिसेज स्तोकमन—सुन रहे हो ?

डॉक्टर—और वह भी, किसलिए ? सत्य की रक्षा में सहायता देने के लिए। ओह, अगर मैं यह सब पहले से समझता होता

होस्तर—इसके लिए आप इतना रंज न कीजिये, मैं जल्दी ही किसी दूसरे जहाज पर सब प्रबंध कर दूँगा।

डॉक्टर—देख लिया मिस्टर वीक को। एक धनी-मानी और किसी के आसरे न रहने वाले व्यक्ति होने पर भी उन्होंने! हे भगवान्!

होस्तर—यह बात तो है। खुद तो वे बहुत ही अच्छे हैं। वे कहते थे कि मेरे काम से वे बहुत प्रसन्न हैं पर वे विवश हैं।

डॉक्टर—उनका ऐसा न करने में कोई वश नहीं। यह न ?

होस्तर—वे कहते थे कि आदमी जब किसी पार्टी का हो तो उनके लिए यह आसान नहीं कि···

डॉक्टर—हाँ, हाँ। भलेमानुस ने पते की बात कह दी। पार्टी सचमुच हलवा बनाने की एक प्रकार की मशीन है जिसमें पड़कर सारे दिमाग दलकर एक कर दिये जाते हैं और तब कोई भी कुछ अपना नहीं रह जाता। इसलिए आज हमें कहीं समूचा दिमाग न दिखाई देकर चारों ओर सूजी-दिमाग और दलिया-दिमाग ही दिखाई पड़ते हैं।

मिसेज स्तोकमन—ऐसी बात ?

पेतरा—(होस्तर से) कल रात अगर आप हमें घर तक पहुँचाने न आते तो शायद आपको ऐसा न होता।

होस्तर—मुझे इसका खेद नहीं है।

पेतरा—आपको धन्यवाद है।

होस्तर—(डॉक्टर से) मैं यह पूछने आया हूँ कि आपने यदि यहाँ से चला जाना ही निश्चित कर लिया है तो एक दूसरा उपाय भी है।

डॉक्टर—बहुत ठीक। हमें तो किसी तरह चले ही जाना है।

मिसेज स्तोकमन – जरा ठहरिये तो। कोई कुण्डी खटखटा रहा है।

पेतरा—मैं तो समझती हूँ, चाचा जी हैं।

डॉक्टर—अहा! (पुकारता है) भीतर आइये!

मिसेज स्तोकमन—तोमस, बस एक बार मुझे यह वचन दो ··

(प्रेसिडेंट बगल वाले कमरे से आ जाता है)

प्रेसिडेंट—(दरवाजे पर खड़ा-खड़ा) ओह! आप लोग बातें कर रहे हैं। तब तो मैं

डॉक्टर—जी नहीं, आ जाइए!

प्रेसिडेंट—लेकिन मुझे आपसे अलग बातें करनी हैं।

डॉक्टर—हम लोग बैठक में चले चलेंगे।

होस्तर—आप लोग बातें करें। मैं फिर आ जाऊँगा।

डॉक्टर—नहीं, नहीं। आप इन लोगों के साथ बैठिये, मुझे कुछ और बातें पूछनी हैं।

होस्तर—अच्छी बात, रुक जाता हूँ।

(मिसेज स्तोकमन तथा पेतरा के पीछे-पीछे होस्तर दूसरे कमरे में जाता है। प्रेसिडेंट चुप रहता है और खिड़कियों की ओर देखता है)

डॉक्टर—शायद आपको आज यहाँ अधिक हवा से कष्ट हो रहा हो। अपनी टोपी पहन लीजिए।

प्रेसिडेंट—धन्यवाद। (टोपी सिर पर रख लेता है) खयाल है, कल रात मुझे कुछ ठंड लग गई। मैं जब वहाँ खड़ा था, मुझे ठंड से कँपकँपी छूट रही थी।

डॉक्टर - अरे! पर मुझे तो काफी गरमी मालूम हो रही थी।

प्रेसिडेंट - मुझे दुःख है कि रात के उस बवंडर का रोकना मेरे वश के बाहर की बात थी।

डॉक्टर—मुझसे आप क्या कोई और खास बात कहना चाहते हैं ?

प्रेसिडेंट - (जेब से एक बड़ा सा लिफाफा निकालता है) हम्माम के डाइरेक्टरों की तरफ से मुझे आपको यह कागज देना है।

डॉक्टर—मैं बरखास्त हुआ, यही न ?

प्रेसिडेंट—जी हाँ। आज से। (लिफाफा टेबुल पर रख देता है) हम सबको बड़ा खेद है। पर सच्ची बात है कि जनता के प्रभाव को देखते हुए इसके अतिरिक्त कुछ और करने का हमारा वश ही नहीं था।

डॉक्टर— (मुसकराता है) वश ही नहीं था ? आज मैं यह शब्द पहले भी सुन चुका हूँ।

प्रेसिडेंट—मेरी आपसे दरखास्त है कि आप अपनी स्थिति को साफ-साफ समझ लें। अब भविष्य में नगर में आप प्रैक्टिस भी न कर पायेंगे।

डॉक्टर—प्रैक्टिस पर लानत है। मगर यह तो कहिये कि यह आप लोगों के वश में कैसे है ?

प्रेसिडेंट—गृहस्थों के संघ की ओर से एक गश्ती चिट्ठी घर-घर नागरिकों के पास भेजी जा रही है। उसमें प्रत्येक नागरिक से अपील की गई है कि वह आपको अपने घर कभी न बुलायें। हमें विश्वास है कि हमारे बुद्धिमान नागरिकों में एक भी ऐसा नहीं जो उस अपील पर हस्ताक्षर न कर दे। इस अपील से इन्कार करने का उनका वश ही नहीं है।

डॉक्टर—बिलकुल ठीक। मुझे भी इसमें सन्देह नहीं है। कहिये, और कुछ ?

प्रेसिडेंट—अगर आप मेरी बात मानें तो मैं कहूँगा कि आप कुछ दिनों के लिए यहाँ से चले जायें।

उसी वसीयतनामे के अनुसार सम्पत्ति का एक बड़ा हिस्सा आपके बच्चों का होगा। आपको और भाभी को जीवन-भर गुजारा पाने का भी उसमें प्रबन्ध है। यह बात उन्होंने आपसे कभी कही नहीं क्या ?

डॉक्टर—नहीं, कभी नहीं। उन्होंने हम लोगों के लिए कुछ भी नहीं किया है। अगर कुछ किया है तो टिकस बढ़ जाने की अपनी मुसीबतों का वर्णन। पर आपने जो बात कही, क्या वह सच है ?

प्रेसिडेंट—मुझे यह बात एक बड़े विश्वास करने योग्य आदमी से मालूम हुई है।

डॉक्टर—तब तो यह एक अच्छी बात है। भगवान् को धन्यवाद है। कत्रीन के लिए व्यवस्था हो चुकी। बच्चे भी व्यवस्थित हो गए। मैं कत्रीन को बता दूँ। (पुकारता है) कत्रीन ! कत्रीन ?

प्रेसिडेंट—(उसे बैठाकर) चुप, चुप। अभी कुछ न कहो।

मिसेज स्तोकमन—(दरवाजा खोलकर झाँकती है) क्या बात ?

डॉक्टर—अभी कुछ भी नहीं प्रिये, वापस चली जाओ !

(मिसेज स्तोकमन दरवाजा बन्द करके फिर चली जाती है)

डॉक्टर—(इधर-उधर टहलकर) सभी व्यवस्थित हो गए। जीवन-भर के लिए। सचमुच पेतर, यह जानकर कि घर के सभी प्राणी सुव्यवस्थित हैं बड़ी मानसिक शान्ति मिलती है।

प्रेसिडेंट—हाँ, लेकिन यह तो बात है कि सुव्यवस्थित आप लोग हैं नहीं। मोर्तन चील किसी भी समय अपना वसीयतनामा रद्द कर सकते हैं।

डॉक्टर—यह दुर्भाग्य की बात जरूर है, पर इसमें तो आपकी बेबसी रही है।

मोर्तन चील—जी नहीं, नहीं, धन्यवाद ! मैंने अपने सम्मान की रक्षा का निश्चय कर लिया है। मैंने सुना है कि लोग मुझे "बैजर" कहते हैं, और "बैजर" का अर्थ जितना मैं जानता हूँ उतना ही तुम भी जानते हो। मगर मैं सिद्ध कर दूँगा कि वे मुझे गलत समझते हैं। सो अब मैं पवित्रता लेकर ही जीऊँगा और मरूँगा भी पवित्र होकर ही।

डॉक्टर—सो किस तरह ?

मोर्तन चील—मुझे पवित्र तुम बनाओगे स्तोकमन !

डॉक्टर—मैं ?

मोर्तन चील—हाँ तुम ! जानते हो कि किन पैसों से मैंने ये शेयर खरीदे हैं ? शायद तुम नहीं जानते। लो, मैं तुम्हें बतलाता हूँ। यह वही धन है जो मेरे मरने के बाद कत्रीन, पेतरा, और बच्चों को मिलने वाला है। तुम्हें मालूम हो कि आख़िर मैंने कुछ जोड़ रखा है।

डॉक्टर—(उत्तेजित होकर) और आपने इन शेयरों पर कत्रीन का पैसा खर्च कर दिया ?

मोर्तनचील—हाँ, वह सारा-का-सारा अब मैंने हम्माम में लगा दिया। और अब मैं देखना चाहूँगा कि तुम सचमुच भरपूर, डहडहे पागल तो नहीं हो। यदि तुम अब भी यह कहते गए कि ये कीड़े, यह सब गन्दगी, मेरी फैक्टरी की गन्दगी से पसीजकर फैलती है तो समझो कि सचमुच तुम कत्रीन की, पेतरा की और बच्चों की खाल की चौड़ी-चौड़ी पट्टियाँ ही चीथ रहे हो। कोई भी पिता, जो पागल न होगा, क्या कभी ऐसा करेगा ?

डॉक्टर—(इधर-उधर टहलने लगता है) यह बिलकुल ठीक है। पर मैं तो पागल हूँ, पागल !

मोर्तनचील—कम-से-कम अपनी पत्नी और बच्चों से तो तुम्हें पागल नहीं ही होना चाहिए।

डॉक्टर--(मोर्तन चील के सामने खड़ा होकर) आपने यह सब कूडा खरीदने के पहले मुझसे क्यों नहीं पूछा ?

मोर्तनचील —जो हो चुका सो हो चुका।

डॉक्टर—(फिर अशान्त होकर टहलने लगता है) अगर इस मामले में मुझे सन्देह की थोड़ी भी गुंजाइश होती तो बात और थी। पर मेरा पक्का विश्वास है कि मेरी बात बिलकुल सही है।

मोर्तन चील –(हाथ में लिफाफा लेकर) अगर तुम अपने पागलपन पर डटे ही रहना चाहते हो फिर इस कूड़े का कोई मूल्य नहीं है।

(जेब में रख लेता है)

डॉक्टर--धत् तेरी शामत की ! फिर भी साइन्स इस जहर का कुछ काटकर निकाल सकती है, रोक-थाम का कोई उपाय बता सकती है।

मोर्तन चील—पानी में घुसे हुए इन जीवों को मारने का। यही न ?

डॉक्टर--जी हाँ, जिससे यह खतरा समाप्त हो सके।

मोर्तन चील—चूहेदानी लगा दें तो कैसा हो ?

डॉक्टर—चूहेदानी लगाने की एक ही रही ! यह भी कोई बात है ? मैं सोचता हूँ कि जब सब लोग इसे मेरा कोरा वहम ही कह रहे हैं तो क्यों न इसे वहम ही रहने दिया जाय। उन्हें अपनी मनमानी करने दी जाय। मैं ही इस देश-भर के लिए क्यों जान दूँ ? फिर तोले-भर की खोपड़ी वाले अनाड़ी ये ही तो वे कुत्ते हैं जो गला फाड़-फाड़कर कल से मुझे देश-भर का दुश-मन घोषित कर रहे हैं और मेरे शरीर पर का कपड़ा तक फाड़ डालने पर उतारू हो गए थे।

मोर्तनचील—और उन्होंने ये सारी तुम्हारी खिड़कियाँ भी चूर-चूर कर डाली हैं।

डॉक्टर—और बाल-बच्चों के प्रति भी अपना कुछ कर्तव्य होता है। मैं कत्रीन से भी सलाह करना चाहता हूँ। ऐसे गम्भीर मामलों में उसकी राय बड़े ठिकाने की होती है।

मोर्तन चील—यह बिलकुल ठीक है। वह काफी समझदार है। तुम तो बस उसकी राय से काम करो।

डॉक्टर—(क्रोध से मोर्तन के निकट जाकर) पर यह बेहूदापन आपने क्यों किया? कत्रीन के रुपयों को दाव पर रखकर मुझे इस दुविधा में डाल दिया है। मैं जब आपका मुँह देखता हूँ तो लगता है जैसे मैं शैतान ही को देख रहा हूँ।

मोर्तन चील—तब तो मैं यहाँ से तुरन्त चला जाता हूँ। लेकिन याद रखो, आज दो बजे तक मुझे तुम्हारा जवाब मिल जाना चाहिए। अगर तुम्हारी तरफ से जवाब में 'नहीं' है तो वह सारा धन मैं आज ही दान कर दूँगा।

डॉक्टर—और कत्रीन को क्या मिलेगा?

मोर्तन चील - एक कौड़ी भी नहीं।

(बगल वाले दरवाजे का कमरा खुलता है। हूस्ताद और अस्लाकसन दिखाई पड़ते हैं)

मोर्तन चील—हल्लो! इन दोनों को देखो।

डॉक्टर—(उन दोनों को घूरता है) अच्छा, इन्हें यहाँ आने का साहस है?

हूस्ताद—क्यों नहीं? हम तो यहीं आये हैं।

अस्लाकसन—हमें आपसे कुछ कहना है।

मोर्तन चील (कान में) हाँ या नहीं। दो बजे तक।

अस्लाकसन - (हूस्ताद की तरफ कनखियों से देखकर) अहा!

(मोर्तन चील चला जाता है)

डॉक्टर—हाँ बोलिये, आपको क्या कहना है? जरा संक्षेप में कहिये!

हूस्ताद—हम समझते हैं कि कल की मीटिंग का हमारा व्यवहा

आपको बुरा लगा है।

डॉक्टर—आपका व्यवहार ? वह व्यवहार था ? बूढ़ी औरतों वाली बुजदिली ! तुम्हें धिक्कार है।

हूस्ताद—आप उसे चाहे जो कहें। पर हम तो उसके सिवा कुछ और कर ही नहीं सकते थे।

डॉक्टर—कुछ और करने का शायद तुम्हारा वश ही नहीं था। यही न ?

हूस्ताद—हाँ आप उसे इन शब्दों में भी कह सकते हैं।

अस्लाकसन—पर असल बात आपने कुछ पहले ही हमें क्यों न बता दी ? मुझे या मिस्टर हूस्ताद को एक हल्का सा इशारा तो कर दिया होता।

डॉक्टर—एक हल्का सा इशारा ?

अस्लाकसन—इस पचड़े की तह में जो भेद छिपा था उसी का इशारा।

डॉक्टर—मैं कुछ समझता नहीं हूँ। तुम कहना क्या चाहते हो ?

अस्लाकसन—(सिर हिलाकर) जी, डॉक्टर साहब, आप समझ तो रहे हैं।

हूस्ताद—तो इसे अब हमसे छिपाने में कोई फायदा नहीं।

डॉक्टर—(बारी-बारी से दोनों को निहारकर) यह कौन सी शैतानी है ?

अस्लाकसन—क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह सच नहीं है कि आपके ससुर शहर-भर में घूम-घूमकर हम्माम के शेयर खरीद रहे हैं)

डॉक्टर—हाँ, यह तो वह अभी कह रहे थे कि आज उन्होंने हम्माम के बहुत से शेयर खरीदे हैं।

अस्लाकसन—इसी से तो हम कहते हैं कि होशियारी की बात यह होती कि वह स्वयं न खरीदकर किसी ऐसे आदमी से खरीदवा लेते जिसका आपके साथ उनके-जैसा निकट का नाता न होता।

हूस्ताद—और अच्छा हुआ होता कि हम्माम का पानी विषैला हो गया है इसका प्रचार भी आप किसी दूसरे के नाम से कराते जिससे

हूस्ताद—जी हाँ, जी हाँ। लेकिन आप तो वैज्ञानिक दृष्टि से हम्माम का सारा प्रबन्ध अपने हाथ में लेंगे।

डॉक्टर - जी हाँ, वैसे ही जैसे कि मैंने वैज्ञानिक दृष्टि से बूढ़े बैंजर को प्रेरणा देकर हम्माम के शेयर खरीदवाये हैं। और फिर वाटर-वर्क्स में कहीं कुछ जरा उठाकर और कहीं कुछ जरा झुकाकर मामूली खर्चे से सब-कुछ ठीक कर लिया जायगा और नागरिकों के टिकस में बस कुछ आने-पाई ही की बढ़ती होगी इस तरह सब भले-भले हो जायगा। क्यों ?

हूस्ताद—जी हाँ, अगर हमारा 'मेसेंजर' आपका समर्थन करता रहा तो अवश्य सब ठीक हो जायगा।

अस्लाकसन—एक स्वतंत्र समाज में अखबार बड़े महत्त्व का अस्त्र होता है डॉक्टर !

डॉक्टर—जी हाँ, यह तो है ही। और जनता का प्रभाव भी ऐसे ही महत्त्व का होता है। और गृहस्थों के संघ को तो आप भूल ही रहे थे, मिस्टर अस्लाकसन ! उसे आप सँभाल ही लेंगे। क्यों ?

अस्लाकसन—जी हाँ। गृहस्थों के संघ को भी और मद्य-पान-विरोधी सभा को भी। इन्हें आप मेरे ऊपर छोड़ सकते हैं।

डॉक्टर - लेकिन एक बात है। मुझे कहने में जरा संकोच हो रहा है। आखिर आप लोगों के लिए भी तो कुछ होना चाहिए।

हूस्ताद—ऐसे तो हम लोग बिना कुछ लिये ही आपको अपना सहयोग देना चाहते हैं। परन्तु आप यह भी जानते हैं कि अभी हमारे 'मेसेंजर' के पैर अच्छी तरह मजबूत नहीं हो पाए हैं। अभी यह अच्छी तरह चल नहीं रहा है और इस समय जब कि राज-नीतिक मामलों में बहुत-कुछ करने को हैं अगर इस पत्र का प्रकाशन हमें बन्द कर देना पड़ा तो यह हम सबके लिए बड़े खेद की बात होगी।

डॉक्टर —यह तो है ही। देश के आप-जैसे सच्चे दोस्त को सचमुच इस

बात का भारी धक्का लगेगा। (उत्तेजित होकर) लेकिन मैं तो देश-भर का दुश्मन हूँ। (कमरे में टहलने लगता है) मेरी छड़ी तो ला रे ! कहाँ है मेरी छड़ी ?

हूस्ताद —आपकी नीयत क्या है ?

अस्लाकसन—कहीं ऐसा तो नहीं कि आप

डॉक्टर—(खड़े-ही-खड़े) और अगर मैंने अपने शेयरों में से एक टुकड़ा भी तुम लोगों को न दिया तो ? यह तो जानते ही हो कि रुपया निकालने में हम अमीरों को कितना संकोच होता है।

हूस्ताद—तो आप भी समझे रहें कि शेयरों वाला यह मामला एक और रूप में भी उपस्थित किया जा सकता है।

डॉक्टर—हाँ, हाँ। यह तो मैं जानता हूँ। इस काम में तो आपका हाथ काफी मँजा हुआ है। अगर मैंने 'मेसेंजर' को सहायता न दी तो तुम लोग इस मामले को एक गन्दे रंग में रँगकर प्रस्तुत करोगे। मेरा शिकार करने के लिए चारा बिछाना और फिर मेरी गरदन उसी तरह दबोच लेना जिस तरह एक कुत्ता खरगोश का गला दबोच लेता है।

हूस्ताद—यह तो प्रकृति का नियम ही है। हर जानवर अपने लिए संघर्ष करता है।

अस्लाकसन—और अपनी खुराक जहाँ से भी मिले लेता ही है।

डॉक्टर—बेशक, तुम दोनों अब अपनी-अपनी खुराक बाहर नाबदान में ढूँढ़ो कि शायद वहाँ कुछ पा जाओ ! (कमरे में जल्दी-जल्दी घूमता है) क्यों ? ईश्वर की शपथ अब देखता हूँ कि हम तीनों में कौन सबसे अधिक जोरदार जानवर है। (छाता पा जाता है और उसे हाथ में ऊपर उठाकर घुमाता है)

हूस्ताद—महाशय, क्या आप हम लोगों पर हमला बोलना चाहते हैं ?

अस्लाकसन—महाशय, अपना छाता ज़रा सँभाले रहिये !

डॉक्टर—निकलो यहाँ से बाहर, खिड़की के रास्ते; हूस्ताद !

हूस्ताद—(बगल वाले कमरे के दरवाजे से सटकर खड़ा होता है) **महाशय, आप पागल तो नहीं हो गए हैं ?**

डॉक्टर--निकलो यहाँ से; खिड़की के रास्ते; तुम भी अस्लाकसन ! कूदो, मैं कहता हूँ कूदो ! इसी में तुम्हारी खैरियत है !

अस्लाकसन—(टेबुल के नीचे छिप जाता है) **डॉक्टर साहब, जरा नम्रता। मैं बहुत कमजोर हूँ। थोड़ा भी सहना मेरे लिए मुश्किल होगा। दोहाई ! दोहाई !**

(मिसेज स्तोकमन, पेतरा और होस्तर आते हैं)

मिसेज स्तोकमन--**हे भगवान् ! तोमस यह क्या माजरा है ?**

डॉक्टर (छाते को चारों तरफ घुमाता हुआ)—**कूदो, मैं कहता हूँ, कूदो झटपट ! बाहर नाबदान में जाओ !**

हूस्ताद—हमारी तरफ से बिना किसी उत्तेजना के हम पर यह हमला हो रहा है। कप्तान होस्तर आप इसके गवाह हैं।

(इतना कहकर बगल वाले कमरे में होता हुआ वह पत्ता तोड़, बाहर भाग जाता है)

अस्लाकसन—(अत्यन्त घबराकर) **मैं क्या करूँ ? मुझे तो इस स्थान का कोई अन्दाज ही नहीं है।**

(टेबुल के नीचे-नीचे सरकता हुआ बैठक के दरवाजे से जल्दी से बाहर निकलकर भाग जाता है)

मिसेज स्तोकमन (डॉक्टर को पीछे फेरती हैं)—**बस, अब शान्त हो जाइये !**

डॉक्टर—(छाता फेंककर)**खैर, दोनों गये तो यहाँ से।**

मिसेज स्तोकमन—पर बात क्या हुई थी ?

डॉक्टर--मैं बाद में बता दूँगा। इस समय मेरा ध्यान दूसरी बातों में है। (टेबुल के पास जाता है और एक विजिटिंग कार्ड पर कुछ लिखता है) **कत्रीन, जरा इसे तो देखो। इस पर क्या लिखा है ?**

मिसेज स्तोकमन—तीन बार 'नहीं'। इस तीन बार 'नहीं', 'नहीं', 'नहीं', लिखने का क्या मतलब है ?

डॉक्टर—यह भी तुम्हें मैं बाद में बताऊँगा। (कार्ड देता है) पेतरा, उस लड़की से कहो। उसका क्या नाम है ? यह कार्ड लेकर बूढ़े वैजर के घर दौड़ती जाय और उनके हाथ में देकर लौट आय।

(पेतरा कार्ड लेकर बगल वाले कमरे में जाती है)

डॉक्टर—अच्छा होता कि सारे-के-सारे शैतानों के इन दूतों से आज ही न निपटना पड़ा होता। अब मैं अपना कलम इन सबको रगड़ने में तेज करूँगा और इसे भाले के समान धार वाला कर डालूँ तभी सही है। मेरा कलम अब जहर में डूबेगा। मेरी दवात इन शैतानों की खोपड़ी चूर करेगी।

मिसेज स्तोकमन—हम लोग तो यह जगह छोड़ रहे हैं न ?

(पेतरा वापस आती है)

डॉक्टर—क्यों ?

पेतरा—रन दिन गई है।

डॉक्टर—बहुत ठीक। हाँ, क्या पूछा कत्रीन, तुमने ? क्या हम यह जगह छोड़ रहे हैं ? हरगिज नहीं। यह जगह जो हमने छोड़ दी तो हमें लानत है। इसलिए हम जहाँ हैं वहीं रहेंगे।

पेतरा—यहीं पिताजी ?

मिसेज स्तोकमन—यहीं इसी नगर में ?

डॉक्टर—हाँ यहीं। यहीं हमारी युद्ध की भूमि है। यहीं लड़ाई लड़ेंगे। यहीं विजय प्राप्त करेंगे। जैसे ही मेरे पतलून की मरम्मत हो जायगी, मैं बाहर निकल पड़ूँगा। और एक मकान ढूँढूँगा। जाड़े की ठंडी रात काटने के लिए कोई ढकी जगह तो होनी ही चाहिए।

होस्तर—आप मेरे ही मकान में क्यों न रहें ?

डॉक्टर—क्या आपका मकान खाली है ?

होस्तर—जी हाँ। मेरे मकान में कई कमरे हैं। फिर मैं तो प्रायः बाहर ही रहता हूँ।

मिसेज स्तोकमन—यह आपकी बड़ी भारी कृपा है, कप्तान होस्तर !

पेतरा—आपको धन्यवाद।

डॉक्टर—(कप्तान होस्तर का हाथ झकझोरकर) धन्यवाद, धन्यवाद ! तो यह बोझ मेरे सिर से उतर गया। बस अब मैं आज ही से काम में जुट रहा हूँ। यह हमारा बड़ा भाग्य है कत्रीन, कि अब हमें सारा समय अपने काम के लिए मिल गया। मुझे भी हम्माम से नोटिस मिल चुका है।

मिसेज स्तोकमन—(आह छोड़कर) ओह, यह तो मैं समझ ही रही थी।

डॉक्टर—और वे हमारी प्रैक्टिस भी छीनने का प्रबन्ध कर चुके हैं। कुछ हर्ज नहीं है। गरीब लोग तो मुझे बुलायँगे ही और यही वे हैं जिन्हें मेरी जरूरत है। बस मैं पहले इन्हीं लोगों को सब-कुछ सुनाऊँगा। मैं इन्हें शाम, सबेरे, दोपहर, जब भी अवसर मिला उपदेश करूँगा।

मिसेज स्तोकमन—मेरे प्रिय तोमस, उपदेश करने का जो नतीजा होता है वह तो तुम काफ़ी देख चुके।

डॉक्टर—कैसी हल्की बात कहती हो कत्रीन ! क्या मैं जनता के प्रभाव, ठोस बहुमत और इसी तरह के दूसरे शैतानपन के सामने घुटने टेक देने वाला आदमी हूँ ? जी नहीं, आपको धन्यवाद है। फिर मेरा उपदेश भी क्या है। बड़ी सीधी-सादी और सटीक मेरी बातें हैं। मुझे इन कुत्तों के दिमाग में बस यह बैठा देना है कि ये अपने को उदारतावादी कहने वाले लोग स्वाधीन मनुष्य के सबसे भारी दुश्मन हैं; कि ये पार्टी के कार्य-क्रम समस्त स्वस्थ और सजीव सत्यों का गला घोंट देते

रूप काम कर लेने के विचार न्याय और सदाचार को औंधा करके जीवन को वीभत्स बना देते हैं। कप्तान होस्तर, आप कहिये क्या इतनी बात भी लोगों को समझा देने में मैं सफल न हो सकूँगा ?

होस्तर—शायद हो सकें। ये बातें मैं बहुत कम समझता हूँ।

डॉक्टर—अच्छा तो सुनिये ! सबसे पहले पार्टी के इन नेता लोगों से पिंड छुड़ाना है, क्योंकि पार्टी का नेता ठीक भेड़िये के समान होता है जो अपने को बनाये रखने के लिए साल-भर में अपने दो-तीन संगियों का चुपचाप शिकार कर ही डालता है। हूस्ताद और अस्लाकसन को ही देखिये कितने अनेक तुच्छ प्राणियों पर वे रंग-रोगन चढ़ाया करते हैं और इस तरह उन सबको कुचलकर पंगु बना देते हैं जिससे वे और किसी काम के न रहकर बस गृहस्थों के संघ के सदस्य और 'पीपुल्स मेसेंजर' अखबार के ग्राहक-भर बनने के लायक रह जाते हैं (टेबुल के सिरे पर बैठ जाता है) जरा यहाँ आ जाओ कत्रीन, देखो तो सही किस शान के साथ सूरज चमक रहा है, और कैसी सुहावनी बासन्ती बयार हमारे समीप डोल रही है।

मिसेज स्तोकमन—आह ! यदि हम सूरज की सुनहली किरनों और बसन्त की मनोहर बयार पर ही जीवित रह सकते, तोमस !

डॉक्टर—सो तो तुम्हें हाथ समेटकर जहाँ-जहाँ हो सके बचत करनी होगी, और फिर तुम देखोगी कि हम लोग किसी तरह अपना समय काट ही लेंगे। इसकी मुझे अधिक चिन्ता नहीं है। मुझे तो चिन्ता इसकी है कि मेरे बाद मेरे काम को आगे ले चलने के लिए स्वतन्त्र विचार और उदात्त चरित्र वाला कोई व्यक्ति मुझे दिखाई नहीं पड़ रहा है।

पेतरा—उसके लिए बहुत चिंता न कीजिये पिताजी ! आपके पास अभी बहुत समय है। अरे, यह देखिये, बच्चे तो आज अभी आ गए !

(बैठक में से एलिफ और मोर्तन आते हैं)

मिसेज स्तोकमन—तुम्हारे यहाँ आज छुट्टी हो गई क्या ?

मोर्तन— नहीं तो। खेल के घंटे में दूसरे लड़कों से हमारी मार-पीट हो गई।

एलिफ—नहीं, यह बात नहीं है। दूसरे लड़कों ने हमसे पार-पीट कर दी।

मोर्तन—हाँ यही बात है। फिर मिस्टर ररलुन्द ने कहा कि तुम लोग कुछ दिन स्कूल में न आना।

डॉक्टर—(अपनी अँगुली पटकाते हुए टेबुल से उतरता है) अब मैं समझ चुका, खूब समझ चुका। तुम अब उस स्कूल में कभी मत झाँकना।

मिसेज स्तोकमन—ऐसा क्यों डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर—कभी नहीं। मैं कहता न हूँ। मैं तुम्हें स्वयं पढ़ाऊँगा। याने मैं वह सब खुराफात कुछ न पढ़ाऊँगा।

मोर्तन—वाह ! वाह !! वाह !!!

डॉक्टर—मैं तुम्हें स्वतन्त्र और उदात्त विचारों वाला नागरिक बनाऊँगा। देखो पेतरा, इस काम में तुम मेरी मदद करोगी।

पेतरा—पिताजी मैं आपकी पूरी सेवा करूँगी।

डॉक्टर—और हमारा स्कूल उसी कमरे में लगेगा जिस कमरे में मुझे 'देश-भर का दुश्मन' कहकर उन सबने मेरी इतनी तौहीन की थी। पर हमें और विद्यार्थी इकट्ठे करने पड़ेंगे। काम शुरू करने के लिए कम-से-कम बारह लड़के तो होने चाहिएँ।

मिसेज स्तोकमन— बारह तो तुम्हें इस नगर में कयामत तक न मिलेंगे।

डॉक्टर—देखा जायगा। (लड़कों से) बच्चो, तुम किन्हीं अनाथ लड़कों को जानते हो ? सड़क पर घूमने वाले लावारिस लड़के ही सही।

मोर्तन—पिताजी, ऐसे बहुत से हैं। मैं उन्हें जानता हूँ।

डॉक्टर--बहुत ठीक। उनमें से कुछ को मेरे पास ले आओ। लाओ, मैं इन सड़क के कुत्तों पर ही प्रयोग करके देखूं। कभी-कभी इनमें भी अच्छे दिमाग वाले निकल आते हैं।

मोर्तन--पिताजी, जब हम स्वतन्त्र और उदात्त विचार वाले बन जायेंगे तब हमें क्या करना पड़ेगा ?

डॉक्टर--इन सब भेड़ियों को समुद्र में दूर तक खदेड़ देना होगा।

(एलिफ को कुछ सन्देह सा लगता है पर मोर्तन खुशी से कूदने लगता है)

मिसेज स्तोकमन--देखना तोमस, कहीं ये भेड़िये तुम्हें ही न खदेड़ दें।

डॉक्टर--क्या तुम निरी बावली हो गई हो ? ये मुझको खदेड़ देंगे ? मुझको, जो अब नगर में सबसे अधिक बलवान प्राणी हूँ !

मिसेज स्तोकमन--अब सबसे बलवान प्राणी ?

डॉक्टर--जी हाँ ! यह कहने में मुझे कोई हिचक नहीं है। और सच पूछो तो नगर ही में नहीं, अब मैं संसार के बलवान प्राणियों में से एक हूँ।

मोर्तन--हाँ, हाँ, पिताजी !

डॉक्टर--(बड़ी स्थिरता से) बस चुप ही रहो। अभी किसी से यह मत कहो। मैंने यह एक महान् खोज की है।

मिसेज स्तोकमन--क्या ? फिर कोई खोज की है ?

डॉक्टर--हाँ, अवश्य की है। (सबको पास इकट्ठा करके) सुनो, मैंने क्या खोज की है--"जो एकदम अकेला खड़ा रह सके वही पृथ्वी पर सबसे बलवान प्राणी है।"

मिसेज स्तोकमन--(मुस्कराकर अपना सिर हिलाती हैं) आह तोमस !

पेतरा--(उसका हाथ साहसपूर्ण तत्परता से थामकर) जी पिताजी !

समाप्त